श्री

नाऽयमात्मा बल-हीनेन लभ्य.

राजस्थानी

राजस्थानी भाषा, साहित्य, इतिहास और कलाकी शोध-संबंधी निबंधमाला

भाग १

राजस्थानी

[रामसिंह]

वीर-भूरी वीर-वाणी !
अमर वाणी राजथानी !!

फोड़ दो-रे कँठ-सुरसूं गर्जती जै-जै भवानी
अमर साहितरी धिराणी राजभाषा लोक-वाणी

वीर-भूरी वीर-वाणी !
अमर वाणी राजथानी !!

दिव्य करणी-साधना तू मधुर मीरा-भक्ति-मृदु-फल
मृत्यु मृत्युजय अमररी टेक पातलरी हलाहल
पदमणीरी आत्म-शक्ती सजल जौहररी अटल झल

धाक थारी विश्व मानी
वीर-भूरी वीर वाणी !
अमर वाणी राजथानी !!

अब ! विछड़या बधवांने अेक कर दे ! अेक कर दे !
ग्यान भर विग्यान भर, मा ! प्राणमें तू प्राण भर दे !
विश्वमें गूंजै सदा ही अमर मरुरी अमर का'णी

राज-महिरी राजराणी
गीरवाणी जै भवानी

वीर-भूरी वीर वाणी !
अमर वाणी राजथानी !!

राजस्थान

प्यारे राजस्थान !
हमारे प्यारे राजस्थान !

तू जननी, तू जन्मभूमि है
तू जीवन तू प्राण
तू सर्वस्व शूर-वीरोंका
मारवका अभिमान
हमारे प्यारे राजस्थान !

तेरी गौरव-मयी गोदका
रखनेको सम्मान
करते रहे सपूत निछावर
हँसते-हँसते प्राण
हमारे प्यारे राजस्थान !

जौहरकी ज्वालामें खिलती
थी अक्षय मुसकान
धन्य वीर-बालामें तेरी
धन्य धन्य बलिदान
हमारे प्यारे राजस्थान !

जब तक जीवित हैं हम तेरी
वीर-व्रती सन्तान
ऊँचा मस्तक अमर, अमर है
तेरा रक्त निशान
हमारे प्यारे राजस्थान !

प्यारे राजस्थान !
हमारे प्यारे राजस्थान !!

—'प्रताप-परीक्षा' से उद्धृत

राजस्थानी भाषा और साहित्य

[नरोत्तमदास स्वामी]

अध्याय १—प्रस्तावना

१—क्षेत्रफल और जनसंख्या

राजस्थानी महान भारत-यूरोपीय Indo-European भाषा-परिवारकी अेक शाखा है। वह राजस्थान[1] प्रान्तकी मातृभाषा है जिसमें वर्त्तमान राजपूतानेका अधिकांश भाग तथा मालवा सम्मिलित हैं। विस्तारमें यह प्रदेश भारतवर्षके

---

१ प्रांतका राजस्थान यह नाम प्राचीन नहीं आधुनिक है। इस शब्द का अर्थ है भारतीय देशी राजा द्वारा शासित भू-भाग। गुजराती भाषामें इस शब्द का प्रयोग अभी तक इस अर्थमें होता है। राजस्थानमें देशी राजाओंके बहुत से राज्य थे इसलिअे इसे राजस्थान या रायथान कहा जाने लगा। साहित्यमें इस शब्दका सबसे पहले प्रयोग संभवतः कर्नल टाडने किया। सरकारी रूपसे प्रांतका यह नाम गृहीत न होने पर भी यह बहुत लोकप्रिय हुआ—राजपूताना-की अपेक्षा राजस्थान नाम ही आज अधिक प्रचलित है। इसका श्रेय कर्नल टाडके सुप्रसिद्ध राजस्थानका इतिहास नामक ग्रन्थको है। भारतकी राष्ट्रीय महासभा Indian National Congress ने भी प्रांतका यही नाम स्वीकृत किया है। मालवा आजकल यद्यपि राजस्थानसे अलग समझा जाता है पर भाषाकी दृष्टिसे वह वस्तुतः राजस्थानका ही विभाग है।

राजस्थान प्रांतके लिअे कभी-कभी मारवाड़ नामका भी प्रयोग किया जाता है पर यह नाम इतना व्यापक अर्थ देनेमें असमर्थ है। अेक अर्थमें मारवाड़ राजस्थान के रेतीले मरु-प्रदेश का वाचक है और दूसरे अर्थमें राजस्थानके अन्तर्भूत अनेक राज्योंमेंसे अेक राज्य—जोधपुर—का। इन दोनों ही अर्थोंमें वह सम्पूर्ण राजस्थानका वाचक नहीं। राजस्थानका केवल पश्चिमोत्तर भाग ही मरुभूमि है अतः मेवाड़, वागड़, हाडौती आदि प्रदेश मारवाड़ नहीं कहे जा सकते, न इन प्रदेशोंके निवासी अपने देशको मारवाड़ या अपनेको मारवाड़ी कहते ही हैं। राजस्थानमें मारवाड़ी नामसे जोधपुर (मारवाड़) राज्यके निवासीका ही बोध होता है। राजस्थानके बाहर राजस्थानके वैश्य व्यापारी मारवाड़ी कहे जाते हैं। इस प्रकार न मारवाड़ नाम समस्त राज-स्थानका बोध कराता है और न मारवाड़ी नाम समस्त राजस्थान-निवासियों का।

बड़ा[1] है। भारतीय भाषाओंमें हिन्दीको छोड़कर किसी भाषाका क्षेत्र इतना बड़ा नहीं।

राजस्थानी बोलनेवालोंकी संख्या डेढ़ करोड़के ऊपर है। वे अधिकांशमें राजपूताना तथा मालवामें रहते हैं परन्तु राजस्थानके बाहर भी बड़ी संख्यामें पाये जाते हैं। भारतका कदाचित ही कोई स्थान ऐसा हो जहां राजस्थानी सैनिक और राजस्थानी व्यापारी न पहुंचा हो। कलकत्ता, बम्बई आदि व्यापारके प्रमुख केन्द्रोंसे लेकर छोटे-से-छोटे गांवों तकमें राजस्थानी व्यापारी मिलेगा। प्रवासी राजस्थानियोंका मुख्य केन्द्र बंगाल है। बम्बई प्रान्तमें भी वे अच्छी संख्यामें पाये जाते हैं।

जन-सख्याकी दृष्टिसे राजस्थानीका भारतवर्षकी भाषाओं में (सातवां या) आठवां और ससारकी भाषाओंमें (इक्कीसवें से) चौबीसवां स्थान है जैसा कि नीचे लिखे आंकडोंसे ज्ञात होगा—

(१) चीनी	५० करोड	(८) फ्रेंच	७ करोड
(२) अंग्रेजी	२५ करोड	(९) पुर्तगाली	५ करोड
(३) रूसी	२० करोड	(१०) बंगला	५ करोड
(४) हिंदी (बिहारी सहित)	११ करोड	(११) इटालियन	४½ करोड
(५) जापानी	१० करोड़	(१२) जावानी	४ करोड़
(६) स्पेनी	१० करोड	(१३) पोल	३ करोड
(७) जर्मन	८ करोड	(१४) अरबी	३ करोड़

---

[1] तुलनाके लिये नीचे इनके क्षेत्रफल वर्गमीलोंमें दिये जाते हैं—

राजपूताना और मालवा १२९+२६=१५५ हजार वर्गमील

मद्रास	१,४२ हजार	पोलैंड	१,५० हजार	यूगोस्लाविया	९५ हजार
बंबई	१,२३ हजार	नारवे	१,४९ हजार	इंग्लैंड	५८ हजार
युक्तप्रान्त	१,०६ हजार	फिनलैंड	१,३४ हजार	यूनान	५० हजार
पंजाब	९९ हजार	ईराक	१,१६ हजार	आयर	२७ हजार
बंगाल	७७ हजार	इटली	१,१५ हजार	..	.
मध्यभारत	९९ हजार	जापान	१,१५ हजार	..	
बिहार	६९ हजार	रोमानिया	१,१३ हजार	.	..

(१६) [बिहारी]	२½ करोड़	(२०) कोरियाई	२ करोड़
(१६) तेलगू	२१ करोड़	(२१) डच	१½ करोड़
(१७) तमिळ	२½ करोड़	(२२) पंजाबी	१½ करोड़
(१८) मराठी	२ करोड़	(२३) ईरानी	१½ करोड़
(१९) रोमानियन	२ करोड़	(२४) राजस्थानी	१½ करोड़[1]

२—सीमायें

राजस्थानीके चारों ओर नीचे बतायी भाषायें बोली जाती हैं—

(१) उत्तरमें—पंजाबी

(२) पश्चिमोत्तरमें—हिन्दकी या मुलतानी या पश्चिमी पंजाबी

(३) पश्चिममें—सिंधी

(४) दक्षिण-पश्चिममें- गुजराती

(५) दक्षिणमें—गुजराती भीली और मराठी

(६) दक्षिण-पूर्वमें—मराठी, और हिन्दीकी बुन्देली नामक उपभाषा

(७) पूर्वमें—हिंदीकी बुंदेली और ब्रज नामक उपभाषायें

(८) उत्तर-पूर्वमें—हिन्दीकी बागरू उपभाषा

---

१ तुलनाके लिये भारतकी और संसारकी कुछ और भाषाओंके बोलनेवालोंके आँकड़े नीचे दिये जाते हैं—

(१) स्लावी	१,४५ लाख		(१२) मंगोलियन	६	लाख
(२) तुर्की	१४१ लाख		(१३) स्लोविक	६२	लाख
(३) बंगला	११२ लाख		(१४) सिंधी	४	लाख
(४) जर्मन	११२ लाख		(१५) केल्टिक	१७	लाख
(५) पश्चिमी	११ लाख		(१६) फिनलैंडी	३	लाख
(६) गुजराती	११ लाख		(१७) बाल्टिक	३	लाख
(७) मैसेडोनियन	१ ६ लाख		(१८) लिथुआनियन	११	लाख
(८) मलयालम	५१ लाख		(१९) अरमिनिया	२	लाख
(९) हिब्रू	८५ लाख		(२) आसामी	१४	लाख
(१) ईरानियन	८ लाख		(२१) पश्तो	१६	लाख
(११) पुश्तो	६६ लाख				

भारतीय आर्य-भाषाओंका चित्र
पंजाबी
सिंधी
मारवाड़ी
गुजराती
मालवी
मराठी
बिहारी
उड़िया
बंगाला
असमिया

इन भाषाओंमें गुजरातीका राजस्थानीके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। सोलहवीं शताब्दी तक गुजराती और राजस्थानी अेक ही भाषा थी।[1] भीली राजस्थानी और गुजरातीकी मिश्रित भाषा है। इसी प्रकार बांगड़ू भी राजस्थानी और खड़ीबोलीका मिश्रण है। ब्रजभाषाका भी राजस्थानीसे पर्याप्त साम्य है। खड़ीबोलीमें भी राजस्थानीकी अनेक विशेषताअें पायी जाती हैं जो साहित्यिक हिंदीमें नहीं पायी जाती।[2]

---

१ (A) Rajasthani, & Gujrati are hence very closely connected and are, in fact, little more than variant dialects of one and the same language (Grierson Linguistic Survey of India, Vol I, Pt I, Page 170)

(B) Gujrati and Rajasthani are derived from the one and same-source dialect to which the name of Old Western Rajasthani has been given Gujrati must have differentiated from Old Western Rajasthani in the sixteenth century into a separate language (Dr Suniti Kumar Chatterji Origin & Development of Bengali Language, Vol I, Page 9)

(C) The differentiation of Gujrati from the Marwari dialect of Old Western Rajasthani is quite modern We have poems written in Marwar in the fifteenth century which were composed in the Mother language that later on developed into these two forms of speech (Grierson Linguistic Survey of India, Vol I, Page 170, footnote)

(D) हाल-नी राजकीय व्यवस्था-नी घटना-मां मारवाड़ अने गुजरात जुदा पड़ी गया छे। अने अे बे देश वच्चे साहित्य-नो संबंध रह्यो नथी। मारवाड़ी भाषा-मां वर्तमान समय-नूं साहित्य न्यून होवा थी मारवाड़ी भाषा हिंदी भाषा-नूं ऊपरीपणूं स्वीकारती जणाय छे अने मारवाड़-ना लेखको आदर्शो माटे हिंदी तरफ वलता जणाय छे। गुजराती भाषा-ना वर्तमान साहित्य-मा अेवी न्यूनता नथी अने गुजराती भाषा हिंदुस्तान-नी बीजी कोई वर्तमान भाषा-नूं ऊपरीपणूं स्वीकारे तेम नथी, तथा पोता-नूं पृथक् स्वरूप खोई बीजी कोई भाषा-मां मली जाय तेम नथी। — (रमणभाई महीपतराम नीलकंठ)

२ उदाहरणके लिअे—

(१) मूर्धन्य णकारकी अधिकता (२) ळकारका प्रयोग (३) वर्त्तमान और अपूर्णभूत आदि कालोंमें तिङन्तीय या अ-कृदन्तीय रूपोंका प्रयोग, जैसे—आता है के स्थान पर आवे है और मारता था के स्थान पर मारै थो।

राजस्थानी भरतपुर राज्यको छोड़कर बाकी सारे राजपूतानेमें और मालवे में बोली जाती है। उत्तरमें भटियाणी और राठी बोलियोंके द्वारा पंजाबीमें, पश्चिममें हिन्दकी और सिंधीमें दक्षिणमें पालनपुरमें गुजराती में पूर्वमें ग्वालियर राज्यमें बुंदेलीमें और पूर्वोत्तरमें करौली और भरतपुरमें डांगकी बोलियों द्वारा ब्रज भाषामें तथा बांगड़ ।द्वारा पहाड़ीबोलीमें मिल जाती है। भीली भाषा राजस्थानमें राजस्थानीके क्षेत्रके भीतर बोली जाती है।

१—नाम

इस भाषाका राजस्थानी यह नाम नवीन और आधुनिक भाषा-वैज्ञानिकों का दिया हुआ है। अब यह नाम इतना प्रचलित हो चुका है कि देश विदेशके सभी विद्वान इस भाषाका इसी नामसे उल्लेख करते हैं और सरकारी कागज पत्रों तथा रिपोर्टों आदि में भी इसीका प्रयोग किया जाता है। भारतीय भाषा तत्त्व विशारदोंने भी इसी नामको सर्वमान्य किया है।

किसी भाषाका नाम-या तो देश अथवा प्रान्तके नाम पर पड़ता है, या उस भाषाकी साहित्यमें काम आनेवाली उपभाषा के नाम पर। क्योंकि प्रान्तका राजस्थान नाम आधुनिक है अतः भाषाका राजस्थानी नाम भी आधुनिक है।

इस भाषाका पुराना नाम मरु-भाषा था। राजस्थानीके लेखकोंने अपनी भाषाको बराबर मरु-भाषा ही कहा है[1]। मारू भाषा[2] मुरधर भाषा मरुदेशीया भाषा[3] आदि नामोंका प्रयोग भी मिलता है। राजस्थानीकी उपभाषाओंमें मार

---

१ (क) मरुभासा निर्मल तणी करी मरु-भाषा चौज।

—गोपाल लाहोरी कृत रस-विलास

(ख) डिंगल उन्मादक पहुप मरु-बानीहु विवेच।

—सूर्यमल्ल मिश्रण कृत वंश-भास्कर

(ग) मरु-भूम-भासा-तणी मारग रमै बाकी रीत्यू।

—कवि मंछ कृत रघुनाथरूपक

२ पर अर्बुद मन् व बहल मारू-भाषा-नर।

—कवि मोहजी कृत पाबूप्रकाश।

३ सूर्यमल मिश्रणने वंशभास्करमें बराबर 'मरुदेशीया भाषा' शब्दका प्रयोग किया है।

वाड़ी सबसे प्रधान है और सदासे रही है। जिस प्रकार आजकल हिन्दीकी अनेक उपभाषाओंमेंसे खड़ीबोली साहित्यकी भाषा है उसी प्रकार मारवाड़ी सदासे साहित्यकी भाषा रही है। राजस्थानके सभी भागोंके लेखकोंने साहित्य-रचनाके लिअे मारवाड़ीको ही अपनाया। डिंगलकी आधार-भूत भाषा भी मारवाड़ी ही है। फलतः राजस्थानीके लिअे सदा मरुभाषा शब्द ही प्रयुक्त हुआ। प्रान्तका नाम राजस्थान होने पर भाषा भी राजस्थानी कहलाने लगी। बोलचालमें राजस्थानीके लिये मारवाड़ी नामका प्रयोग अभी तक होता है।

साहित्यिक राजस्थानी, विशेषतः चारणी साहित्यकी भाषा, डिंगल नामसे प्रसिद्ध रही है। यह नाम भी विशेष प्राचीन नहीं है। इसका विवेचन आगे किया जायगा।

यह भाषा प्राचीन कालसे अेक स्वतन्त्र भाषा रही है। आठवीं शताब्दीमें उद्योतनसूरिने कुवलयमाला नामका अेक कथा-ग्रन्थ लिखा जिसमें अठारह देश-भाषाओंको गिनाया गया है। उनमें मरुदेशकी भाषाकी भी गिनती की गयी है। सत्रहवीं शताब्दीमें अबुलफजलने अपने आईने-अकबरी ग्रन्थमें भारतवर्षकी प्रमुख भाषाओंमें मारवाडीको भी गिनाया है।

४—शाखाअें

बोलचालकी भाषा कोस-कोस पर बदलती है अतः किसी भी भाषामें शाखा-प्रशाखाओंका होना स्वाभाविक है। राजस्थानीके भी अनेक भेद-प्रभेद हैं। ग्रिय-र्सनके अनुसार राजस्थानीके कोई बीस भेद हैं। मैकालिस्टरने अकेली जयपुरीके ही १५ भेदोंका उल्लेख किया है।

राजस्थानीके अनेक भेद-प्रभेद होने पर भी उनमें परस्पर इतना अन्तर नहीं कि अेकको बोलनेवाला दूसरेको भली भांति न समझ सके। व्याकरणका मूल ढाँचा सबका समान है। व्याकरणके ढाँचेकी यह समानता ही राजस्थानीको ब्रजभाषा, खड़ीबोली और गुजराती से पृथक करती है। यह बात भी ध्यानमें रखना आवश्यक है कि अनेक भेद-प्रभेदोंके होने पर भी समस्त राजस्थानमें साहित्य और शिक्षाकी भाषा सदा अेक ही रहती आयी है। हिन्दीके आगमनके पूर्व साहित्यकी अेक ही भाषा प्रान्त भरमें प्रचलित थी। हां, ब्रजभाषाका प्रयोग भी यदा-कदा किया जाता था।

राजस्थानीकी चार मुख्य शाखायें हैं—[1]

(१) पश्चिमी राजस्थानी या मारवाड़ी—इसका क्षेत्र मारवाड़, मेवाड़, जैसलमेर, बीकानेर और शेखावाटीका प्रदेश है। जोधपुरी, मेवाड़ी, थळी और शेखा वाटी बोली—ये इसकी मुख्य प्रशाखायें हैं।

(२) पूर्वी राजस्थानी या ढूंढाड़ी-हाड़ौती— इसका क्षेत्र जयपुर, हाड़ौती आदिका पूर्वी प्रदेश है। जयपुरी (ढूंढाड़ी) और हाड़ौती इसकी मुख्य प्रशाखायें हैं।

(३) उत्तर-पूर्वी राजस्थानी या मेवाती—इसका क्षेत्र अलवर और उसके आस पासका प्रदेश है। इसकी अेक अंतःशाखा अहीरी है।

(४) दक्षिणी राजस्थानी या मालवी—इसका क्षेत्र मालवाका प्रदेश है जिसमें इंदौर भोपाल, धार, रतलाम सीतामऊ आदि राज्य तथा उज्जैन आदि प्रदेश सम्मिलित हैं। इसकी अेक अन्तःशाखा नेमाड़ी है।

इनके अतिरिक्त निम्नलिखित भाषाओं और बोलियोंके साथ भी राजस्थानी का गहरा सम्बन्ध है—

(१) बंजारी—यह राजस्थानसे बाहर रहनेवाले बंजारोंकी भाषा है। स्थानानुसार इसके अनेक भेद हैं। ये बंजारे राजस्थानके मूल निवासी थे और व्यापारके सिलसिलेमें दूर दूर तक पहुंचते थे। पिछली शताब्दियोंमें वे उन उन प्रदेशोंमें बस गये और वहांके स्थायी निवासी हो गये पर अपनी भाषाको अपनाये रहे।

---

[1] तुलनाके लिये चारों बोलियोंकी जनसंख्याके आंकड़े नीचे दिये जाते हैं (ये आंकड़े पुराने हैं परन्तु इनसे बोलियोंकी आपेक्षिक विस्तारशीलताका अनुमान हो सकेगा)—

१	पश्चिमी राजस्थानी या मारवाड़ी	६,८८
२	पूर्वी राजस्थानी	१६,७
३	उत्तरपूर्वी	१५,००
४	मालवी	४१,५ ००
	मेवाड़ी	४७४
५	बंजारी-गूजरी	४,५५
६	अज्ञात	४५१
		११६,१६

(२) गूजरी—यह विशेषत. हिमालयकी तराईमें बसे हुओ गूजरों, अहीरों आदिकी बोलियोंका समूह है।

(३) भीली—यह गुजराती और राजस्थानीके बीचकी मिश्रित भाषा है।

(४) पहाडी वर्गकी भाषाअें—इनका राजस्थानीके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। इनमें प्रमुख नेपाली, कुमाऊंनी, गढवाली आदि हैं। नेपाली नेपालके गोरखोंकी भाषा है जो राजस्थानसे जाकर वहाँ बसे थे।

(५) भारतीय सांसियों या जिप्सियों Gypsies की बोलियोंका संबंध भी राजस्थानीसे है। इनके पहाडी, भामटी, वेलदारी, ओडकी, लाडी, मछरिया, सांसी, कंजरी, नटी, डोमी आदि अनेक भेद-प्रभेद हैं।

राजस्थानीकी चारों शाखाओंमें विस्तार और साहित्य दोनों ही द [illegible] पश्चिमी राजस्थानी या मारवाडी विशेष महत्त्वपूर्ण है। गुजराती प्राचीन [illegible] राजस्थानीसे ही विकसित हुई है। राजस्थानीका प्रायः समस्त [illegible] पश्चिमी राजस्थानीमें, या यों कहिये उसकी प्रमुख उपशाखा [illegible] गया है[1]। डिंगलका मूलाधार भी यह पश्चिमी राजस्थानी ही है। दूसरी शाखाओंमें लोक-साहित्यके अतिरिक्त अन्य साहित्य नाम [illegible] बराबर, है।

---

१ वर्त्तमान शताब्दीमें पश्चिमी राजस्थानीकी अेक दूसरी [illegible] कुछ साहित्य लिखा गया है।

राव केल्हणका वि० स०, १४७५ का शिलालेख

राव केल्हणका वि० सं० १४७५ का शिलालेख

[दशरथ शर्मा]

श्रीगगासिंह गोल्डन जुबिली म्यूजियम, बीकानेर, में महिषासुर-मर्दिनोकी अेक अत्यन्त सुन्दर प्रस्तर-मूर्ति वर्त्तमान है। भाग्यवशात् इसका मुख भग्न न होता तो यह अपने ढंगकी अेक ही चीज होती। वर्त्तमान अवस्थामें भी यह बीकानेरी शिल्पका उत्कृष्ट नमूना है। कठोर जैसलमेरी पत्थर पर भाव-भंगी और कार्य-शक्तिका इतना सफल चित्रण कोई सरल काम न रहा होगा।

मूर्तिके नीचे यह लेख खुदा है—

पक्ति १—संवत १४७५ वर्षे कार्तिक[1] सुदि षष्टी (ष्ठी) सु (शु) क्रदिने

,, २—देवी श्री घंटालि सह। महाराज श्री केलहण

,, ३—करावितं[2]। कमर[3] श्री चाचा॥ सूत्रधार हापाघटितं॥[4]

लेखको खुदवानेवाला महाराज श्रीकेलहण अपने समयका प्रसिद्ध व्यक्ति था। जैसलमेरके रावल केहरका सबसे बड़ा पुत्र होने पर भी पिताकी इच्छाके बिना अन्यत्र सगाई कर लेनेके कारण, वह जेसलमेरकी गद्दी पर न बैठ सका था। किन्तु वीर पुरुष अैसी असुविधाओंकी परवाह नहीं करते। वह पहले आसनी-कोटमें जाकर रहा, किंतु यहां जैसलमेरसे हर समय झगडा होनेकी शका बनी रहती थी। वीकमपुर उस समय खाली पडा था। चारो तर्फसे जगलको साफ कर केलहणने उसे अच्छी तरह बसाया।[5]

कुछ समय बाद केलहणने पूगल पर भी कब्जा कर लिया। यह पहले रावळ

---

१ 'क' ऊपर से जोड़ा गया है।

२ कारित' के स्थान पर राजस्थानी शिलालेखोंमें बहुधा 'कारावितं' और 'कारापितं' का प्रयोग मिलता है।

३ नैणसीकी ख्यात, भाग २ पृष्ठ ३५४।

४ लेखकी छापके लिअे मैं म्यूजियमके असिस्टेंट क्यूरेटर कंवर सगतसिंहका अनुगृहीत हूं।

५ वही, पृष्ठ ३५८। नैणसीकी अेतद्विषयक कथामें कुछ और बातें भी हैं।

कलमसेनके पुत्र राणगदे भाटीके अधिकारमें था। राणगदे भाटी मंडोरके राव चूंडाके हाथ मारा गया। पूगलकी विधवा रानीको इस वैरका बदला लेनेका वचन देकर केल्हण पूगलके समान समृद्ध स्थानका स्वामी बन गया।

डेरावरका प्रसिद्ध दुर्ग इसने इससे अधिक छल-प्रपंच से हस्तगत किया था। प्रसिद्ध ख्यात-लेखक नैणसीने यह कथा इस प्रकार दी है—

> डेरावरका राव भाटी, जोम डेरावरमें मर गया, तब ४०० मनुष्योंको लेकर राव केल्हण वहां शोक मोचन करानेको गया। जोमके पुत्र तहणमलने उनको गढ़में न घुसने दिया परन्तु वह कई सौगन्ध-शपथ व कौल-वचन करके गढ़ में आया और पांच-सात दिन तक रहा। तहणमलने कहलाया कि अब जाओ परन्तु उसने गढ़ न छोड़ा। तब तहणमल-रूपसी क्रोधित होकर अपना सामान गाड़ोंमें भर, गढ़ छोड़कर, निकल गये और सिंधमें जा रहे। डेरावर केल्हणके हाथ आया।

राव केल्हणने अपने राज्य विस्तारके लिये अनेक युद्ध किये होंगे किन्तु इतिहासमें हमें एक ही ज्ञात है। मंडोवरका राव चूंडा भाटियोंका प्रबल विरोधी था। इसने भाटियोंके अनेक स्थानों पर अधिकार कर लिया था और उन्हें अनेक अन्य बातोंमें भी नीचा दिखाया था। भाटियोंने[1] केल्हणकी अध्यक्षतामें अपने अपमान वैर और भूमिनाशका बदला लेनेकी तैयारी की। किन्तु राव चूंडासे अकेले लोहा लेना सहज न था। अतः मुलतानके सैयदों, सांखलोंके मोयलों और भाटियों आदि अनेक जातियोंसे मिलकर केल्हणने चूंडा पर आक्रमण किया। राव चूंडा युद्धमें काम आया और केल्हण एवं उसके मित्र विजयी हुये।

---

१ वही पृष्ठ १८९।

२ वही पृष्ठ १५९।

३ वही पृष्ठ १५ इसमें अधिक [illegible] प्रमाणित वर्णन [illegible] के [illegible] अनुमोदन में देख।

केल्हणने बहुत वर्ष तक राज्य किया। यह प्रसिद्ध है कि उनके अधीन इतने दुर्ग थे—

पूंगल बीकमपुर पुणह् विम्मणवाह मरोट।
देरावर ने केहरोर केलण इतरा कोट॥[१]

केल्हणके बाद उसका पुत्र चाचा, जिसका इस शिलालेखमें उल्लेख है, गद्दी पर बैठा। इसने बीकमपुर अपने भाई रिणमलको द दिया। राव चाचाके अधिकारमें इतने दुर्ग थे पूगल, केहरोर, मरोठ, मम्मणवाहण और देरावर। बीकानेर राज्य में पूगलका ठिकाना अब भी इनके वंशजों के अधिकारमें है।[२]

शिलालेखमें सूत्रधार हापाका भी उल्लेख है। वह वास्तवमें अच्छा ाक रहा होगा। उसने इस सुन्दर मूर्तिका निर्माण कर अपना नाम चिरस्थायी लिया है।

लेखका समय सम्वत १४७५ है। केल्हण कम-से-कम उस समय त था। प्रस्तर-मूर्ति सम्भवत पूगलसे प्राप्त हुई है। यदि यह अनुमान केल्हणका वहा इस सम्वतसे पूर्व अधिकार हो चुका होगा।

१ वही, पृष्ठ ३५९।

२ वही, पृष्ठ, ३६०।

राजस्थानी साहित्यरा निर्माण और संरक्षणमें जैन विद्वानांरी सेवा

[अगरचन्द नाहटा]

जैन धरमरा तीर्थंकरां और विद्वाना लोक-भाषारो महत्त्व सरूसूं ही भली भांत समझ लियो हो। जनतारै हिवड़ै तांई पूगणरो अेकमात्र साचो साधन लोक-भाषा हीज है इण वातनै वां आछी तरांसूं हृदयंगम कर ली ही। ठेटसूं ही वां आपणा उपदेश लोगांरी बोलचालरी भाषामें दिया। जकी वातनै आपणा विद्वान आज समझण लागा है उण वातनै जैन धरमरा महात्मावां हजारां वरसां पैली समझली ही। भगवान महावीररी इण सूझनै पछै आवणवाळा घणकरा धर्म-प्रचारकां और पंथ-थापकां माथै चढायी और आप-आपणा पथांरो साहित्य लोक-भाषामें — साधारण लोगांरी बोलीमें — वणायो।

प्राकृतरै पछै अपभ्रंशरो घणकरो साहित्य जैन विद्वानांरी रचना है। अपभ्रंश पछै राजस्थानी, गुजराती, हिन्दी, मराठी, तेलगू, कन्नड वगैरा लोक-भाषावांमें भी वै वरावर साहित्यरी रचना करता रया। इण भाषावांरो घणो-सो आरम्भिक साहित्य जैन लेखकांरो वणायोडो है।

लोकभाषामें साहित्य-रचनारो काम जैन विद्वानां वरावर चालू राख्यो जकै कारण इण भाषावांरै क्रमिक विकासरो अध्ययन करणमें जैन-साहित्यरो अध्ययन घणो जरूरी है। जकी शताब्दियांरा लोकभाषारा उदाहरण दूजा साहित्यमें जोया ही को लाधै नी वां शताब्दियांरा उदाहरण जैन-साहित्यमें भरपूर लाधसी।

राजस्थानीमें तो जैन-साहित्यरो घणो मोटो भंडार है। राजस्थानीरै आरम्भसूं लगा'र ठेट आज तांई कोई दशाब्दी इसी कोनी हुसी जिणमें रचियोडी जन विद्वानांरी रचनावां नहीं मिलसी। राजस्थानी भाषारो अखंड इतिहास लिखणो हुवै तौ जैन-साहित्यरी मदतसूं सै'ज ही लिखीज सकसी। और ओ साहित्य कठण डिंगळमें नहीं पण लोगांरी बोलचालरी भाषामें है जकैनै जनता आज भी विना टीका-टिप्पणीरी सायतारै समझ सकै है।

नैतिक दृष्टिसूं भी जैन-साहित्यरो घणो महत्त्व है। रोचक हुवां थकां भी जैन साहित्य पवित्र भावनानै जनम देवै जिसो है। जैन विद्वानां आपरै धरम धरमरी कहाण्यां लिख्या हुवै इसी बात भी कोनी। लोगोंमें चालती लौकिक कथा-कहाण्यां मायै भी जैनांरो घणो मोटो साहित्य है। जेक विक्रमादीत राजारी कथावांसूं सम्बन्ध राखती पचाससूं ऊपर जैन विद्वानांरी बणायोड़ी पोथियांरो पतो लाग्यो है।

जैन विद्वानांरा लिखियोड़ो राजस्थानी साहित्य गद्य और पद्य दोनूं रूपमें है। पद्यरा सबसूं मोटो ग्रंथ तेरापंथी आचार्य श्रीजीतमलजीरी भगवती-सूत्ररी ढाळां है जकांरो विस्तार ६० हजार श्लोक प्रमाण है। गद्य-ग्रंथामें विस्ताररी दृष्टिसूं महत्त्वपूर्ण भगवती सूत्ररी गद्य भाषा टीका है जकैरो विस्तार कोई ८२ हजार श्लोक प्रमाण है। राजस्थानीरो घणो महत्त्वपूर्ण इतिहास-ग्रंथ मुहणोत नेणसीरी ख्यात है। इण ग्रंथरी प्रौढ भाषाशैलीरी प्रशंसा राजस्थानीरा जाणीता विद्वाना करी है। राजस्थानीरा प्राचीन गद्य लगभग सगळो-र-सगळो जैन लेखकांरी रचना है।

कोई सोळ हजार बरसांसूं राजस्थान और गुजरातमें जैन-परम्परा प्रचार जोर सोरसूं रयो है। गांव-गांवमें ओसवाळ वगैरा जैन श्रावकांरो प्रादुर्भाव हुयो और यांरा गुरु जैन-मुनि बराबर आवण-जावण लाग्या। धीरे धीरे कईक जैन यति गांवांमें स्थायी रूपसूं बस भी गया। आं लोगांरै उपदेशसूं सैंकड़ां ही लोग जैन-धरममें दीक्षित हुया, विद्वान बण्या और मातृभाषारा भंडार भरणमें तत्पर हुया। साथ ही वे लोग जका जका भाषा-भाखा ग्रंथ देखता वांरी नकलां भी करता रया इणांरी रास चौपाई भास धवळ संबंध, प्रबन्ध ढाळ वगैरारी रचना करी जकांरो प्रमाण आठ-नव लाख श्लोकांसूं कम कोनी। गद्यमें भी इण तरां बाळावबोध टब्बा वगैरा टीकावां लिखी जकांरो प्रमाण भी ८ लाख श्लोक जरूर हुसी। कई का विद्वान तो इसा हुया जका अकेलांरो लाख-लाख श्लोक प्रमाण रचना करी जिणांमें तेरापंथी आचार्य श्रीजीतमलजी तथा कविवर जिनहर्षजी विशेष कर उल्लेखनीय है जैन सिवाय दूजा विद्वानांमें शायद ही कोई इत्तै परिमाणमें राजस्थानी भाषामें रचना करी हुवै। जैनांरै वास्तै आ घणै गौरव री बात है।

रास चौपाई वगैरा बड़ा ग्रंथांरै सिवाय राजस्थानीमें लिखियोड़ो जैन

विद्वानांरो फुटकर साहित्य भी लाखां श्लोकां प्रमाणरो है। स्तवन, सज्झाय, पद, गीत, छंद, हियाळी, सिलोका, पूजा, संवाद, दूहा वगैरा फुटकर साहित्यरो तो कोई पार ही कोनी। समयसुंदरजी जिसा कविया ५००-५०० पद वणाया है। ओ साहित्य सब भांतरो है--नीतिरो, विनोदरो, उपदेसरो, भक्तिरो। जैन विद्वानांरी राजस्थानी साहित्यरी सेवा सर्वांगीण है। कोई इसो विषय कोनी जिण पर जैन लेखकां कोई रचना नहीं लिखी हुवै।

जैन विद्वानां राजस्थानी साहित्यरी कोरी रचना ही को करी नी पण राजस्थानी साहित्यरी रक्षामें भी घणो भाग लियो। जैन और जैनेतर दोनूं विद्वानांरा लिखियोड़ा ग्रंथांनै घण जतन और घणी सम्हाळसूं आपरा भंडारांमें राख्या। जैनेतर विद्वानांरा घणा ग्रंथांरी पड़तां आज जैन-भंडारांरै सिवाय दूसरी जाग्यांमें अलभ्य है। नरपति नाल्हरै वीसळदे-रासो ग्रन्थनै जैन विद्वानां ही ज नष्ट हुवण-सूं बचायो। इसा-इसा हजारां ग्रन्थ है जकांनै आज तांई कायम राखणरो जस अेकमात्र जैन विद्वानांनै है।

जैन विद्वानां अेक और मोटो काम करियो। वां आपरी रचनावां बोल-चालरी भाषामें लिखी जियांन छन्द भी घणा-सा लोक-साहित्यसूं लिया। जनतामें चालू गीतांरी ढाळां लेयनै वां आपणी कविता लिखी। आ ढाळांरा नाम और पैलड़ी पंक्तियां भी वां सु-रक्षित राखी। इसी ढाळां अथवा देशियांरी अेक सूची मंबाईरा जैन विद्वान मोहनलाल दलीचन्द देसाईजी वणायी है। लोक-प्रचलित गीतांनै लिपि-बद्ध करनै सुरक्षित राखणरो काम भी अनेक जैन विद्वानां कियो है। लोक-साहित्यनै इण तरां अमर करणरी जैन विद्वानांरी सूझरै सामै माथो आपेई आदरसूं झुक जावै है।

घणा साहित्यिक विद्वानां जैन साहित्यनै अेक संप्रदायरो साहित्य बतायनै उणनै उपेक्षारी दृष्टिसूं देख्यो है पण वांरो ओ विचार भ्रांति-पूर्ण है। जैन साहित्य-रो अ-परिचय ही वांरै इण विचाररो कारण है। वास्तवमें जैन साहित्यरो घणो भाग इसो है जको सार्वजनिक साहित्य कहीज सकै है। हजारूं राजस्थानी जैन कवि और लेखक आज अंधकारमें पड़्या है। जैन साहित्यरै प्रकाशमें आणैसूं इण कथनरी सत्यता आप ही सिद्ध हु ज्यासी। इण वास्तै सबसूं जरूरी बात जैन साहित्यनै प्रकाशमें लावणरी है। आशा है राजस्थानरा विद्वान तथा जैन धनी-मानी अठीनै ध्यान देसी।

डूंगजी-जवारजीरो गीत

[राजस्थानमें डूगजी-जवारजीका गीत बहुत प्रसिद्ध और लोक-प्रिय है। अबतक यह लिखित रूपमें प्राप्य नहीं था। राजस्थानी लोकगीतोंके परिश्रमी अन्वेषक और सग्रहकर्त्ता श्रीयुत गणपति स्वामीने इसे लिपिबद्ध करके साहित्य-ससारका महान उपकार किया है। गीतकी प्रतिलिपि हमें पिलाणीके बिड़ला कालेजके अधिकारियोंकी कृपासे प्राप्त हुई है जिसके लिअे हम उनके अत्यन्त आभारी हैं।]

(१)

सिवरूं देवी सारदा कोइ तनै भवानी। ध्याऊं
जां मरदांरी छांवळी ' मैं च्यार कूटमें गाऊं

(२)

डूग न्हाररी कोटड्यां जुडी कचेडी आय
जाजम ऊपर जाजम बिछ रही, खूब पडै रजवाड
लोट्यो जाट, करणियो मीणो, डूगसिंघ सरदार
तीनू मिळ भेळा हुवै तो करै तीसरी बात

---

(१)

देवी सरस्वतीको स्मरण करता हू। हे भवानी ! तुम्हारा ध्यान करता हूँ। जिससे बीरोंकी कीर्त्तिको मैं चारों दिशाओंमें गा सकू।

(२)

सिंघके समान डूगसिंघकी कोटड़ीमें कचहरी आकर जुड़ी। जाजिम पर जाजिम बिछ रही थी। खूब .. .पड़ रहा था। जाट लोटिया, मीणा करणिया और सरदार डूंगसिंघ—ये तीनों जब मिलकर इकट्ठे होते हैं तो तीसरी (नयी) बात करते हैं। डाकू डूगसिंघ बोला—अरे लोटिया जाट ! तू सुन, आदमिओंके लिअे मोठ-बाजरी बाकी

लख्यै जाट करणियै मीणै डेरो दियो लगाय
लूंट छै तो लूंट, डूंगजी। धड़ै-धर्ळंर माय
आडो-वळो डाकिया पाछै वसका रैसी नांय

सात सवारां नीसर्‌या, वै हुया कतारां लार
चलती बोरी काट दी, वा मूंग्या दिया खिंडाय
चुग-चुग छास्या वाळदी, चुग-चुग छक्या गवाळ
चुग-चुग दुनिया धापगी वा जै बोलती जाय
सात ऊंट दरबाका भरिया, पोकरजीनै जाय
पोकरजीकै घाट पर वां जाजम दिवी विछाय
गरीव-गुरवां बामणानै हेलो दियो मराय
रुपियो रुपियो दियो बामणा, मो'रा चारण-भाट
असी मो'र दी नानगसाही, साखो दियो जुडाय

धरम-पुन्न यों बांट डूंगजी भड़वासेनै जाय
भड़वासै मैं सासरो साळां सू मिळवा जाय

वे सात सवारोंको लेकर निकले और कतारोंके पीछे हो गये। उनने चलती हुई बोरियोंको काट डाला, मूंगोंको विखरा दिया, जिनको चुन-चुन कर वैलोंवाले थक गये, ग्वाले थक गये। दुनिया चुन-चुन कर अघा गयी। वह जय बोलती हुई चली। डूंगजी और उसके साथियोंने सात ऊँट उस धनके भरे और पुष्कर तीर्थको गये। वहां गरीबों और ब्राह्मणोंको वापणा करवा दी। रुपया-रुपया ब्राह्मणों को दिया और चारण-भाटोंको मोहरे दी। नानकशाही अस्सी मुहरे देकर प्रशसा के गीत गवाये।

इस प्रकार धर्म और पुण्यमे धनको बाटकर डूंगजी भड़वासे गावको गया। भड़वासेमें ससुराल थी। सालोंसे मिलने गया। भड़वासेके नवलसिंघ और भैरोंसिंघ ने खूब अतिथि-सत्कार किया। कहा—पाहुने! बहुत दिनोंसे आये हो, गोठ जीमते जाओ। दूधसे धोकर चावल राधे, घीसे धोकर दाल राधी, बोरिया भर-भर शक्कर मगायी और घीके नाले बहा दिये।

मझदासैका   मौजसिंघजी
मैरू सिंघजी   घणी करी मनवार
घणा दिनासूं आया पावणा,   गोठ जीमता जाय
दूधां धोय'र चावळ रांध्या   घिरतां बाय'र दाळ
बोरी भर-भर खांड मंगाची   घिरत चळाया खाळ

२)

रामगढ़का सेठांने जद   खबर पड़ी है आय
सेठां लिख परवानो मेल्यो   दिल्लीरै दरबार
लूटी म्हारी लदी कतारां   लूट्यो मो लख माल
म्हारी धरामें छिप्यो डूंगजी   छैल-छुटकै साथ
अबकै तो बै लूटी कतारां,   अब लूटैगो हेली
आसामी ठग पड़गी, होगी   रुपियाकी थेली
सेठां लिख परवानो मेल्यो,   बडै सा'बनै देणा
डूंगसिंघ म्हारै लारै पड़ग्यो   पकड़ कैद कर लेणा

---

(१)

रामगढ़के सेठोंको जब आकर खबर पड़ी तो सेठोंने यह पत्र लिखकर दिल्लीके दरबार में (अंग्रेजोंके पास) भेजा—हमारी लदी हुई कतारोंको लूट लिया और लाखों माल लूट लिया यह डूंगजी हमारी धरतीसे परच गया है इसे छूट-छटकर साथ है इस बार तो उसने कतारें लदी हैं अबकी बार हवेलीको भी लूट लेगा, आसामियां सब ठग पड़ गयी हैं रुपयेकी थेली रह गयी है। इस प्रकार पत्र लिखकर सेठोंने भेजा और कहा—ले जाकर बड़े साहबको देना और कहना कि डूंगसिंह हमारे पीछे पड़ गया है, इसे पकड़कर कैद कर लेना।

अंग्रेजोंको खबर पड़ी तब चार फौजें चढ़कर चलीं। रात-रात चलकर वे सीकरमें पहुँची और सीकरके ठाकुरने कहा—हे सीकरके प्रतापसिंह! डूंगसिंहको हमें पकड़वा दे। ठाकुरने कहा—वह हमारा भाई-भतीजा (कुटुंबी) लगता है पकड़वाया नहीं जा सकता वह मळसीसरमें बैठा गोठका माल खा रहा है।

अंगरेजांनै खबर पडी जद चढगी फौजां च्यार
रात-रातकी करी मजल, बै पूंची सीकर मांय
सीकररा परतापसिंघ। म्हांनै डूंग न्हार पकडाय
म्हांरो लागै भाई-भतीजो, पकडायो ना जाय
झडवासैमैं बैठो डूंगजी माल गोठको खाय

सीकरहू वै चाली फौजा, झडवासैमैं आयी
आसै-पासै खड्या सिपाही, घेरो दियो लगायी
झडवासैका भैंरूसिंघ। तूं झट दे बायर आव
कै पकडा दै डूंग न्हार, नहिं धरा कैदकै मांय
रोळो-बैधो मत करो, कोइ, ना गळवैका काम
जीजो लागै डूंगजी स मैं हाथां दूं पकडाय

मोरझडीकी दारू कढावै, आंगण भटी तुडावै
दारू पाय'र करै बावळो, मेडी मांय चढावै
च्यार फिरंगी ओटै बैठ्या, च्यार चढ गया मेडी
डूंगसिंघनै सूतो पकड्यो पगां ठोक दी बेडी
हाथां घाली हथकडी, रे। गळमैं तोख जंजीर
आख खुली जद डूंग न्हार बो हुयो घणो दिलगीर

तब वे फौजें सीकरसे चलीं और झड़वासेमें आयी। आस-पास सिपाही खड़े हो गये, चारों ओर घेरा लगा दिया और कहा—हे झड़वासेके भैरोसिंघ! झटपट बाहर आ, या तो डूगसिंघको हमे पकड़वा दे नहीं तो तुझे कैदमें डालते हैं।

भैरोसिंघ बोला—हल्ला-दगा मत करो, झगड़े-झंझटका कोई काम नहीं, डूगजी मेरा जीजा लगता है, अपने हाथोंसे उसे पकड़वा दूंगा। आगनमें भट्टी लगवाकर मोरझड़ीकी शराब निकलवायी। शराब पिलाकर बावला कर दिया और महलमें चढ़ा दिया। चार अंग्रेज छिपकर बैठ गये, चार महल पर चढ गये। इस प्रकार पकड़कर पैरोंमें बेड़ी ठोंक दी और हाथोंमें हथकड़ी डाल दी, गलेमें तौक और जंजीर डाल दिये। जब आख खुली तो वह डूगसिंघ बड़ा बेचैन हुआ। वह बड़बड़ करता अंगुलियां चबाने

घोड्यो [डाकू डूँगरसिंघ तू सुण रे जोट्या जाट।
मिनखां मिठगी मोठ-बाजरी, घोड़ां [!] निठग्या घास
मरदांमें तू मरद आगळो हजारां हूं जाट
रामगढ़की हेर ल्या दे, जद जाणूं ताण जाट

लोट्या जाट करणिया मीणा प्यारा जाणा मेळ
डूँग ज्हार री भरी कचेड्यां कीनी बात सकळ
लोट्या जाट करणिया मीणा अकलां मांय गंभीर
भेस पलट ध चल्या रामगढ़, जाणूं छूट्या तीर
लोट्यो कीनी लोभकी काढ़, करण्ये कीनू वास
घर-घर भाळे ख्याल-तमाशा, घर-घर भाळै माल
रामगढ़रे सेठांरी थे मढ़ी कतारां जाण
सोनारी पूतळियां, भरदी। मांय मूंगिया भार
पुरसामलजी, अनंतमलजी, जां सेठां रो माल
रामगढ़ सूं चली कतारां अजमेरां नै आज

नहीं रही । घोड़ोंके लिये घास बाकी नहीं रहा । तू मर्दोंमें श्रेष्ठ मर्द है । हजारोंमें तू जाट (राजा) है । तू रामगढ़की जासूसी कर ले दे जाट । तब मैं तुझे समझूंगा ।

जाट लोटिये और मीणे करणियेने जिनका प्यारा मेल था डूंगरसिंहकी भरी कचहरीमें इस बातको सम्पन्न किया । जाट लोटिया और मीणा करणिया बुद्धिमें गंभीर थे । वे वेश बदलकर रामगढ़को चले मानो तीर छूटे हों । लोटियेने लोभका भी और करणियेने वास किया । घर-घरमें खेल-तमाशा करने लगे और घर-घरमें माल देखने लगे (धन का सुराग लेने लगे) ।

रामगढ़के सेठोंकी लदी हुई कतारें जा रही थीं जिनके भीतर सोनेकी पुतलियां और मूंगोंके ढेर थे । पुरसामलजी और अनंतमलजी ये उन सेठोंके नाम थे । रामगढ़से चली हुई कतारें अजमेरको जा रही थीं । जाट लोटिये और मीणे करणियेने खबर दी कि हे ठाकुर ! अवसर है तो मालखानके पहाड़ोंमें कूद के आडावळा पार करने पर फिर हाथ (बापके) नहीं रहेंगे ।

लख्यै जाट करणिये मीणै ढेरो दियो लगाय
लूटै छै तो लूंट, डूंगजी। अडै-धडैरै माय
आडो-वळो डाकिया पाछे धसका रैसी नांय

सात सवारां नीसर्या, वै हुया कतारां लार
चलती बोरी काट दी, वा मूंग्या दिया खिडाय
चुग-चुग हार्‌या बाळदी, चुग-चुग छक्या गवाळ
चुग-चुग दुनिया धापगी वा जै बोलती जाय
सात ऊंट दरवाका भरिया, पोकरजीनै जाय
पोकरजीकै घाट पर वां जाजम दिवी बिछाय
गरीब-गुरबां बामणानै हेलो दियो मराय
रुपियो-रुपियो दियो बामणा, मो'रां चारण-भाट
असी मो'र दी नानगसाही, साखो दियो जुडाय

धरम-पुन्न यों बाट डूंगजी झडवासैनै जाय
झडवासै मैं सासरो साळा सू मिळवा जाय

वे सात सवारोंको लेकर निकले और कतारोंके पीछे हो गये। उनने चलती हुई बोरियोंको काट डाला, मूंगोंको बिखरा दिया, जिनको चुन-चुन कर बैलोंवाले थक गये, ग्वाले थक गये। दुनिया चुन-चुन कर अघा गयी। वह जय बोलती हुई चली। डूगजी और उसके साथियोंने सात ऊँट उस धनके भरे और पुष्कर तीर्थको गये। वहा गरीबों और ब्राह्मणोंको घोषणा करवा दी। रुपया-रुपया ब्राह्मणों को दिया और चारण-भाटोंको मोहरे दी। नानकशाही अस्सी मुहरे देकर प्रशसा के गीत गवाये।

इस प्रकार धर्म और पुण्यमें धनको बाटकर डूगजी झड़वासे गावको गया। झड़वासेमें ससुराल थी। सालोंसे मिलने गया। झड़वासेके नवलसिंघ और भैरोंसिंघ ने खूब अतिथि-सत्कार किया। कहा—पाहुने! बहुत दिनोंसे आये हो, गोठ जीमते जाओ। दूधसे धोकर चावल राधे, घीसे धोकर दाल राधी, बोरिया भर-भर शक्कर मगायी और घीके नाले बहा दिये।

महराजेका नौलसिंघजी
भैरूसिंघजी फगी करी मनवार
घणा दिनांसूं आया पावणा, गोठ जीमता जाय
दूधां धोय'र चावळ रांध्या पिरसा घाय'र थाळ
बोरी भर-भर खांड मंगायी पिरस पकाया थाळ

१)

रामगढ़का सेठांने जद खबर पड़ी है आय
सेठां लिख परवानो भेज्यो दिल्लीरे दरबार
लूटी म्हारी सबी कतारां लूट्यो मो सब माल
म्हारी धरामें ठिक्यो डूंगजी छैव-छु टके लाय
अबके तो वे लूटी कतारां, अब लूटेगो हेली
आसामी ठस पड़गी होगी रुपियाकी थेली
सेठां लिख परवानो भेज्यो, कहे साथने देणा
डूंगसिंघ म्हारे लारे पड़ग्यो पकड़ कैद कर देणा

---

(१)

रामगढ़के सेठोंको जब आकर खबर पड़ी तो सेठोंने यह पत्र लिखकर दिल्लीके दरबार में (अंग्रेजोंके पास) भेजा—हमारी भरी हुई कतारोंको लूट लिया और तमाम माल हर लिया। यह डूंगजी हमारी धरतीसे परच गया है इसे ढूंढ-ढूंढकर लाना है। इस बार तो उसने कतारें लूटी हैं अबकी बार हवेलीको भी लूट लेगा। आसामियाँ तब ठस पड़ गयी हैं रुपयेकी थैली रह गयी है। इस प्रकार पत्र लिखकर सेठोंने भेजा और कहा—ले जाकर बड़े साहबको देना और कहना कि डूंगसिंघ हमारे पीछे पड़ गया है इसे पकड़कर कैद कर लेना।

अंग्रेजोंको खबर पड़ी तब चार फौजें चढ़कर चलीं। रात-रात चलकर वे सीकरमें पहुँची और सीकरके ठाकुरने कहा—हे सीकरके भैरूसिंघ! डूंगसिंघको हमें पकड़ना है। ठाकुरने कहा—वह हमारा भाई भतीजा (कुटुंबी) लगता है पकड़ाया नहीं जा सकता वह भाखरामें बैठा गोठका माल खा रहा है।

अंगरेजांनै खबर पडी जद चढगी फौजां च्यार
रात-रातकी करी मजल, वै पूंची सीकर मांय
सीकररा परतापसिंघ। म्हानै डूंग न्हार पकडाय
म्हांरो लागै भाई-भतीजो, पकडायो ना जाय
झडव्रासैमें बैठो डूंगजी माल गोठको खाय

सीकरहू वे चाली फौजा, झडव्रासैमें आयी
आसै-पासै खड्या सिपाही, घेरो दियो लगायी
झडव्रासैका भैंरूसिंघ। तूं झट दे बायर आव्र
कै पकडा दै डूंग न्हार, नहिं धरां कैदकें मांय
रोळो-वैधो मत करो, कोइ, ना गळवैका काम
जीजो लागै डूंगजी स मैं हाथां दूं पकडाय

मोरझडीकी दारू कढाव्रै, आंगण भटी तुडाव्रै
दारू पाय'र करै बाव्रळो, मेडी मांय चढाव्रै
च्यार फिरंगी ओटे वैठ्या, च्यार चढ गया मेडी
डूंगसिंघनै सूतो पकड्यो पगा ठोक दी वेडी
हाथां घाली हथक्डी, रे। गळमें तोख जंजीर
आख खुली जद डूंग न्हार बो हुयो घणो दिलगीर

तब वे फौजें सीकरसे चलीं और झड़वासेमें आयी। आस-पास सिपाही खड़े हो गये, चारों ओर घेरा लगा दिया और कहा—हे झड़वासेके भैरोसिंघ! झटपट बाहर आ, या तो डूगसिंघको हमें पकड़वा दे नहीं तो तुझे कैदमें डालते हैं।

भैरोसिंघ बोला—हल्ला-दगा मत करो, झगड़े-झझटका कोई काम नहीं, डूंगजी मेरा जीजा लगता है, अपने हाथोंसे उसे पकड़वा दूगा। आगनमें भट्टी लगवाकर मोर-झड़ीकी शराब निकलवायी। शराब पिलाकर बावला कर दिया और महलमें चढ़ा दिया। चार अग्रेज छिपकर बैठ गये, चार महल पर चढ गये। इस प्रकार पकड़कर पैरोंमें बेड़ी ठोंक दी और हाथोंमें हथकड़ी डाल दी, गलेमें तौक और जजीर डाल दिये। जब आख खुली तो वह डूगसिंघ बड़ा बेचैन हुआ। वह बड़बड़ करता अंगुलिया चबाने

कड़कड़ बाजै आंगळी, जो — कड़कड़ बाजै नाड़
नैण लगै ज्यूं दीवला ज्यांरी — सवा हाथरी नाड़

जद यूं बोल्यो डूंगरसिंघ वे — सुणल्यो फिरंग्यां ! बात
फिटफिट थांरी जामणवाळी, — फिटफिट थांरो बाप
आठ गादड़ा मिळ वे आया — कर्‍यो सिंघसूं घात
सूतै सिंघने धोखै पकड़्यो — फिटफिट थांरी जात
मेरी अकेली जान है, रे। — थांरै पलटण साथ
जेकर ढीलो छोड दो थानै — फेर दिखाऊं हाथ
मेरू सिंघने भली विचारी, — भली निभायी मेळ
आछी करी जुंहारी मेरी, — भलो दियो नारेळ
दुनियामें तूं नांव कढायो — मूंडो हुवग्यो काळो
आप मनेई के कारै तू — दगाबाजको साळो

डूंग न्हारने पकड़कर बां — पींजस दियो बिठाय
आगरैके जाय किलैमें — दीनू छै पुगाय

लगा कड़कड़ करता हाथोंको बजाने लगा। उसके नेत्र ऐसे लाल उठे जैसे दीपक जलते हों। उसकी गर्दन सवा हाथ लम्बी थी।

तब डूंगसिंघ यों कहने लगा—हे फिरंगियो ! तुम मेरी बात सुनो। तुम्हारी जन्म देनेवाली माताको धिक्कार ! तुम्हारे पिताको धिक्कार ! तुम आठ गीदड़ इकट्ठे होकर आये और सिंहसे विश्वासघात किया तुमने सोये हुये सिंहको धोखेसे पकड़ा तुम्हारी जातिको धिक्कार है। मेरा अकेला जीव है और तुम्हारे साथ फौज है पर एक बार ढीला छोड़ दो (बंधन खोल दो) तो फिर तुम्हें हाथ दिखाऊं मेरोसिंघने खूब सोचा ! मित्रता खूब निभायी। मेरा अच्छा सत्कार किया ! खूब नारियल दिया। (जंवाईको जुहारके समय छातीमें नारियल दिये जाते हैं) ! संसार भरमें नाम निकाल लिया ! खूब मुंह काला किया ! बहन-बहनोई तेरे क्या लगते ? तू दगाबाजोंका साला है।

डूंगसिंघको पकड़कर उसने रथमें बैठा लिया और आगरेके लाल किलेमें पहुँचा दिया ५१ मील का साहब देखने आया। बोला—उपप बड़ा होशियार है स्याह

कंपनी सा' निरखणनै आयो, रांघड वडो हुंस्यार
भळभळ तो माथो करै, नैणा जळै मुसाळ
इसडो रांघड अेक है, रे ! जे होवै दो-च्यार
मार-मार फिरग्यांनै कर दै कळकत्तैकै पार
दो बोतल दारूकी पीवै, पका पेटिया च्यार
भल-भल यो जायो ठकराणी न्हारां हंदो न्हार
लाल किलैकै मायनै डूंग न्हार रख लेणा
हुकम नहीं छै काळै पाणी, नजर-कैद कर देणा

(४)

सीकर हूतो चढ्यो ज्वारसिंघ, गढ वठोठमैं आयो
लोट्यो जाट, करणियो मीणो, दोनू सागै लायो
सैं होळीनैं ढळी जाजमा, होय रही मतवाळ
बोतल तो जगजग करै, कोइ, प्याला करै पुकार
'तू पी तूं पी' हो रही, कोइ, करै घणी मनवार

जगामग कर रहा है, नेत्रोंमे मशालें जल रही हैं, अैसा राजपूत यह अेक ही है, जो दो-चार हों तो अंग्रेजोंको मार-मारकर कलकत्तेके पार कर दे, यह शराबकी दो बोतलें पीता है, पक्के चार पेटिये (चार आदमियोंका भोजन) खाता हैं, ठकुरानीने इसे खूब जनम दिया ! यह सिहोंका सिंह है, इस डूंगसिंघको लाल किलेमें रख लेना, कालेपानीका हुक्म नहीं है, नजरकेद कर देना।

(४)

जुहारसिंघ सीकरसे चढ़ा और वठोठके किलेमें आया। जाट लोटिया और मीणा करणिया दोनोंको अपने साथ लाया। ठीक होलीके दिन जाजिमें बिछीं और मदिरापान होने लगा। बोतलें जगाजग कर रही थीं, प्याले सजीव होकर पुकारते थे। 'तू पी, तू पी' इस प्रकार कहकर खूब मनुहारें कर रहे थे।

जब इसकी भनकार कानम पड़ी तो रानी (डूंगजीकी पत्नी) महलसे बाहर निकली। उसने खड़े-ही-खड़े ताना दिया—तुम्हारे शराब पीनेको धिक्कार है ! किसलिअे

राणी कायर भीसरी जद — कान पड़ी भणकार
छमो मसको मारियो, थोरी — वाह्मैं धिरकार
क्यानै बांधो सीस पागड़ी, — क्यानै बांधो सूत ?
लागी काको पड्यो कैदमैं — क्यों बाजो रजपूत ?

मत मा रो राणी ! मसको मारो, — मत मा काढो सेल
जैपर मिली जोधपर मिलगी — मिलगी बीकानेर
ठोम पगानै जागां कोनी, — मांई ठोग्या ठेर

हाथांका हथियार सूंप दो, — चूड़ी आवकी पैरो
धोती ओढ़ा दरा सूंप दो, — पगां पायरी पैरो
पड़दे भीतर लुककर बैठा, — नैणां कजळो माल
मेरे कंधकी बड़ी कादू — मैं तिरियाकी खाल

सांभण लागा बोलणा स — मरदांके खटक्या काळ
रजपूतांके रंग चढ्या स दे — दुळक्या कायर लोग
पांच पानको बीड़ो फेरो — जुझारसिंघ सरदार
कयां चढायो सेबरो — कह्यां रे चढगी ताप

सिर पर पगड़ी बांधते हो ! किसलिये सूत बांधते हो ! सगा काका कैदमें पड़ा है राजपूत क्यों कहलाते हो !

जुझारसिंहने कहा—रानी ! ताना मत मारो भाले जैसे चुभते बोल मत निकालो हमारे विरुद्ध जयपुर मिल गया जोधपुर मिल गया और मिल गया बीकानेर ! आज तो पैर रखनेको हमें स्थान नहीं मिलता । माई ही पीछे पड़े हैं ।

रानीने कहा—हाथोंके हथियार मुझे सौंप दो तुम चूड़ियां पहन लो यह धोती घोड़े इधर दे दो पैरोंमें लहंगा डाल लो पर्देमें छिपकर बैठ जाओ आंखोंमें काजल डाल लो ओढ़नी ओढ़कर भी मैं अपने पतिकी बेटी कहूंगी ।

ये करारे वचन वीरोंको भरदक मानो कोई लगे हों । वे क्रोधमें भर गये । राजपूतोंके रंग चढ़ा । कायर लोग खिसक गये । सरदार जुझारसिंहने पांच पानोंका बीड़ा फिराया ।

सारा नटग्या भाई-भतीजा, सब नटग्या उमराव
बावड़ता बीड़ानें झेल्यो अेक लोटियें जाट

पकी सेर दें गेरू गाळी, करियो भगवों भेस
कर मुजरो वो चल्यो आगरै, राम राखसी टेक
आगरें-नैं चल्यो लोटियो, ज्यूं लंका हड़मान
कै ल्यावैलो खबर डूंगकी, के त्यागैलो प्राण

(५)

आगरें-के बधवा आगैं घूणी घाली सात
अेन्धड-छवड बळै बळीतो, बीच लोटियो जाट
मार पलाखी मींट लगावै, करै गजबका फैल
लोग दिखाऊ अन-जळ ताग्यो, अेक भखै बस पून
आये-गयैसू मुख ना बोलै, अैसी धारी मून
छव महिनाकी लायी समाधी, खूब तप्यो दिन-रात
छठ महीनें लागतां अंग- रेजा बूझी बात

देखकर कई लोगोंने तिजारा चढ़ा लिया। कई लोगोंके बुखार चढ़ गया। सारे भाई-भतीजे मुकर गये, सब सरदार इनकार कर गये। किसीके न लेने पर बीड़ा लौट कर जाने लगा। उस लौटते हुअे बीड़ेको अकेले लोटिये जाटने उठा लिया।

(५)

उसने पक्का सेर भर गेरू गलाया और उससे वस्त्र रंगकर भगवाँ वेश बनाया। फिर जुहारसिंघको मुजरा करके वह आगरेकी ओर चल दिया। बोला—राम मेरी टेक रखेंगे। आगरेके कैदियोंके सामने उसने सात धूनिया जलायीं। इधर-उधर इन्धन जलने लगा। उनके बीचमें लोटिया जाट बैठ गया। पालथी मारकर आँखें बन्द कर लीं। गजबके फैल (आडम्बर) करने लगा। लोगोंको दिखानेके लिअे अन्न-जल भी छोड़ दिया, बस अेक पवनका भक्षण करता। अैसा मौन धारण किया कि किसी आने जानेवालेसे मुँहसे नहीं बोलता। छै महीनोंकी समाधि लगायी। दिन-रात खूब ही तपा। छठे महीने के लगने पर अंग्रेजोंने बात पूछी—हे बाबाजी! किस देशसे आये हो? किस देशको

कुण देसां-सूं आया, बाबाओ ! कुण देसांने जाय ?
पांच पचीस थे लेल्यो बाबा ! धूणी परे हटाय
हुकम नहीं छै बठें सा'बका झपट छूण कर जाय

पांच-पचीस में लेस्यो बच्चा ! ज्यांरे है घर-बार
साधू भूखा भावका, म्हांरे ना मायासूं काम
मांग्या खावां टुकड़ा म्हे रटां रामको नाम
आबूजी-सूं आया उतर म्हे, गंगा न्हावण जावां
थारे किलेमें म्हार दूगजी, वेंरा दरसण पावां
आज कायरी फिरंगी बोल्या, सुणो संतर्‌यां ! बात
ऐ मोडा तो कपटी कोनी नांय कपटकी घात
आं साधांको जिवड़ो भटके, मेळा यो करवाय
दूगसिंघ कठीनंग बेठो जाने देखा दिखाय
च्यार सिपाही आगे होज्यो च्यार सिपाही लार
जोरी-जपटी करै मोड तो धरो फेंकके भौंय

जा रहे हो ! हे बाबा ! पांच-पचीस रुपये ले लो और इस धूनीको परे हटाओ यहां साहबका हुक्म नहीं है बस झपट भाग कर जाओ (जल्दीसे भाग जाओ)।

हे बच्चे ! पांच-पचीस रुपये वह लेगा जिसके घर-द्वार हो साधू भावके भूखे होते हैं हमारे माया (धन) से कोई काम नहीं, हम मांगे हुये टुकड़े खाते हैं और राम का नाम रटते हैं, हम आबू तीर्थसे उतरकर आये हैं गंगा नहाने जाते हैं, तुम्हारे किलेमें दुर्गसिंह हैं उनके दर्शन पावें यही हमारी इच्छा है ।

तब वहां आकर फिरंगी बोला—हे संतरियो ! बात सुनो ये साधू कपटी नहीं (जान पड़ते) हैं कोई कपटकी बात नहीं है इन साधुओंका जी दुर्गसिंहको देखनेके लिए तरस रहा है (व्याकुल है) इनका मिलन करवा दो; चार सिपाही आगे हो जाओ और चार सिपाही पीछे यदि मोडे (साधु) जोर-जबरदस्ती करें तो उठाकर फेंक दो ।

च्यार सिपाही आगै होग्या, च्यार सिपाही लार
लोट्यो जाट, करणियो मीणो, करै किलैकी सैल
फिर-घिर देखी चारदिवारी, नांय लगायी देर
फाटक-मोरी निजरा काढ्या, लियो किलैको भेद
जद बंदवां-की गयो बुरजमैं, मनमैं भयो खुस्याल
अेवड़-छेवड़ सित्तर बधवा, बीच डूंग सिरदार
सुरत पिछाणी जाटकी जद नैणा खळक्यो नीर
छाती भरी, हीवड़ो उभळ्यो, छुट्यो डूंगको धीर

रग रे थारी जात, लोटिया। भलो जाटणी जायो।
आ मरवाकी घडी वाजगी, भलो भेखसूं आयो
कंवरां माथै हाथ फेरज्यो, राणीनै हिंवळास
भाई-भतीजांनै मुजरा कहज्यो, माजीनै घणा सिलाम
जुवारसिंघनै यूं समझायो, घरकी करै संभाळ
जीवांगा तो फेर मिलांगा, ना दरगाकै मांय

फिर चार सिपाही आगे हो गये और चार सिपाही पीछे। इस प्रकार लोटिया जाट और करणिया मीणा किलेकी सैर करने लगे। चहारदिवारीको फिर-घिरकर देख लिया, देर नहीं लगायी। फाटकों और खिड़कियोंको नजरमेंसे निकाल लिया। इस प्रकार किले का सारा भेद ले लिया। जब कैदियोंकी बुर्जमें पहुँचे तो मनमें बड़ा प्रसन्न हुआ। इधर-उधर सत्तर कैदी थे। बीचमें सरदार डूंगसिंघ था। डूंगसिंघने जब जाट (लोटिये) की सूरत पहचानी तो नेत्रोंसे आसू बह चले, छाती भर आयी, हृदय उमड़ आया। इस प्रकार डूंगसिंघका धैर्य जाता रहा। वह बोला——अरे लोटिया! तुझे शाबाश। जाटनीने तुझे खूब जन्म दिया, यह मरनेकी घड़ी बज चुकी थी, तू खूब वेश बनाकर आया, कुंवरोंके माथे पर हाथ फेरना, रानीको धैर्य बधाना, भाई-भतीजोंको मुजरा कहना, माताजीको बहुत-बहुत प्रणाम कहना, जुहारसिंहको यों समझाना कि घरकी देखभाल रखे, जीते रहे तो फिर मिलेंगे, नहीं तो वैकुण्ठमें मिलन होगा, जुहारसिंघको तुम चुपचाप यह खबर सुना देना कि सात दिनोंका हुक्म सुना दिया है, कालेपानी ले जायगे।

सुथारसिंघने छानै सी थे   होक्यो ग्यवर सुणाय
सात दिनांकी बोली दीनी,   काळे पाणी छे जाय
कायर जातीका डूंगजी ! तू   कायरता मत छाड़
सात दिनांके भीतर थाने   घर छे ज्याऊं छुड़ाय
जद कातणको कह्यो छोटिये   डूंग महाराई ठीक
धीर धोवमा बंधा डूंगने   की जाणकी सीख

काछ किळे हूं नीसरतां थां
ढेलयो माळे मोरचा कोइ   करण्यो वाळे सफील
आधी रात पहरका तड़का   जोगयां धूणी ठाथी
मगरां के जमनामें फेंक्या   तूंबा दिया तिराथी
असी रिप्यांमें लियो टोडको   हाक्या रातूं-रात
गढ़ बठोठके आया गोरवें   ऊगतड़े परभात

छोटियेने उत्तर दिया—हे कायर जातीके डूंगसिंह ! कायरता मत कर सात दिनोंके भीतर भीतर तुझे छुड़ाकर घर ले जाऊंगा। फिर छोटियेने डूंगसिंहसे बन्धन काटनेकी बात ठीक की और उसको धैर्य बधाकर आनेके लिये विदा ली।

आज किलेसे निकलते हुए उनने   छोटिया मोरचे देख रहा था कर्णिया बहारवीचारीको ताक रहा था। आधी रात बीतने पर जब प्रातःकाल होनेको पहर भर रह गया था जोगियोंने धूनी उठा दी। मगरों बालोंको लेकर यमुनामें फेंक दिया और तूंबोंको पानीमें तैरा दिया। अस्सी रुपयोंमें अनेक बहान खरीद लिया और रातोंरात चल पड़े। प्रभात होते ही बठोठ गढ़के मैदानमें आ गहुंचे।

(गोरवें= गायोंके बैठनेका मैदान गांव की सीमा जहां रात को गायें बैठती हैं)।

(६)

लोट्यें तो मुजरा करया नव करण्यें राज-जुहार
साम उठकर मुजरा झेल्यो ज्वारसिंघ सिरदार
तू गयो, लोट्या ! आगरे, न कोइ, कहो सहरकी बात

के कहूं, म्हारा रावजी !, कोइ, म्हासूं कयो न जाय
डूंग म्हारले देख'र आया लाल किलेके मांय
इं जीवनूं मरणो चोखो, बुरो कैदका काम
हाथांमें तो पड़ी हथकड़ी, बेड़ी पावां मांय
गळमें तौक-जंजीर पड़ी है, बंद पींजरे मांय
सात दिनांकी बोली लिख दी, काळे पाणी ले ज्याय
मिलणो हो तो मिलो, रावजी ! फेर मिलणका नांय

इतणी बातां हुई कचेड़यां, गयी रावळा मांय
राणी रोवण लागी मया रंग-महलके मांय
कंवर रोवण लाग्या सबै भरी कचेड़ी मांय

---

(६)

लोटियेने मुजरा किया और करणियेने राजसी जुहार। सरदार जवारसिंघने उठकर और सामने आकर मुजरेको स्वीकार किया और कहा—लोटिया ! तू आगरे गया था, उस शहरकी बात कह। लोटियेने उत्तर दिया—हे मेरे रावजी ! क्या कहूँ ? मुझसे कहा नहीं जाता, हम डूंगसिंघको लाल-किलेमें देखकर आये हैं, कैदका काम बड़ा बुरा है, इस जीनेसे मरना अच्छा, हाथोंमें हथकड़िया पड़ी हैं, पैरोंमें बेड़ी पड़ी हैं, गलेमें तौक और जंजीर पड़ी हैं, स्वयं पिंजड़ेमें बन्द हैं, सात दिनोंमें कालेपानी ले जानेका हुक्म लिख कर सुना दिया है, हे रावजी ! मिलना हो तो मिल लो, फिर मिलनेके नहीं।

इतनी बातें कचहरीमें हुई, वे उड़कर रनिवासमें पहुँची। रंगमहलमें रानी रोने लगी। राजकुमार भरी कचहरीमें रोने लगे। उनको समझाया—रोवो मत, रुदन मत

मत रोओ मत रुदन करो, काइ मत ना हुवो उदास
रात-रात परवाना भेजां माई मतीजां पास

सेखावत बीदावत चढिया चढिया तंवर पंवार
मेड़तिया मेड़तिया चढिया, चढ्या नरूका साथ
च्यार कूंट गुसांयांका चढिया दादूपंथी साथ

मूठी-मूठी बान बणा ल्यो, मूठो बामरो बीन
घुग-घुग करलां कू बो मांडो, घुग घुग घुड़लां लीय
आपां सो बानैरी बणस्यां, बीन बणै मोपाळ
दोय जणा लागढ़िया बणजै चिपू घो अरसाळ
हाथां पगांकै बांधो डोरड़ा, सिर सोनाको मोड़
कानां घाळो मामा-मुरकी गळमें घाळो गोप
लाल चोमणे मामा मोचा, लाल कमारी चोड़ो
लाल पापड़ी, रातो बागो रातै महियै घोड़ो

मरो उदास मत होओ रात-दी-रातमें सब माई-मतीजों (कुटुम्बियों) के पास परवाने लिखकर भेजते हैं (और हू गबीको छुड़ानेके लिये तय्यारी करते हैं)।

परवाने पाकर शेखावत और बीदावत चढ़े तंवर और पंवार चढ़े अं बढ़िये-मेड़तिये चढ़े साथमें नरूके चढ़े गुसाइयोंके चार कूंट भी चढ़े और साथम दादूपंथी साधु भी। फिर उनने सलाह की—मूठमूठ बरात बना लो मूठा बरातका दूल्हा बना लो घुनघुनकर ऊंटों पर बीन कसो घुनघुनकर घोड़ों पर बीन रखो हम लोग तो बराती बनेंगे मोपालसिंह दूल्हा बने दो आदमी टोली बनकर सिंदू राग आरम्भ कर दो दूल्हेके हाथों-पैरोंमें कंगन-डोरड़े बांधो सिर पर सोनेका मौर रखो कानोंमें मामा-मुरकियां पहनाओ गलेमें गोप डाल दो लाल चमड़ेकी मामा-जूतियां पहना दो लाल किनारीकी धोती पहना दो लाल जामा और लाल पगड़ी पहनाकर लाल मस्त ऊंट पर चढ़ा दो।

हाथांका हथियार ले लिया, खावाको सामान
जान वणाय'र चल्या आगरै, हर राखैलो मान
रात-रात वै चलै जनेती, दिन ऊग्यां ठम जाय
आगरैकै तीन कोस पर डेरा दिया लगाय

(७)

जमनाजीकै बावैं-डाव्रै रेव्रड चरतो जाय
निजर पड़ी करण्यै मीणैकी, जद यूं बोल्यो आय
हुकम करो तो, सिरदारां! मैं मींडो ल्याऊं उठाय

हुकम चलै छै अंगरेजांको जोरी-जपती नांय
यो अगरेजी राज है स थे जो ल्याव्रोला 'ठाय
बंध्या-बंध्या घोडा, मर ज्यागा, बध्या-बंध्या उमराव्र
गूजरकैनै राजी कर थे ल्याव्रो दोय'र च्यार

फिर उनने हाथोंमें हथियार ले लिये, खानेका सामान ल लिया और बरात बनाकर आगरेको चल दिये। भगवान प्रतिष्ठा रखेंगे। वे बराती रात-रातमें चलते और दिन ऊगते ही ठहर जाते। आगरेके तीन कोस दूर रहने पर उनने डेरे लगा दिये।

(७)

यमुनाकी बायीं ओर मेढ़ोंका झुंड चरता जा रहा था। उस पर करणिये मीणेकी नजर पड़ी। तब वह आकर यों कहने लगा—हे सरदारों! हुक्म करो तो अेक मेढ़ा उठा लाऊं। सरदारोंने कहा—यहा अंग्रेजोंका हुक्म चलता है, जोर-जबर्दस्ती नहीं हो सकती, यह अंग्रेजी राज्य है, यदि तुम उठाकर ले आओगे तो सरदार (कैदमें) बधे-बधे मर जायगे और घोड़े यहा बधे-बधे, हा, अहीरके बेटेको राजी करके अेक नहीं दो-चार ले आओ।

च्यार जणाई कांध चढिया मोडासिंघ सिरदार
आगे आगे मुड़दो चाले, लारां जान-बरात
सबसूं आगे नाल्यो नाई धार घालतो जाय
कंपनी साबके बागमें धर अरथी दयी उतार

चन्नण-चन्नण चिता चिणायी, नारेळांमें दाग
च्यारवार फिर जाट लोटिये लांपो दियो लगाय
धुंवेको जद धूंट उपड्यो, कांप्यो कंपनी साब
बाड घोड़ै चढ़के आयो, गुरजण कुत्ती लार
बुरी करी, रे जानेत्यां! थे मुड़दो दियो जळाय
मुड़दो-मुड़दो मत करो सयो सगळांको सिरदार
अबके मुड़दो क दियो रे तो बाजगी तरवार
ऊंचे कुळको राजवंसी, धोड बावन गढांको राव
सागी बींदको मामो मरग्यो मोडासिंघ सरदार
जोरजी बींदावत बोल्यो, हुयी ओर-सूं-ओर
लाखांको पट्टायत मरग्यो, नहीं रामसूं जोर

बराती पीछे चले। सबके आगे नाल्या नाई पुकार देता हुआ चला। कंपनीके बागमें पहुँचकर उनने अरथी उतार कर रख दी।

फिर चंदनकी चिता बनायी और नारियलोंके साथ दाह-संस्कार कर दिया। लोटिये जाटने चारों ओर फेरी लगाकर आग लगा दी। जब धुएँकी राशि उठी, कंपनी-साहब कांप उठा। वह निपुच्छे घोड़े पर चढ कर आया, पीछे गुरजिन कुतिया थी। उसने आकर कहा— हे बरातियो! तुमने बुरा किया जो मुर्देको यहां जला दिया।

राजपूत तैशमें आकर बोल उठे—मुर्दा-मुर्दा मत करो, यह सबका सरदार है, अबकी बार इसे मुर्दा कह दिया तो तलवार बज उठेगी। यह ऊंचे घरानेका राजवंशी है, बावन गढ़ोंका स्वामी है, दूल्हेका सगा मामा सरदार मेड़ासिंघ मर गया है। बींदावत जोरजी कहने लगा—और-का-और हो गया, लाखोंकी जागीरका स्वामी मर गया, रामसे कोई वश नहीं।

बायी बुरजमें बोल्यो डूंगजी, जाणै धड़क्यो न्हार
म्हारी बेडी काट्या, लोटिया। ना निसरैगो नांव
म्हारी बंधमे सित्तर बंधवा, बांकी पेली काट
कंकी रोवै वैन-भाणजी, कैंकी रोवै माय
बधमें बैठ्यो कहै डूगजी, सुण, रे लोट्या जाट।
पैलां तो बधवांकी काटो, पाछै म्हारी काट
कै जाणेगा सित्तर बधवा, कै जाणैगा लोग
डूंग न्हार यो यूं भागो, ज्यू नीकळ भागो चोर
बुरज तोडकर बायर काढो बंधवा अेकै साथ
दो दिनमें मर ज्यावा, लोटिया। दुनी करैगी वात

ज फिरंगीने वेरो पड ज्या, पाछो वो फिर ज्याय
तोप मुंहांणी म्हांनै चाडै, रहो कैदकै मांय
इतनी सुणकै डूंगजी स बो बोल्यो कडवा वैण
ईं मूडैको धणी लोटिया। म्हांनै आयो लेण ?
मरणैसूं जे डरै, लोटिया। तोपाको भै खाय
वेगो तेरो करे म्यानमे पूठो घरनै जाय

ध्यान किया और दो घडीके भीतर चहारदीवारी पर सीढी लगा दी। फिर चुने-चुने वीर लाल किलेमें कूद पड़े, पीछे-पीछे करणिया चल रहा था, आगे लोटिया जा रहा था।

इस प्रकार वे डूगसिंघ वाले बुर्जके पास पहुँच गये और आवाज दी—हे डूगजी! बोलता है तो बोल, बेड़ी काट दें। तब बायीं बुर्जमेसे डूगजी बोला—मानो सिंह दहाड़ा—अरे लोटिया! मेरी बेड़ी काटनेसे नाम नहीं रखा जायगा, मेरे साथ कैदमें सत्तर कैदी हैं, उनकी बेड़ी पहले काट, किसीकी बहन-भानजी रो रही हैं, किसीकी मा रो रही हैं, किसीके छोटे बच्चे रो रहे हैं, किसीकी स्त्री रो रही है। कैदमें बैठा डूगजी कहता है—अरे लोटिया जाट! सुन, पहले तो इन कैदियों की बेड़ी काट, पीछे मेरी काटना, नहीं तो सत्तर कैदी क्या जानेंगे? लोग भी क्या जानेंगे? कहेंगे—सिंह जैसा डूगजी अैसे निकल भागा ज्यों चोर निकल भागता हो, बुर्जको तोड़कर सब कैदियोंको अेक

च्यार जणाई काँध चढियो मींढासिंघ सिरदार
आगै-आगै मुड्दा घालै, लरा जान-बरात
सबसं आगै नाल्यो नाई बार घालतो जाय
कपनी साथै बागमें वा अरथी दयी उतार

अन्नण-चन्नण चिता चिणायी, नारेळांमें दाग
आरबार फिर जाट लोटियै लांपो दियो लगाय
धुंवाको जद दूंगर उपड्यो, काप्यो कपनी साय
बांडै घोड़ै चढकर आयो, गुरजण कुत्ती लार
बुरी करी रे जानैत्या! थे मुड्दो दियो जळाय
मुड्दो-मुड्दो मत करो स यो सगळाको सिरदार
अबकै मुड्दो के दियो स तो बाजैगी तरवार
ऊंचे कुळको राजवी, ओ बावन गढाको राव
सागी बीनको मामो मरग्यो मींढासिंघ सरदार
जोरजी बीदावत बोल्यो, हुयी और-सू-और
लाखांको पट्टायत मरग्यो, नहीं रामसूं जोर

बराती पीछे चले। सबके आगे नाल्या नाई पुकार देता हुआ चला। कपनीके बागमें पहुँचकर उनने अरथी उतार कर रख दी।

फिर चंदनकी चिता बनायी और नारियलोंके साथ दाह-संस्कार कर दिया। लोटिये जाटने चारों ओर फेरी लगाकर आग लगा दी। जब धुएँकी राशि उठी, कपनी-साहब काँप उठा। वह निपुच्छे घोड़े पर चढ कर आया, पीछे गुरजिन कुतिया थी। उसने आकर कहा—हे बरातियों! तुमने बुरा किया जो मुर्देको यहां जला दिया।

राजपूत तैशमें आकर बोल उठे—मुर्दा-मुर्दा मत करो, यह सबका सरदार है, अबकी बार इसे मुर्दा कह दिया तो तलवार बज उठेगी। यह ऊंचे घरानेका राजवंशी है, बावन गढ़ोंका स्वामी है, दूल्हेका सगा मामा सरदार मेढ़ासिंघ मर गया है। बीदावत जोरजी कहने लगा—और-का-और हो गया, लाखोंकी जागीरका स्वामी मर गया, रामसे कोई वश नहीं!

आय कायरी फिरंगी बोल्यो नहीं मरणैकी बूटी
तीन घड़ीको तेयो कर दो बारा घड़ीरी बाटी
तेरा घड़ीको तेरो करके मेलो घोड़ा काठा
तीन दिनांको करां तीसरो, बारा दिनको बाटी
तेरा दिनको तेरो करके मेलां घोड़ां काठी

फिरगी तो पाछो फिरग्यो, स कोड़, करी न ज्यादा बात
नांय भरोसो के करै स काइ, या रांघड़की जात

(८)

बाज्या ढोल नगारा घुड़ल्या, चढ्या ठाकियां साथ
फिरंगी चढ़ग्यो ठाकियां स मरदांका आग्या हाथ

लोठ्य जाट करणिय मीणै माताजीन ध्यायी
होय सहीकै मांगलै भा भीसरण्या रे अगायी
अंटा-अंटा चूल पड़ पा बे छाल फिलेले मांय
जेठा-जेठा लो करणियो, जागे लोटयो जाय
लोठे है तो लोठ, चूगयी! देखां पेटी काढ

तब फिरगी आखरी लाकर बोला—मरेकी कोई दवा नहीं; तीन घड़ीका तीसरा कर दो बारह घड़ीकी बाटी कर दो और तेरह घड़ीका तेरा करके घोड़ों पर जीन रखो (यहासे चले जाओ)। सरदारोंने कहा—तीन दिनोंका तीसरा करेंगे बारह दिनकी बाटी करेंगे और तेरह दिनकी तेरहीं करके घोड़ों पर जीन रखेंगे। फिरगी यह सुनकर लौट गया उसने अधिक बात नहीं की, यह रांघड़ (राजपूत) की जात है भरोसा नहीं क्या कर बैठे!

(८)

उधर ठाकुरोंकी सवारी निकली। ढोल बजे आसे लड़के। फिरगी चलकर ठाकुरों के साथ गया इधर मर्दोंका हाथ लगा। लोटिये जाट और करणिये मीणेने देवीका

बायी बुरजमें बोल्यो डूंगजी, जाणै धड़क्यो न्हार
म्हारी बेड़ी काट्या, लोटिया। ना निसरेगो नाव
म्हारी बंधमे सित्तर बंधवा, बाकी पैली काट
कैंकी रोवे बैन-भाणजी, कैंकी रोवै माय
बधमें बैठ्यो कहै डूंगजी, सुण, रे लोट्या जाट।
पैला तो बधवाकी काटा, पाछै म्हारी काट
कै जाणैगा सित्तर बंधवा, के जाणैगा लोग
डूंग न्हार यो यूं भागो, ज्यूं नीकळ भागो चोर
बुरज तोडकर बायर काढो बंधवा अेकै साथ
दो दिनमें मर ज्यावा, लोटिया! दुनी करैगी बात

ज फिरंगीनै बेरो पड ज्या, पाछो वो फिर ज्याय
तोप मुंहांणी म्हांनै चाडै, रहो कैदकै मांय
इतनी सुणकै डूंगजी स बो बोल्यो कडवा वैण
ईं मूडैको धणी लोटिया। म्हांनै आयो लेण?
मरणैसूं जे डरै, लोटिया! तोपाको भै खाय
तेगो तेरो करे म्यानमें पूठो घरनै जाय

ध्यान किया और दो घडीके भीतर चहारदीवारी पर सीढी लगा दी। फिर चुने-चुने वीर लाल किलेमें कूद पड़े, पीछे-पीछे करणिया चल रहा था, आगे लोटिया जा रहा था।

इस प्रकार वे डूंगसिंह वाले बुर्जके पास पहुँच गये और आवाज दी—हे डूंगजी! बोलता है तो बोल, बेड़ी काट दें। तब बायीं बुर्जमेंसे डूंगजी बोला—मानो सिंह दहाड़ा—अरे लोटिया! मेरी बेडी काटनेसे नाम नहीं रखा जायगा, मेरे साथ कैदमें सत्तर कैदी हैं, उनकी बेड़ी पहले काट, किसीकी बहन-भानजी रो रही हैं, किसीकी मा रो रही हैं, किसीके छोटे बच्चे रो रहे हैं, किसीकी स्त्री रो रही है। कैदमें बैठा डूंगजी कहता है—अरे लोटिया जाट! सुन, पहले तो इन कैदियों की बेड़ी काट, पीछे मेरी काटना, नहीं तो सत्तर कैदी क्या जानेंगे? लोग भी क्या जानेंगे? कहेंगे—सिंह जैसा डूंगजी असे निकल भागा ज्यों चोर निकल भागता हो, बुर्जको तोड़कर सब कैदियोंको अेक

बंधवा आगे बंधवो चालया, सगळा सागे ऊठ
चोइस बंधवा साथे उळट्या, नीसरणी गयी टूट
नीसरणी तो दगो दियो, अब दरवाजेनै चालो
भळो करी, रे बंधवा ! थे तो काम कर दियो काळो
कोई ले लो छुरी-कटारी, कोई-बरछी भालो
अेकं सागं पडो उळटकं, खवो खवं सूं जोडो
रामा-दळ ज्यूं लका तोडी, यूं दरवाजो तोडो

दरवाजैकं मूंडै आगै अडी खाट-सूं-खाट
दरवाजैकी मोरी आगै खूब चलै तरवार
तरवारयाका उड टूकडा, लडै लोटियो जाट
सेखावत वीदावत भूमै, लडै नरूका साथ
मेडतिया-मेडतिया भगडै, भगडै तंवर-पंवार
लडै गुसाई दादू-पंथी, भळी चलावै वार
बालयो नाई भाटा मारै चाकर चरवादार
भलां-भळांका टूक उडावै, लडै डूंगजी न्हार
लोट्यो जाट करणियो मीणो, वध-वध वावै तरवार

फिर केदीके आगे केदी हो गया और सब अेक साथ उठ कर चले । चौबीस केदी अेक साथ टूट पड़े जिससे सीढी टूट गयी । तब बोले—सीढीने तो धोखा दिया, अब दरवाजेकी ओर चलो । केदियों ! तुमने खूब किया, काम बिगाड़ दिया, अब कोई छुरी-कटार और कोई बरछी-भाला ले लो, अेक साथ टूटो, कधेसे कधा भिडा दो, रामकी सेनाने जिस प्रकार लकाको तोडा था उसी प्रकार दरवाजा तोडो ।

दरवाजेके सामने खाट—से-खाट अड गयी । दरवाजेकी खिडकीके सामने खूब तलवार चलने लगी । तलवारोंके टुकडे उडने लगे । लोटिया जाट लड़ने लगा । शेखावत और बीदावत, और साथमें नरूके लड़ रहे थे । अेडतिये-मेड़तिये, तवर और पवार भगड़ रहे थे । गुसाई और दादूपथी भी लड़ रहे थे । खूब चोटें कर रहे थे । बालिया नाई और नौकर-चाकर पत्थर फेंक रहे थे । सिंह जैसा डूगजी लड़ रहा था जो अच्छे—अच्छों के

चोइस तो पूरबिया काट्या सोळा चोकीदार
सित्तर तो काबलिया काप्या, ठारा मुगळ पठाण
यां आगरो बाहर निकस्या, बोल्या जै-जैकार
राम-दुहाई फिरी किलेमें, रोकणियो कोइ नांय

(६)

आगरैनै पूठ देय बै चाल्या रातूं-रात
बेड़ियांका तो पांव सूजग्या चाल्यो कोनी जाय
आगरैकै लाल किलेमें बात करी बां मोटी
असी कोसकै चाल्यै डूंगजी करी मुकामे रोटी
फौजां वो बाटी करी स घोड़ांनै दीनी दाळ
आम्बा पड़िया पांतिया स को लग्या खुसीका बाळ
काट्यो काट करणियो मीणो बेड़ियांनै समझाय
म्हारो फिरंगी खारो करसी आप-आपनै जाय

मुकाम करके ठहर रहा था। कोठिया काट और करणिया मीणा यह गढ़कर तलवार चला रहे थे। उनने चौबीस पूरबिये सिपाही सोलह चौकीदार सत्तर काबुली और अठारह मुगल तथा पठान मार डाले। इस प्रकार आगरेके किलेको छोड़कर बाहर निकल गये और जय-जयकार करने लगा। किलेके भीतर रामकी दुहाई फिर गयी रोकनेवाला कोई नहीं रहा।

(६)

आगरेकी ओर पीठ करके वे रातोंरात चले। बेड़ियोंके पैर सूज गये। उनसे चला नहीं जाता था। आगरेके लालकिलेमें उनने बड़ी बात की। अस्सी कोस चढ़े हुए चलकर डूंगजीने मुकाम पहुँचकर रोटी की। फौजके लोगोंने बाटी बनायी और घोड़ोंको दाल दी। गहरी पातें पड़ीं। खुशीके बाजे बजने लगे। फिर कोठिये काट और करणिये मीणेने बेड़ियोंको समझाया—फिरंगी हमारा पीछा करेंगे इसलिये अब अपना अपना मार्ग लेना।

(१०)

सीकर-माकर नीसरया, वां गारो रामगढ फेट
च्यार तो चपड़ासी पकड्या, सोळा पकड्या सेठ
हाथ जोड सेठाण्या बोली, राखो म्हां पर हेत
थे छो बेटा उदैसिंघका, म्हे छा ज्याका सेठ
घोडाने तो घास घतावां, थाने चूरो-भात
गादी-गिदवा देवां बेसणा, घणी करा मनवार

सेठाण्यांकी अरज सुणी जद सोळी पड़गी रीस
सेठांने तो मुकत कर दिया गुन्हा कस्या बगसीस
कई दिनाका बिछड्या म्हे तो जावां बठोठकै मांय
राणी ऊभो काग उडावै, परजा जोवै बाट

बठोठ पूग्या डूंगजी वै दळ-वादळ ले साथ
राणी महला ऊतरी स वा भर मोत्याको थाळ
आघा पधारो, सायबा! थानै मोत्यां लेवूं वधाय

---

(१०)

वे सीकरमेंसे होकर निकले और रामगढ़के अेक फेंट भारी। वहां चार सरकारी चपरासी और सोलह सेठ पकड़े। तब सेठानियां हाथ जोड़कर कहने लगीं—हम पर प्रेम रखो, तुम उदयसिंघके बेटे हो जिनके हम सेठ हैं, तुम्हारे घोड़ोंको घास डलवायेंगे, तुमको चूरा-भात जिमायेंगे, गादी-तकिये बेठनेको देंगे और खूब मनुहारें करेंगे।

सेठानियोंकी अर्ज सुनी तो रोष ठंडा गया। सेठोंको छोड़ दिया और अपराध क्षमा कर दिये। कहा—हम बहुत दिनोंके बिछुड़े हैं, बठोठके गढ़में जाते हैं, रानी खड़ी कौवे उड़ाती है (प्रतीक्षा करती है) और प्रजा बाट जोह रही है (महमानी खानेको नहीं टहर सकते)।

डूंगजी बादलों सी सेना साथ लिये बठोठ पहुँचे। रानी बधानेके लिअे मोतियोंसे थाल भरकर गढसे उतरी और बोली—हे स्वामी! आगे बढ़ो, मैं मोतियोंसे बधा लूं।

म्हाने मतां बधावो, राणी। बधावो खोट्यो बाट
म्हे आपे मरि आया, म्हाने ल्यायो खोटियो बाट

(११)

डूँग न्हार जोधाणे बैठो, ज्वारो बीकानेर
काके-भतीजां मनमें रेगी लूटणकी अजमेर

डूंगजीने कहा—हे रानी! हमें मत बधाओ। खोटिये बाटका बधावो हम अपने आप नहीं आये, हमें खोटिया बाट लाया है।

(११)

फिर डूंगसिंह जोधपुरमें जा बैठा और जवारसिंह बीकानेरमें। चाचा और भतीजा दोनोंके मनमें अजमेर लूटनेकी इच्छा रह गयी।

राजस्थानी शब्दांरी जोड़णी *

१ तत्सम शब्द

१ सस्कृत तत्सम शब्दांरी जोड़णी मूल मुजब करणी—

उदाहरण—पति गुरु कृपा दृष्टि शेष रोष यश अक्षर ॐकार ज्ञान।

२ सस्कृतरा तत्सम शब्द प्रथमा अेकवचनरा रूपमें लेणा, आगे विसर्ग हुवै तो उणनै छोड देणो—

उदा०—पिता माता दाता आत्मा राजा धनी स्वामी लक्ष्मी श्री मन यश।

३ सस्कृतरा व्यजनांत शब्द स्वरान्त करनै लेणा—

उदा०— विद्वान धनवान जगत परिषद सम्राट अर्थात पश्चात किंचित।

विशेष—इसा शब्द समासमें पूर्वपद होयनै आवै तो मूल सस्कृत मुजब लिखणा—

उदा०—पश्चात्पद, किंचित्कर, जगत्पति, विद्वद्वर।

४ सस्कृत तत्सम शब्दामें दो स्वरारै बीचमें जको ड ल और व आवै उणनै ड़ ळ और व़ लिखणो—

उदा०—पीड़ा व्रीड़ा क्रीड़ा क्रोड, जळ बळ काळ माळा बाळक निष्फळ निर्मळ पाताळ, पव़न भव़न प्रव़र कव़ि देव़ी देव़ेन्द्र तरुव़र सरोव़र।

२ तद्भव शब्द

५ भाषामें तद्भव और तत्सम दोनू रूप चालता हुवै तो दोनू स्वीकार करणा—

उदा०—भाग्य—भाग, रात्रि—रात, वार्ता—वारता, यश—जस।

६ तद्भव शब्दामें ॠ ङ ञ श ष क्ष ज्ञ इता आखरारो प्रयोग नहीं करणो—

अपवाद—राजस्थानीरी कई बोलियामें श आखररो प्रयोग देखीजै है, उण बोलियारा अवतरण आवै जठै श आखररो प्रयोग करणो—

उदा०—जाईशा।

---

* 'सक्षिप्त राजस्थानी व्याकरण'रो अेक परिशिष्ट।

११ तद्भव शब्दरा अन्तमें अनुप्राणित ह ध्वनि आवै और उणरो पूर्व स्वर दीर्घ हुवै तो ह ध्वनिनै नहीं लिखणी, उणरो लोप कर देणो, अथवा उणरी जाग्या संज्ञा हुवै तो य और क्रिया हुवै तो व कर देणो—

उदा०—ठा रा सा सीं मॅ खे मे' खो छो पो मो लो।
चा चाय मां मांय रा राय सा साय ।
ढा ढाव़णो वा वाव़णो दू दूव़णो लू लूव़णो
भे भेव़णो ढो ढोवणो पो पोव़णो मो मोव़णो
सो सोव़णो ।

विशेष—नाह कोह इण शब्दामें ह श्रुति नहीं, पूरी ह ध्वनि है, इण वास्तै इणानै नाको नहीं लिखणा ।

१२ तद्भव शब्दामें ह श्रुतिसूं पूर्व अकार हुवै तो दोनानै मिलायनै अै कर देणा—

उदा०—गहणो गैणो गहरो गैरो चहरो चैरो
जहर जैर कहर कैर सहर सैर
लहर लैर महर मैर नहर नैर
बहन बैन वहम वैम रहम रैम
सहणो सैणो कहणो कैणो वहणो वैणो
महणो मैणो रहणो रैणो लहणो लैणो
महल मैल मौल पहर पैर, पौर

१३ तद्भव शब्दामें अलपप्राण और महाप्राणरो संयोग हुवै जद महाप्राणनै दोलड़ो लिखणो—

उदा०—अख्खर पख्ख जख्ख सख्ख भख्ख लख्ख, बध्ध पध्धड़, जुम्म्फ बुम्म्फ तुम्म्फ सुम्म्फ मुम्म्फ, पथ्थर मथ्थ कथ्थ सथ्थ, वफ्फ, सभ्भ लभ्भ अभ्भ दभ्भ ।

अपवाद—च-छ रो, ट-ठ रो, अथवा ड-ढ रो संयोग हुवै जद दोलड़ा नहीं लिखणा—

उदा०—अच्छर मच्छर सच्छ गच्छ भच्छ रच्छ, चिट्ठी दिट्ठ मिट्ठ, कड्ढ वड्ढ दड्ढ ।

१४ बोलचालम अल्पप्राण और महाप्राण गोमू उच्चारण पावीजै जद म्युत्पत्ति मुजब अल्पप्राण अथवा महाप्राण लिखणो

उदा०—समभणो (समझ्क), बांफ (बंझा) सांफ (संझा), भुभणो (भुज्झ), भूभणो (भुज्झ) सुभणो (सुज्झ) सीभणो (सिज्झ) वेभ (विज्झ), सेभ (सेज्झा) तीभ (तइज्झा) भीजणो (भिज्झ)

१५ संस्कृतमें शब्दरा आरम्भम बको व हुवे उणनै राजस्थानीम व हीज लिखणो, हिंदी भाली दाई व नहीं लिखणो—

उदा०—बखाणनो, बंचणो बचावणो बछडो बटणो बटाऊ, बडो, बणमो, बणजारो, बडाई बहनो बदू, बसरणो, बधणो, बधावणो बधाई, बधोतरी बनात बमो, बरतणो बरमो बरसात, बरस बरात बसणो वही बहू बसेरो, बंस, बांको बांस बाठ बात बागो बाजो, बाजणो बार बांस, बाड़ली बिकणो बिकरी, बिगडनो बिछडनो, बीच बीकानेर बीजळी बींधणो बीस (=२०), बुरो बेचणो, बेभ, बेक बेसी, बेस बैरणो बेरो बैत बैद बैंस।

१६ संस्कृतमें व हुवे बठै राजस्थानीमें ही व लिखणो—

उदा०—बाळक बाण बठ बूझणो बुद्धि।

१७ संस्कृतमें शब्दरा आरम्भम द्व हुवे बठै राजस्थानीम ब लिखणो—

उदा०—द्वार—बार द्वितीया—बीज द्वितीयक—बीजो।

१८ प्राकृतम म्ब (संस्कृतम र्व म्र) हुवे बठै राजस्थानीमें ब लिखणो—

उदा०— सर्व	सम्ब	सब सरब
पर्व	पम्ब	परब
खर्व	खम्ब	खरब
गर्व	गम्ब	गरब
दूम्म	दुम्ब	दरब

९ दो स्वरां बीचमें जको व हुवै उणनै व़ लिखणो—

उदा०—सांव़रो, भंव़रो, गंव़ार, गांव़, नांव, धूंव़ो, घाव़, राव़, नाव़, सेव़णो, मोव़न, कूव़ो, गाव़णो, आव़णो, जाव़णो, दूव़णो, सीव़णो, पीव़णो, देव़णो, लेव़णो ।*

१० शब्दरा मध्यमें प्राकृतमें ल्ल (सस्कृतमे ल्य, ल्व, ल्ल) हुवै जठै राजस्थानीमें ल लिखणो तथा प्राकृतमे ल (सस्कृतमें ल) हुवै जठै राजस्थानीमें ळ लिखणो—

उदा०—				
कल्य	कल्ल	काल	काल	काळ
गल्ल	गल्ल	गाल	गालि	गाळ
मल्ल	मल्ल	माल	माला	माळ
शल्य	सल्ल	साल	शाला	साळ
	पल्ल	पाल	पाल	पाळ
	झल्ल	झाल	ज्वाला	झाळ
भद्रक.	भल्ल	भलो	भाल	भाळ
भल्लकः	भल्लउ	भालो	सकलक	सगळो
मूल्य	मोल्ल	मोल	शृगाल	स्याळ
पल्ली	पल्ली	पाली	मालिक	माळी
बिल्व	बिल्ल	बील	जालिकक	जाळियो
चल्	चल्ल	चालणो	क्लेश	कळेस
आर्द्रक	अल्लउ	आलो	कलश	कळस
कल्याण	कल्लाण	कल्याण	कालुष्य	काळख
		किल्लयाण	पलाश	पळास

विशेष—विशाल विलास लालमा इत्यादि शब्द तत्सम है, तद्भव नहीं ।

---

* ब, व और व़ रा नियम सक्षेपमें—

(१) सस्कृतमें व हुवै जठै राजस्थानीमें ब लिखणो ।
सस्कृतमें द्व, र्व व्य हुवै जठै राजस्थानीमें ब लिखणो ।
सस्कृतमें व हुवै जठै राजस्थानीमें ब नहीं लिखणो ।

(२) शब्दरा आरभमें आवै जद व लिखणो ।
शब्दरा मध्य अथवा अ तमें आवै जद व़ लिखणो ।

११ तद्भव शब्दरा अन्तमें अनुप्राणित ह ध्वनि आवै और उणरो पूर्व स्वर दीर्घ हुवै तो ह ध्वनिनै नहीं लिखणी, उणरो लोप कर देणो, अथवा उणरी जाग्या संज्ञा हुवै तो य और क्रिया हुवै तो व कर देणो—

उदा०—ठा रा सा सीं मँ खे मे' खो छो पो मो लो।

घा	घाय	मां	मांय	रा	राय	सा	साय।
ढा	ढाव्णो	वा	वाव्णो	दू	दूव्णो	लू	लूव्णो
भे	भेव्णो	ढो	ढोवणो	पो	पोव्णो	मो	मोव्णो
सो	सोव्णो।						

विशेष—नाह कोह इण शब्दामे ह श्रुति नहीं, पूरी ह ध्वनि है, इण वास्तै इणानै नाको नहीं लिखणा।

१२ तद्भव शब्दामें ह श्रुतिसू पूर्व अकार हुवै तो दोनानै मिलायनै अै कर देणा—

उदा०—

गहणो	गैणो	गहरो	गैरो	चहरो	चैरो
जहर	जैर	कहर	कैर	सहर	सैर
लहर	लैर	महर	मैर	नहर	नैर
वहन	वैन	वहम	वैम	रहम	रैम
सहणो	सैणो	कहणो	कैणो	वहणो	वैणो
महणो	मैणो	रहणो	रैणो	लहणो	लैणो
महल	मैल मौल	पहर	पैर, पौर		

१३ तद्भव शब्दामे अलपप्राण और महाप्राणरो सयोग हुवै जद महाप्राणनै दोलड़ो लिखणो—

उदा०—अख्खर पख्ख जख्ख सख्ख भख्ख लख्ख, बध्ध पध्धड़, जुम्म्फ बुम्म्फ तुम्म्फ सुम्म्फ मुम्म्फ, पथ्थर मथ्थ कथ्थ सथ्थ, बफ्फ, सभ्भ लभ्भ अभ्भ दभ्भ।

अपवाद—च-छ रो, ट-ठ रो, अथवा ड-ढ रो सयोग हुवै जद दोलड़ा नहीं लिखणा—

उदा०—अच्छर मच्छर सच्छ गच्छ भच्छ रच्छ, चिट्ठी दिट्ठ मिट्ठ, कड्ढ वड्ढ दड्ढ।

१४ बोलचालमें अल्पप्राण और महाप्राण रो नूं उच्चारण पाणीबे बद अनुसारे मुख्य अल्पप्राण अथवा महाप्राण लिखणो

उदा०—समझणो (समज्झ्), सांझ (संझा) सांझ (संझा) जूझणो (जुज्झ), जूझणो (जुज्झ) सूझणो (सुज्झ) मींझणो (मिज्झ) वेझ (विज्झ सेज (सेज्जा) तीज (तइज्जा) मीजणो (मिज्ज)

१५ संस्कृतमें शब्दरा आरम्भमें बको व हुवे उणनै राजस्थानीमें ब ही लिखणा हिंदी आदी सांई व नहीं लिखणो—

उदा०—बखाणणो, बंधणो, बधावणो बछड़ो बटवो बटाऊ, बड़ा, बणनो बणजारो, बडाई बढ़नो बद बतरणो बभणो, बधावणो बधाई बधोतरी बमास बमो, बरतणो बरसो बरसात बरस, बराठ बसणो बही, बहू बसेरो बंध, बांको, बांस बाट बाव बागो बाजो, बाजणो बार, बांस बावड़ी बिकणो बिकरी बिगड़णो बिछड़णो, बीच बीकानेर, बीजळी बीणणो बीस (=२०), बुरो बेचणो बेमा, बेक बणी, बेस बेरणो बरा बेत बेद बेंस ।

१६ संस्कृतमें व हुवे बठे राजस्थानीमें ही व लिखणो—

उदा०—बाळक बाण बळ बूझणो बुद्धि ।

१७ संस्कृतमें शब्दरा आरम्भमें द्व हुवे बठे राजस्थानीमें ब लिखणो—

उदा०—द्वार—बार द्वितीया—बीज द्वितीयक—बीजो ।

१८ प्राकृतमें ब्ब (संस्कृतमें र्व व्व) हुवे बठे राजस्थानीमें ब लिखणो—

उदा०—			
	सर्व	सब्ब	सब सरब
	पर्व	पब्ब	परब
	खर्व	खब्ब	खरब
	गर्व	गब्ब	गरब
	द्रव्य	दब्ब	दरब

१९ दो स्वरारै वीचमें जको व हुवै उणनै व़ लिखणो—

उदा०—सांव़रो, भंव़रो, गंव़ार, गाव़, नांव़, धूँव़ो, चाव़, राव़, नाव़, सेव़णो, मोव़न, कूव़ो, गाव़णो, आव़णो, जाव़णो, दूव़णो, सीव़णो, पीव़णो, देव़णो, लेव़णो ।*

२० शब्दरा मध्यमें प्राकृतमें ल्ल (संस्कृतमें ल्य, ल्व, ल्ल) हुवै जठै राजस्थानीमें ल लिखणो तथा प्राकृतमे ल (संस्कृतमें ल) हुवै जठै राजस्थानीमें ळ लिखणो—

उदा०—कल्य	कल्ल	काल	काल	काळ
गल्ल	गल्ल	गाल	गालि	गाळ
मल्ल	मल्ल	माल	माला	माळ
शल्य	सल्ल	साल	शाला	साळ
	पल्ल	पाल	पाल	पाळ
	झल्ल	झाल	ज्वाला	झाळ
भद्रक	भल्ल	भलो	भाल	भाळ
भल्लकः	भल्लउ	भालो	सकलक	सगळो
मूल्य	मोल्ल	मोल	शृगाल	स्याळ
पल्ली	पल्ली	पाली	मालिक	माळी
बिल्व	बिल्ल	बील	जालिकक	जाळियो
चल्	चल्ल	चालणो	क्लेश	कळेस
आर्द्रक	अल्लव	आलो	कलश	कळस
कल्याण	कल्लाण	कल्याण	कालुष्य	काळख
		किल्ल्याण	पलाश	पळास

विशेष—विशाल विलास लालमा इत्यादि शब्द तत्सम है, तद्भव नहीं ।

---

* व, व और व़ रा नियम संक्षेपमें—

(१) संस्कृतमें ब हुवै जठै राजस्थानीमें ब लिखणो ।
   संस्कृतमें द्व, र्व व्य हुवै जठै राजस्थानीमें ब लिखणो ।
   संस्कृतमें व हुवै जठै राजस्थानीमें ब नहीं लिखणो ।

(२) शब्दरा आरंभमें आवै जद व लिखणो ।
   शब्दरा मध्य अथवा अंतमें आवै जद व़ लिखणो ।

११ शब्दरा मध्यमें प्राकृतमें ण्ण (संस्कृतमें ण्य र्ण ज्ञ न्य न्न ष्ण) हुवै जठै राजस्थानीमें न लिखणो तथा प्राकृतमें ण (संस्कृतमें ण न) हुवै जठै राजस्थानीमें ण लिखणो—

यथा०—पुण्य	पुण्ण	पुन	थण	थण	थण
वर्ण	वण्ण	वान	कण	कण	कण
पर्ण	पण्ण	पान	वन	वण	वण
कर्ण	कण्ण	कान	घनक	घणअ	घणो
चूर्ण	चुण्ण	चून	भुवन	भुवण	भुवण
जीर्णक	जुण्णअ	जूनो	अग्नि	अग्गि	आग
अन्य	अण्ण	आन	पुनि	पुणि	पुण
धन्य	धण्ण	धन	धन	धण	धण
शून्यक	सुण्णअ	सूनो	कनक	कणअ	कणक
मिसक	मिण्णअ	मीसो	मानु	माणू	माण
अन्न	अण्ण	अन	रजनी	रयणी	रैण
कृष्ण	कण्ह	कान	हानि	हाणि	हाण
	कसण	किसन	नयन	नयण	नैण

अपवाद—धुन (ध्वनि) पून (पवन), मून (मौन)।

विशेष—धन मन जन वन दान मान मौन पवन मुनि इत्यादि तत्सम शब्द है, तद्भवमें नहीं।

१२ शब्दरा मध्यमें प्राकृतमें ड्ड वा ड्ढ हुवै जठै राजस्थानीमें ड लिखणो तथा प्राकृतमें ड हुवै जठै राजस्थानीमें ड़ लिखणो—

यथा०— बड्ड	बडो	पीडा	पीडा	पीड़
कोड्ड	कोड	भट	भड	भड़
दड्ढ	दाड	तट	तड	तड़
गड्डिआ	गाडी	प्रति	पडि	पड़
हड्ड	हाड	पट	पड	पड़
खड्ड	खाड	कोटि	कोडि	कोड़
गड्ड	गाडो	पोटक	पोडअ	पोड़ो

अंडउ	ईंडो	साटिका	साडिआ	साड़ी
कुंडिआ	कूँडो	वाटिका	वाडिआ	वाडी
सुंड	सूँड	मुकुट	मउड	मोड़
मुंड	मूँडणो	कपाट	कवाड	किंवाड

२३ तद्भव शब्दांमें ड़ अथवा ळ रै आगै ण आवै उणनै सुविधानुसार न अथवा ण लिखणो—

उदा०—घडनो जडनो पडनो बळनो गळनो तळनो जोडनो सीड़नो जोड़नी माळनी माळन।

३ व्याकरणरा रूप

२४ प्रत्यय मूल शब्दारै साथै मिलायनै लिखणा, न्यारा नहीं लिखणा—

उदा०—उदारता टाबरपणो गाडीआळो वागवान।

२५ परसर्ग अथवा विभक्ति-प्रत्यय मूळ शब्दारै साथै मिलायनै लिखणा—

उदा०—रामनै पोथीमें बरसूं मिनखरो।

२६ सयुक्त क्रियारा दोनूं अशानै न्यारा-न्यारा लिखणा—

उदा०—ले जावणो, जाया करणो, कर देणो, आयो चावै, देख लेसी, कर नाखैला, जीमता जासी, लियां फिरतो हो, आवै है, करतो हो, पढतो हुवैला, देखतो हुवै, उठियो हो, जावां हा।

२७ समासरा शब्दांनै मिलायनै लिखणा अथवा बीचमें योजकचिह्न (–) लिखणो—

उदा०—सीताराम, गुणदोष, राजपुत्र, चंद्रशेखर, आवजाव, सीता-राम, गुण-दोष, हिम-गिरि, आवणो-जावणो, आवै-जावै, अठै-उठै, दरसण-परसण।

२८ अव्यय शब्द दोय मात्रा देयनै लिखणा—

उदा०—आगै लारै पछै साथै सागै वास्तै नीचै सटै खनै चौड़ै जुमलै पाखै नेड़ै वगै।

४ लिपि

३३ अ ल ण मराठीरा लिखणा, हिंदीरा नहीं लिखणा —

३४ अ झ ल हिंदीरा लिखणा, मराठीरा नहीं लिखणा—

३५ ह श्रुति दरसावणी हुवै तो लोपक चिह्न (') वापरणो —

उदा०—ना'र, सा'य, का'णी।

३६ तद्भव शब्दांमें अै औ रो संस्कृत जिसो उच्चारण हुवै जद अइ-अउ लिखणा—

उदा०—गइया, कनइयो, भइयो—इयांनै गैया कनैयो भैयो नहीं लिखणा।

३७ अै-औ रो देशी उच्चारण हुवै जद अै-औ लिखणा—

उदा०—घैन, रैवैला, औरं।

३८ अै-रो देशी उच्चारण हुवै जद उणनै अ-सू नहीं दरसावणो—

उदा०—कैवै है इणनै कव् ह नहीं लिखणो।

३९ र्+य न पूर्व आखर पर जोर पड़ै जद र्य लिखणो, और जोर नहीं पड़ै जद र्‍य लिखणो—

उदा०—चर्य वर्य कार्य भार्या

चर्‍यो वर्‍यो वकार्‍यो भार्‍यो।

४० अनुस्वारनै वडी मींडीसू और अनुनासिकनै छोटी मींडीसू दरसावणो—

उदा०—हंस (पक्षी) दांत (दमन कर्‍योडो)

हंसणो दांत

४१ तद्भव शब्दामें अनुस्वाररी जागा पंचम अक्षर नहीं लिखणो—

उदा०—डंडो, चंचळ, चंगो, फंदो, संको, तंग, पंखो इणांनै डण्डो, चञ्चळ, चङ्गो, फन्दो, सङ्को, तङ्ग, पङ्खो नहीं लिखणा।

५ विदेशी शब्द

४२ अरबी, पारसी आम की वगैरे विदेशी भासांतले शब्द तद्भव रूपांत स्वीकार करचे

उदा०—कागद, मालक जमी मालम, दसकत मशीन मजूर, सीसी, साबण, अगस्त, सितंबर, बँक, करंट, रपट, रपोट दुरबीण, काफ्टेप, कुनैन टिगर छाट गिलास।

४३ विदेशी भासावारां शब्द वापरतां उण भासांतले विशिष्ट उच्चारण दाखवंक चिह्न नहीं वापरचीं—

उदा०—				
अगस्त	लिखचें	ऑगस्ट	नहीं	लिखचें
कालेज	लिखचें	कॉलिज्	नहीं	„
नजर	लिखचें	नज़र	„	„
दफ्तर		दफ़्तर	„	„
मुगल	„	मुग़ल	„	„
खबर	„	ख़बर	„	
फरक	„	फ़र्क	„	„
मालम	„	मअ्लूम	„	„
हुकम	„	हुक्म	[illegible]	

अपभ्रंश भाषाके संधि-काव्य और उनकी परम्परा

[अगरचंद नाहटा]

(१) प्रारंभिक कथन

अपभ्रंश भाषा उत्तर-भारतकी बहुत-सी प्रमुख भाषाओंकी जननी है अत. उन भाषाओंके समुचित अध्ययनके लिअे अपभ्रंशके सांगोपांग अध्ययनकी अत्यन्त आवश्यकता है। हर्षकी बात है कि कुछ वर्षोंसे विद्वानोंका ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ है और अपभ्रंश-साहित्यके अन्वेषण, अध्ययन अेवं प्रकाशन-का कार्य दिनोंदिन आगे बढ़ता जा रहा है। प्रोफेसर हीरालालजी जैनका अपभ्रंश भाषाका बहुत अच्छा अध्ययन है। इसी प्रकार पं० परमानन्दजीके अन्वेषणसे अनेक नवीन तथा अज्ञात अपभ्रंश ग्रन्थोंका पता लगा है। बहुत दिनों-से मेरी इच्छा थी कि अपभ्रंश साहित्य पर पूर्ण प्रकाश डालनेवाला इतिहास-ग्रंथ तय्यार किया जाय। दो-तीन वर्ष हुअे मैंने उक्त दोनों विद्वानोंको पत्र लिखकर अपभ्रंश साहित्यका इतिहास लिखनेका अनुरोध भी किया था। उत्तरमें प्रोफेसर साहबने सूचित किया कि उनने इस विषयमें अेक विस्तृत निबंध लिखकर नागरी-प्रचारिणी-पत्रिकामें प्रकाशनार्थ भेजा है। पं० परमानन्दजीने लिखा कि वे अेक अैसा ग्रन्थ लिखनेकी तय्यारी कर रहे हैं। अत. मैंने विचार किया कि इन दोनों अधिकारी विद्वानोंकी कृतियां प्रकाशित होने पर ही मेरा कुछ लिखना उचित होगा और मैंने अपना इस संबंधका शोध-कार्य स्थगित कर दिया। इसी बीचमें शान्ति-निकेतनमें पं० हजारीप्रसाद द्विवेदीसे भेंट होने पर उनने अपभ्रश साहित्य पर लिखनेके लिअे स्नेहानुरोध किया परन्तु अपभ्रंश साहित्य दिगंबर जैन विद्वानोका रचा हुआ ही अधिक है और मेरी ओर दिगंबर साहित्यकी कमी है अत. इस कार्यको हाथमें लेना उचित प्रतीत नहीं हुआ।

अभी कुछ दिन पुर्व नागरी-प्रचारिणी-पत्रिकामें प्रकाशित प्रोफेसर हीरालालजी का निबन्ध दृष्टिगत हुआ और विश्वभारती आदि पत्रिकाओंमें श्रीयुत रामसिंह

शोधकके लेख भी पढ़नेमें आये। इनसे पुराने विचारको नवीन प्रेरणा मिली और इस विषयमें शोधका कार्य आरम्भ किया जिसके फलस्वरूप पांच-सात निबंध लिखे गये जिनको पाठकोंके सम्मुख उपस्थित करनेका श्रीगणेश इस निबंध द्वारा किया जा रहा है।

पं० परमानन्दजी इस विषयमें क्या नवीन जानकारी देते हैं यह जानना अभी शेष है अतः अभी मैं उन्हीं बातों पर प्रकाश डालूँगा जिनके सम्बन्धमें इन दोनों दिगंबर विद्वानोंकी जानकारी बहुत सीमित होगी, अर्थात् श्वेताम्बर विद्वानोंके रचे हुये साहित्य पर। यदि समय और संयोगोंने साथ दिया तो विशेष विचार भविष्यमें किया जायगा।

अपभ्रंश-साहित्यकी चर्चा करते समय श्वेताम्बर विद्वानोंकी अपभ्रंश साहित्यकी महान सेवाको भुलाया नहीं जा सकता। जिस प्रकार दिगंबर ग्रन्थकारोंने अपभ्रंशके बड़े-बड़े महाकाव्य लिखे हैं उसी प्रकार श्वेताम्बर विद्वानोंने विविध नामों और प्रकारों वाले लघु काव्य लिखनेमें कौशलका परिचय दिया है। परवर्ती श्वेतांबर साहित्यकारोंको अपभ्रंशके इस लघु-काव्य-साहित्यसे बड़ी भारी प्रेरणा मिली जिससे उनने इन विविध परंपराओंको अक्षुण्ण ही नहीं रखा किन्तु वे उन्हें विकसित करने और नये-नये अनेक रूप देनेमें समर्थ हुये। संधिकाव्यकी परंपरा भी अेक अैसी ही परंपरा है और उसीके विषयमें प्रकाश डालनेका प्रयत्न इस निबंधमें किया जा रहा है।

प्रस्तुत लेखके लिखनेकी प्रेरणा मुनि श्री जिनविजयजीके अेक पत्रसे मिली जिसमें उनने लिखा था—

मेरी अेक विद्यार्थिनी, जो Ph. D का अभ्यास कर रही है, वह कुछ अपभ्रंश आदिकी संधियों जैसे आनन्द संधि, भावना संधि, केशी-गोयम-संधि इत्यादि प्रकारके जो संधि प्रकरण हैं, उनका अेक संग्रह कर रही है और संधिके स्वरूप आदिक विषयमें शोध कर रही है। अभी उसने जिक्र किया और आपको पत्र लिखने बैठा। इससे स्फुरित हुआ कि आपके पास वैसी बहुत-सी कृतियां होंगी। अगर हों तो मुझ दें ताकि उसका अच्छा उपयोग होगा। चंदनदास-संधि मुयाहु-संधि आदि अैसे अनेक प्रकरण हैं। पाटण भंडारमें कुछ मलिय हैं। उनको भी यथावकाश प्राप्त करनेका प्रयत्न करूंगा। पर इससे पहले आपके पाससे ज्यादा सुगमताके साथ मिल सकेंगी अैसी आशासे आपको लिख रहा हूं।

मुनिजीका अनुमान सही निकला। अपने संग्रहकी सूचीको ध्यानसे देखने पर उसमें बहुत बडी संख्यामें संधि-काव्य प्राप्त हुअे। अपभ्रंशके संधि-काव्योंके साथ-साथ अठारह-बीस परवर्त्ती संधिकाव्य भाषाके भी उपलब्ध हुअे। इनके अतिरिक्त बीकानेरके बृहद् ज्ञानभंडार आदि अन्यान्य संग्रहोंमें भी संधिकाव्योंकी अनेक प्रतियाँ विद्यमान हैं जिनमेंसे कई अेक नवीन भी हैं।

(२) संधि नामका अर्थ

अपभ्रंशमें संधि शब्द संस्कृतके सर्ग या अध्यायके अर्थमें आता है। आचार्य हेमचन्द्र लिखते हैं—

पद्यं प्राय संस्कृत-प्राकृताऽपभ्रंश-ग्राम्य-भाषा-निबद्ध-भिन्नान्त्यवृत्त-सर्गाऽऽश्वास-संध्यवस्कंधक-बंधं सत्संधि शब्दार्थ-वैचित्र्योपेतं महाकाव्यम्।

इससे जान पडता है कि संस्कृतके महाकाव्य सर्गोंमें, प्राकृतके महाकाव्य आश्वासोंमें, अपभ्रंशके महाकाव्य संधियोंमें, और ग्राम्यभाषाके महाकाव्य अवस्कधोंमें विभक्त होते थे। परवर्त्ती कवियोंने अेक संधिवाले खंडकाव्योंको संधिकाव्य नाम दिया।

महाकाव्यका प्रत्येक संधि अनेक कडवकोंमें विभक्त होता था। इन संधिकाव्यों-मेंसे कई कडवकोंमें विभक्त हैं, कई नहीं हैं।

(३) अपभ्रंशके संधि-काव्य

हमारी शोधसे अभी तक नीचे लिखे अपभ्रंशके संधिकाव्योंका पता चला है—

(१) अनाथि-संधि

कर्त्ता—जिनप्रभ सूरि

समय—संवत १२९७ के लगभग।

कथावस्तुके लिअे उत्तराध्ययन सूत्र देखना चाहिअे।

आदि—जस्स ज्जवि माहप्पा परमप्पा पाणिणो लहु हुंति
त तित्थ सुपसत्थं जयइ जअे वीर-जिण-पहुणो

विसअेहिं विनडिउ कसाय-जगडिउ हा अणाहु तिहुयण भमइ
जो अप्प जाणइ सम-सुहु माणइ अप्पारामि सु अभिरमइ

रायगिहि नयरि सेणीय राय गुरुमत्ति निवेसिय वीयराय
सो भन्न दिवसि कयाणि पय मुणि पिक्खवि पणमइ नमिय-मणु
अंत— चाउ गइ-सरणु गमणो दाणाइ सु धम्म पय पाईव
सीलंग-रहारूढो जिणपह पहिओ सया सुहिओ
अणाभिया-संधि ॥ कडव ॥२॥

(२) जीवानुशास्ति संधि

कर्त्ता—जिनप्रभ

आदि—जस्स महाणज्झवि तव सिरि-समणकिया जिया हुंति
सो णिच्चं पि अणाभो संघो भट्टारगो जयइ ॥१॥
मोहारिहिं अगहिय विसयहिं विमहिय
विक्ख-दुक्ख-खडिय सहियइं चिर।
संसार विरत्तइं पसमिय चित्तइं
सत्तइं देमि कुसट्ठि थिर ॥२॥

अंत—इय विविह-पयारिहिं विहि-अणुसारिहिं
मारिहिं जिणपहु मणुसरहु
सुत्तेण य पयरिहिं आणासु करिहिं
मवियण भव-सायरु तरहु ॥३१८॥
जीवानुशास्ति-संधिः समाप्तः

(३) मयणरेहा-संधि

विस्तार—कडवक ६

कर्त्ता—जिनप्रभ

समय—संवत १२९७, आश्विन शुक्ला ६

आदि—मिरुवम-नाण मिहाणो पसम-पहाणो विवेय-सन्निहाणो
दुग्गइ-वार पिहाणो जिण-धम्मो जयइ सुह-कामो ॥१॥
सुमरिवि जिण-सासणु सुह सिहि सासणु
सिरि-नमि महरिसि मणि चरिउ
पमणिसु संखेविहिं मयणरेह-महा-सइ-चरिउ ॥२॥

अंत—अेसा महा-सईअे संधी सधीव संजम-निवस्स
जं नमि-निवरिसणा सह ससक्करा खीर संजोगो ॥२॥
बारह-सत्ताणवअे वरिसे आसोअ-सुद्ध-छट्ठिअे
सिरि-संघ-पत्थणाअे अेयं लिहियं सुआभिहियं ॥३॥

मयणरेहा-संधि समाप्तः ॥

४ वज्रस्वामि-संधि

कर्त्ता—वरदत्त (?)

आदि—अह जण निसुणिज्जउ कन्नु धरिज्जउ
वयरसामि-मुणियर-चरिउ

अंत—मुणिवर वरदत्ति जाणहर भत्ति वयरसामि—गणहर—चरिउ।
साहिज्जहु भावि मुच्चहु पावि जि तिहुयणु निय-गुण-भरिउ ॥६६॥
चरिउ सुसारउं भविय पियारउं वइरसामि-गणहर—चरिउ।
जो पढइ कियायरु गुण-रयणायरु सो लहु पावइ परम पउ।

वइरसामि-संधिः समाप्त. ॥

(५) अंतरंग-सन्धि

कर्त्ता—रत्नप्रभ

आदि—

पणमवि दुह-खंडण दुरिय-विहंडण जगमंडण जिण सिद्धिठिय
मुणि-कन्न-रसायणु गुण-गण-भायणु अंतरंग मुणि संधि जिय ॥१॥
इह अत्थि गामु भव-वास णामु बहु-जीव-ठामु विसयाभिरामु
दीसंति जत्थ अणदिट्ठ छेह बहु-रोग-सोग-दुहु जोग-गेह ॥२॥

अंत—अहि अंतह कारणु विस-उत्तारणु जं गुलिमंतह पढणु जिम
कय-सिव-सुह-संधिहि अेह सुसंधिहि चिंतणु जाणु भविय। तिम ॥१८॥

इति अंतरंग-संधि समाप्त। इति नवमोधिकार ॥

(६) नर्मदासुंदरी-सन्धि

कर्त्ता—जिनप्रभ-शिष्य

समय—संवत १३२८

आदि—

अज्ज वि जस्स पहावो वियलिय-पावो य ऊखलिय-पयावो
तं वद्धमाण—तित्थ नंदउ भव—जलहि—बोहित्थ ॥१॥

पणमवि पणइ वइ वीर जिणवइ चरण कमलु सिवफलिह कुसु
सिरि-नमयासु वरि-गुण-कल-सुरसरि किंपि थुणिवि किउ कम फलु ॥२॥
सिरि-वद्धमाण पुर अत्थि मयह तहिं संपइ नरवइ धम्म-पवर
तहिं वसइ सु-सावगु वसहसेणु अणुदिणु जसु मणि जिणनाह वयणु ॥३॥
तस्सअंग-वीरमइ-कुक्खि-जाय दो पवर पुत्त वइ इस पूय।
सहदेव वीरदासाभिहाण रिसिदत्त पुत्ति गुण-गण पहाण ॥४॥

अंत—तेरस-सय अडवीसे-वरिसे सिरि जिणपहूप्पसाएण
एसा संधी विहिया जिणिंद वयणाणुसारेणं ॥७१॥

श्रीनर्मदासुंदरी-महासती-संधि समाप्ता ॥

---

(७) अवंति-सुकमाल-सन्धि

---

(८) स्थूलिभद्र-सन्धि

विस्तार—कडव २, गाथा ११+८

आदि—मइ विहार पायारइ सोहिउ
घर मंदिर पवर पुर अमरनाहु चिक्खवि मोहिउ
इय अरिसु पाडलिय पुरु जंबूदीव विक्खाउ
करइ रज्जु जिय-सत्तु तहिं नंदु महाबलु राउ ॥१॥

अंत—कावि पिय-वणु तविय सोसइ दुवि अंगं घण निवसणे
पिय कोवि फिर सवालू भवराइ साविं तुय आसंकणे
जा वेस धरि चउ-मासि निवसइ सरस भोयण सिवउ
तसु थूलभद्द रम (?) पायमे नमउं जिणि मयण हुई जिवउ

विशेष—ऊपर उल्लिखित समस्त रचनाओं पाटणके जैन-भंडारोंमें हैं। इसका विवरण बड़ोदाकी गायकवाड़-ओरियंटल-सीरिजमें प्रकाशित पाटण-भंडारोंकी सूचीपत्रमें दिया गया है। ऊपर जो उद्धरण दिये गये हैं वे भी वहींस लिये गये हैं। इस सूचीपत्रमें पृष्ठ १८ पर अनाथि संधि और शीलासुरासित संधि नामक दो और संधियोंके उल्लेख हैं परन्तु इनके साथ उद्धरण नहीं होनेसे यह नहीं बताया जा सकता कि वे नं० १ और २ से भिन्न हैं या अभिन्न।

(९) भावना-संधि

विस्तार—कडवक ६, गाथा ६२

कर्त्ता—जयदेव, शिवदेव-सूरि-शिष्य

आदि-पणमवि गुण-सायर भुवण-दिवायर जिण चउवीस वि इक्कमणि

अप्पं पडिबोहइ मोह निरोहइ कोइ भव्व भावय वखिणु ॥१॥

रे जीव निसुणउ चंचल सहाव मिल्हेविणु सयल विवायभावु

नवमेय परिग्गह विहव जालु संसारि इत्थ सहु इंदियालु ॥२॥

अंत—निम्मलगुण भूरिहिं सिवदेवसूरिहिं पढम सीसु जयदेव मुणि

किय भावण-संधी भावु सुबंधी णिसुणहु अन्नवि धरउ मणि ॥६२॥

इति श्रीभावना-संधी समाप्ता

प्राप्तिस्थान—हमारे संग्रहमें सं० १४९३ में लिखित गुटकेमें।

विशेष—यह संधि जैनयुग, वर्ष ४, के पृष्ठ ३१४ पर प्रकाशित भी हो चुकी है। उसी पत्रिकाके पृष्ठ ४६९ पर इसके संबंधमें श्रीयुत मधुसूदन मोदीका अेक लेख भी प्रकाशित हुआ है।

(१०) शील-संधि

विस्तार—गाथा ३४

कर्त्ता—जयशिखर-सूरि-शिष्य

आदि—सिरि-नेमि-जिणंदह पणय-सुरिंदह पय-पंकय समरेवि मणि

वम्मह-उरि-कीलह कय-सुह सीलह सीलह संथव करिस हउं ॥१॥

अंत—इय सीलह संधी अइय सुबंधी जयसेहर-सूरि-सीस कय

भवियह निसुणेविणु हियइ धरेविणु सील-धम्मि उज्जम करहो ॥२॥

इति सील-संधि समाप्तः ॥

प्राप्ति-स्थान—हमारे संग्रहमें उक्त सं० १४९३ में लिखित गुटकेमें।

(११) तप-संधि

कर्त्ता—सोमसुंदर-सूरि-शिष्य-राजराज-सूरि-शिष्य

अंत-सिरि-सोमसुंदर-गुरु-पुरंदर-पाय-पंकय-हंसओ।

सिरि-विसाल-राया-सूरि-राया-चंदगच्छवंसओ

रायगिहि नयरि सेणीउ राउ गुरुभत्ति निवेसिय वीयराउ
सो अन्न दिवसि छज्जाणि पत्त मुणि पिक्खवि पणमइ नमिय-गत्तु
अंत— चाउ चउ-सरणु गमणो दाणाइ सु धम्म पत्त पाहेउ
सीलंग-रहारूढो जिणपइ पहिओ सया सुहिओ
अणाथिया-संधि ॥ कडव ।२।।

(२) जीवानुशास्ति संधि

कर्त्ता—जिनप्रभ

आदि—जस्स पहावज्जवि तव सिरि-समलंकिया जिया हुंति
सो णिच्चं पि अणग्घो संघो भट्टारगो जयइ ॥१॥
मोहारिहिं जगडिय विसयहिं विनडिय
विक्ख-दुक्ख-जडिय लडियइं चिउ।
संसार विरत्तइं पसमिय चित्तइं
सत्तइं देमि सुसहि मिउ ॥२॥
अंत—इय विविह-पयारिहिं विहि-अणुसारिहिं
भाविहिं जिणपहु मणुसरहु
सुत्तेण य पवरिहिं आणाहु वरिहिं
भविअण भव सायरु तरहु ॥३१८॥
जीवानुशास्ति-संधि समाप्त

(३) मयणरेहा-संधि

विस्तार—कडवक ६

कर्त्ता—जिनप्रभ

समय—संवत १२९७, आश्विन शुक्ल ६

आदि—निरुवम-माण निहाणो पसम-पहाणो विवेय-समिहाणो
दुग्गइ-वार पिहाणो जिण-धम्मो जयइ सुह-कामो ॥१॥
सुमरिवि जिण-सासणु सुह निहि-सासणु
सिरि-नमि-महरिसि मणि धरिव
पभणिसु संखेविहिं मयणरेह-महा-सइ चरिव ॥२॥

अंत—अेसा महा-सईअे संधी सधीव सजम-निवस्स
जं नमि-निवरिसणा सह ससक्करा खीर सजोगो ॥२॥
वारह-सत्ताणउअे वरिसे आसोअ-सुद्ध-छट्ठिअे
सिरि-संघ-पत्थणाअे अेयं लिहियं सुआभिहियं ॥३॥

मयणरेहा-संधि समाप्त ॥

४ वज्रस्वामि-सधि

कर्त्ता—वरदत्त (?)

आदि—अह जण निसुणिज्जउ कन्नु धरिज्जउ
वयरसामि-मुणियर-चरिउ

अत—मुणिवर वरदत्ति जाणहर भत्ति वयरसामि—गणहर—चरिउ।
साहिज्जहु भावि मुच्चहु पावि जि तिहयणु निय-गुण-भरिउ ॥६६॥
चरिउ सुसारउं भविय पियारउं वइरसामि-गणहर—चरिउ।
जो पढइ कियायरु गुण-रयणारु सो लहु पावइ परम पउ।

वइरसामि-सधिः समाप्त ॥

(५) अंतरंग-सन्धि

कर्त्ता—रत्नप्रभ

आदि—
पणमवि दुह-खंडण दुरिय-विहंडण जगमंडण जिण सिद्धिठिय
मुणि-कन्न-रसायणु गुण-गण-भायणु अंतरंग मुणि संधि जिय ॥१॥
इह अत्थि गामु भव-वास णामु बहु-जीव-ठामु विसयाभिरामु
दीसंति जत्थ अणदिट्ठ छेह बहु-रोग-सोग-दुहु जोग-गेह ॥२॥

अंत—अहि अंतह कारणु विस-उत्तारणु जं गुलिमंतह पढणु जिम
कय-सिव-सुह-संधिहि अेह सुसंधिहि चितणु जाणु भविय। तिम ॥१८॥

इति अंतरंग-संधि समाप्त। इति नवमोधिकार ॥

(६) नर्मदासुंदरी-सन्धि

कर्त्ता—जिनप्रभ-शिष्य

समय—संवत १३२८

आदि—
अज्ज वि जस्स पहावो त्रियलिय-पावो य ऊखलिय-पयावो
तं वद्धमाण—तित्थं नदउ भव—जलहि—वोहित्थ ॥१॥

पणमवि पणइ वह वीर जिणवइ चरण कमलु सिवसुक्खि कुसु
सिरि-समणाहु हरि-गुण कउ-गुरसरि किंपि जुणिवि जिउ कम-कछु ॥१
सिरि-चट्टमाणु पुर अत्थि मयउ तहिं संघइ नरवइ धम्म-पवरु
तहिं वसइ मु-सावगु वसइसेणु अणुदिणु वसु मणि जिणनाह वयणु ॥३
तम्मज्झ-वीरमइ-कुक्खि-जाव जो पवर पुत्त वह इह मूल ।
सहदेव वीरदासाभिहाण रिसिदत्त पुत्ति गुण-गण पहाण ॥४

अंत—तेरस-सय अट्ठवीसे-वरिसे सिरि जिणपहूप्पसाएण
एसा संधी विहिया लिहिय-वयणानुसारेणं ॥७१॥
श्रीनर्मदासुंदरी-महासती-संधि समाप्ता ॥

---

(७) अनंदि-सुकमाल-सन्धि

---

(८) स्थूलिभद्र-सन्धि

विस्तार—कडव २, गाथा ११+८
आदि—मह विहार पाधारह सोहिय
वर मंदिर पवर पुर अमरनाह पिक्खवि मोहिय
इय भेरिसु पाडलिय पुर जंबूदीव विक्खाउ
करइ रज्जु जिय-सत्तु तहिं नंदु महापहु राउ ॥१॥

अंत—कोवि पिय-वयणु तविय सोसइ कुवि अरंम वज निवसमे
पिय कोवि किर सवाछ भक्खइ सोवि तुप आसंकमे
जा वेस धरि चउ-मासि निवसइ सरस भोयण सिवउ
वहु थूलभद्द इय (६) पायमो नमई जिणि मयण हुउं जियउ

विशेष—ऊपर उल्लिखित समस्त रचनाओं पाटणके जैन-भंडारोंमें हैं। इन विवरण बड़ौदाके गायकवाड़-ओरियंटल-सीरिजमें प्रकाशित पाटण-भंडारोंके सूचीपत्रमें दिया गया है। ऊपर जो उद्धरण दिये गये हैं वे भी वहींसे लिये गये हैं। सूचीपत्रमें पृष्ठ ६८ पर अनाथि संधि और जीवानुशास्ति संधि नामक दो संधियोंके उल्लेख हैं, परन्तु उनके साथ उद्धरण नहीं होनेसे यह नहीं बताया सकता कि वे नं० १ और २ से भिन्न हैं या अभिन्न।

(९) भावना-संधि

विस्तार—कडवक ६, गाथा ६२

कर्त्ता—जयदेव, शिवदेव-सूरि-शिष्य

आदि-पणमवि गुण-सायर भुवण-दिवायर जिण चउवीस वि इक्कमणि

अप्पं पडिबोहइ मोह निरोहइ कोइ भव्व भावय वसिणु ॥१॥

रे जीव निसुणउ चंचल सहाव मिलहेविणु सयल विवायभावु

नवमेय परिग्गह विहव जालु संसारि इत्थ सहु इंदियालु ॥२॥

अंत—निम्मलगुण भूरिहिं सिवदेवसूरिहिं पढम सीसु जयदेव मुणि

किय भावण-संधी भावु सुबंधी णिसुणहु अन्नवि धरउ मणि ॥६२॥

इति श्रीभावना-संधी समाप्ता

प्राप्तिस्थान—हमारे संग्रहमें सं० १४९३ में लिखित गुटकेमें।

विशेष—यह संधि जैनयुग, वर्ष ४, के पृष्ठ ३१४ पर प्रकाशित भी हो चुकी है। उसी पत्रिकाके पृष्ठ ४६९ पर इसके सबंधमें श्रीयुत मधुसूदन मोदीका अेक लेख भी प्रकाशित हुआ है।

(१०) शील-संधि

विस्तार—गाथा ३४

कर्त्ता—जयशिखर-सूरि-शिष्य

आदि—सिरि-नेमि-जिणंदह पणय-सुरिंदह पय-पंकय समरेवि मणि

वम्मह-ठरि-कीलह कय-सुह सीलह सीलह संथव करिस हउं ॥१॥

अंत—इय सीलह संधी अइय सुबंधी जयसेहर-सूरि-सीस कय

भवियह निसुणेविणु हियइ धरेविणु सील-धम्मि उज्जम करहो ॥२॥

इति सील-संधि समाप्तः ॥

प्राप्ति-स्थान—हमारे संग्रहमें उक्त सं० १४९३ में लिखित गुटकेमें।

(११) तप-संधि

कर्त्ता—सोमसुंदर-सूरि-शिष्य-राजराज-सूरि-शिष्य

अंत-सिरि-सोमसुंदर-गुरु-पुरंदर-पाय-पंकय-हसओ।

सिरि-विसाल-राया-सूरि-राया-चदगच्छवंसओ

पय ममीय सोसइ तासु सीसइ भेस संधी विमिम्मिमजा
सिव सुक्ख कारण सुह निवारण तव सवमेसिइ वम्मिजा

लेखनकाल—सं० १५०६
प्राप्ति-स्थान—पाटणका भंडार

(१२) चपदेरा-संधि

विस्तार—गाथा १४
कर्त्ता—हेमसार
अंत—सवमेस संधि निरमल संधि हेमसार इम रिसि करमे
जो पढइ पढावइ सुह मणि भावइ बसुई सिद्धि बुद्धि क्रमे

(१३) चवरंग-संधि

विस्तार—कडवक ५
विषय—चार शरणोंका वर्णन

विशेष विवरण—पिछली तीन कृतियोंका उल्लेख जैन गुर्जर कविओ भाग १,
में पृष्ठ ५६ और ८३ पर हुआ है। नंबर ११ और १२ की
भाषा अपेक्षाकृत अर्वाचीन है।

(४) अपभ्रंशोत्तर राजस्थानी आदि भाषाओंके संधिकाव्य

अपभ्रंशकी संधिकाव्योंकी परंपराको भाषा-कवियोंने चालु रखी। हमारी शोधमें कोई ४० ऐसी रचनाओंका पता लगा है जिनकी नामावली आगे दी जाती है। ये चौदहवींसे लेकर उन्नीसवीं शताब्दी तककी हैं।

चौदहवीं शताब्दी

१ आनंद-संधि	गाथा ७६	विनयचंद्र	..	हमारे संग्रहमें
२ श्री गौतम संधि	गाथा ७०		..	„

सोलहवीं शताब्दी

३ मृगापुत्र संधि	..	कल्याणतिलक	१५५० सग०	हमारे संग्रहमें
४ मंदन मणिहार संधि		चारुचंद्र	१५८७	„

५ उदाइ राजर्षि संधि	...	संयममूर्ति	१५९० लग०	जैन गुर्जर कविओ
६ गजसुकमाल संधि	गाथा ७०	"	१५९०	"
७ "	...	मूलप्रभ	१५५३	"
८ धना-संधि	गाथा ६५	कल्याणतिलक	१५६० लग०	हमारे संग्रहमें

सत्रहवीं शताब्दी

९ सुखदुख विपाक संधि	.	धर्ममेरु	१६०४	जयपुर भंडार
१० सुबाहु-संधि		पुण्यसागर	१६०४	हमारे संग्रहमें
११ चित्रसंभूति संधि	गाथा १०९	गुणप्रभसूरि	१६(०)८	आश्विन वदि ९ गुरु जेसलमेरमें रचित
१२ अर्जुन-माली संधि	..	नयरंग	१६२१	जेसलमेर भंडार
१३ जिनपालित-जिनरक्षित संधि	..	कुशललाभ	१६२१	वृहद् ज्ञानभंडार
१४ हरिकेशी संधि	...	कनकसोम	१६४०	"
१५ समति संधि	गाथा १०६	गुणराज	१६३०	हमारे संग्रहमें
१६ गजसुकमाल संधि	गाथा ३४	मूळावाचक	१६२४	जैन गुर्जर कविओ
१७ चउसरण प्रकीर्णक संधि	गाथा ६१	चारित्रसिंह	१६३१	जेसलमेर भंडार
१८ भावना संधि	...	जयसोम	१६४६	हमारे संग्रहमें
१९ अनाथी संधि	...	विमल विनय	१६४७	"
२० कयवन्ना संधि	...	गुणविनय	१६५१	वृहद् ज्ञानभंडार
२१ नंदिषेण संधि	...	दानविनय	१६६५	हमारे संग्रहमें
२२ मृगपुत्र संधि	...	सुमतिकल्लोल	१६६३	वृहद् ज्ञानभंडार
२३ आनंद संधि	...	श्रीसार	१६८४	जेसलमेर भंडार
२४ केशी गोयम संधि	...	नयरंग	१७वीं शताब्दी	हमारे संग्रहमें
२५ नमि संधि	गाथा ६९	विनय (समुद्र)	"	वृहद् ज्ञानभंडार
२६ महाशतक संधि	..	धर्मप्रबोध	"	हमारे संग्रहमें

अठारहवीं शताब्दी

२७ पुंडरीक पुंडरीक संधि	...	राजसार	१७०३	जेसलमेर भंडार

२८ अर्यंती स चि	..	अमयसोम	१७२१ माह	हमारे स ग्रहमें
२९ भद्रनद सं चि	..	रामलाभ	१७२१	श्रीपूज्यजीका संग्रह
३० प्रदेशी स चि	..	कनकविलास	१७२५	हमारे संग्रहमें
३१ हरिकेशी सं चि		सुमतिरंग	१७२७	
३२ चित्रसंभूतिसं चि	गाथा ३९	नयप्रमोद	१७२९	बृहद् ज्ञानभंडार
३३ चित्रस मूति स चि	गाथा १०९	गुणप्रमसूरि	१७२९	जेसलमेर भंडार
३४ इषुकार सं चि	—	खेमो	१७४५	हमारे संग्रहमें
३५ अनाथी स चि		..	..	..
३६ थावच्चास चि		मोहेब	१७४९	बृहद् ज्ञानभंडार
३७ भरत सं चि		वै पद्मचंद्र	१८ वी शताब्दी	जेसलमेर भंडार
३८ मृगापुत्रसं चि		जिनहर्ष	..	
		उन्नीसवीं शताब्दी		
३९ प्रदेशी स चि		खेमा	१८१७	हमारे स ग्रहमें
		अज्ञात काल		
४० चन्दनबाला स चि				(जिनविजयजीके
४१ जिनपालित				पत्रमें उल्लेख)
जिनरक्षित स चि		मुनिघोष		बृहद् ज्ञानभंडार
४२ सुबाहु स चि		मेघराज		कोचरों भंडार

प्राचीन राजस्थानी साहित्य

१—चारणी गीत

राजस्थानी साहित्यमें गीत-साहित्यका अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। वास्तविक डिंगल साहित्य इस गीत-साहित्यको ही समझना चाहिये। डिंगलका पूर्ण ज्ञान इन गीतोंके अध्ययनके बिना असम्भव है।

गीत-साहित्य राजस्थानी भाषाकी अपनी विशेषता है। हिन्दी पंजाबी सिंधी गुजराती आदि पड़ोसी भाषाओंमें इसका नितान्त अभाव है।

गीत-साहित्य प्रधानतया वीर-रसात्मक और ऐतिहासिक विषयोंसे सम्बन्ध रखनेवाला है, यद्यपि वैसे सभी विषयों पर अच्छे-से-अच्छे गीत लिखे गये हैं। अधिकांश गीत चारणोंकी कृतियां हैं पर अन्यान्य लोगोंके लिखे हुए गीत भी बहुत मिलते हैं।

गीतोंकी संख्या हजारों है। राजस्थानमें कदाचित ही कोई ऐसा वीर हुआ होगा जिसकी वीरतापर एक-आध गीत न बना हो। हजारों वीरोंकी स्मृतिको इन गीतोंने जीवित रखा है जिनको इतिहासने भी भुला दिया है।

गीत-साहित्यमें सबसे महत्वपूर्ण वीर-गीत हैं। ये वीर-रसकी उमड़ती हुई धाराएं हैं। महाराणा प्रताप दुर्गादास अमरसिंह राठौड़ आदिके गीत रसात्मक साहित्यकी अमूल्य निधि हैं।

ध्यान रखना चाहिये कि ये गीत यद्यपि गीत कहे जाते हैं गाये नहीं जाते थे। ये गानेकी चीजें नहीं हैं। बाहरी लोग गीत नाम देखकर इन्हें गानेकी चीज समझ लेते हैं और इनके रचयिताओंको साधारण गायक कह देते हैं। चारण लोग गायक कहे जानेको अपना अपमान समझते हैं। गीत राजस्थानी छंद-शास्त्रकी एक पारिभाषिक संज्ञा है।

ये गीत एक विशेष ढंगसे पढ़े जाते थे रिसाइट recite किये जाते थे। पढ़नेकी यह शैली बड़ी भव्य और प्रभावशाली होती थी। उस शैलीमें पढ़े जाते हुए गीतोंसे वीर लोग हंसते-हंसते प्राण न्यौछावर कर देते थे। ऐसी भव्य शैलीमें पढ़नेवाले चारण आज भी कहीं-कहीं मिल जाते हैं। वे विरल हैं पर उनका नितान्त अभाव नहीं।

इन गीतोंकी एक विशेषता विशेष रूपसे उल्लेखनीय है। वह यह कि एक गीतके सभी दोहलोंमें प्रायः वही भाव बारबार कहा जाता है अर्थात प्रथम दोहलेमें जिस भावका

कथन होगा उसी भावका कथन बाकीके दोहलोंमें भी भग्यन्तरसे किया जायगा। कवि साधारण हुआ तो आगेके दोहलोंमें शब्दान्तर paraphrase सा करता जायगा और यदि प्रतिभाशाली हुआ तो भावको अैसे अनोखे ढगसे, वक्रताके साथ, दुहरायगा कि पुनरावृत्ति प्रतीत नहीं होगी।

गीतको आप अेक कविता समझ लीजिये। जैसे अेक कवितामें अनेक पद्य होते हैं वैसे ही अेक गीतमें कई दोहले होते हैं। अधिकाश गीतोंमें चार दोहले पाये जाते हैं पर कम या वेशी भी हो सकते हैं। हा, तीनसे कम दोहले किसी गीतमें नहीं होते।

दोहलेमें प्राय चार चरण होते हैं। अेक गीतके सब दोहले समान होते हैं पर कुछ गीतोंमें प्रथम दोहलेके प्रथम चरणमें दो या तीन मात्राअें या वर्ण अधिक होते हैं जो मानो गीतका आरभ सूचित करते हैं।

आगे कुछ वीर-गीत दिये जाते हैं। पहले गीतमें वीरकी प्रशसा है। आगेके पाच गीत राजस्थानके तीन प्रख्यात वीर राठौड़ अमरसिंह, राठौड़ बलू और चौहाण केसरीसिंहसे सम्बन्ध रखते हैं।

राठौड़ अमरसिंह जोधपुरके महाराजा गजसिंहका पुत्र और महाराजा जसवतसिंहका बड़ा भाई था। वह अपनी प्रचड निर्भीकता और उद्दड साहसके लिअे भारत भरमें प्रसिद्ध है। उसने बादशाह शाहजहाके भरे दरबारमें मीरमुशी सलाबतखानको कटारसे मार डाला, और अनेक योधाओंके साथ अकेला लड़ता हुआ मारा गया। उसकी प्रशसामें राजस्थानी और हिन्दीके अनेक कवियोंने काव्य-रचना की है। उसके सबधमें यह दोहा बहुत प्रसिद्ध है—

उण मुखसू गग्गो कह्यो इण कर लयी कटार
वार कहण पायो नहीं होगी जमधर पार

बलू अमरसिंहका सरदार था। अपने उद्दड स्वभावके कारण अमरसिंहने बलूको निकाल दिया। वह बादशाहके पास पहुँचा और बादशाहसे नयी जागीर प्राप्त की। जब अमरसिंह मारा गया तो अमरसिंहकी रानियोंने सती होनेके लिअे अमरसिंहका शव मागा। बलूने शव लानेका बीड़ा उठाया और शाही सेनासे जा भिड़ा।

किसनदास (कविताका नाम केहरीसिंह) साचौरा चौहान अचलसिंहका पुत्र था। साचौरा चौहान अपनी वीरताके लिअे बड़े प्रसिद्ध रहे हैं। उनके सबधमें कवियोंने जो गीत लिखे हैं वे राजस्थानीके सर्वश्रेष्ठ गीतोंमेंसे हैं।

(१)

वीर वर्णन

कहै कंथनूं सुई कुळ कमळी कामणी
भळी फौजां भिळे, आग आगै।
मामली त्रिकानूं जिके मद मोसरे,
भारथा कंथनूं गाढ लागै॥ १॥

सूरमा जिके रजपूत आसम सधे
लोह भिळते मनां सु-जस लोभा।
कनक-आभूखणां सोहमे कामणी
सूर आभूखणां घाव सोभा॥ २॥

साम-रा कामनूं धसे दळ सामुहा
कत्रियां पछाड़ण करे करमै।
साथवा थकां निज सु-जस काने सुणै
प्राण छूटां पछै सती परणै॥ ३॥

---

१ पीहर और ससुराल इन दोनों कुलोंमें उज्ज्वल (यशस्विनी) कामिनी पतिसे कहती है—वीर वे हैं जो अपने बलसे शत्रु-सेनाओंको विध्वस्त करते हैं और तलवार बजाते हैं। जो शोभा जैसे समयमें भाग निकलते हैं उनको लानत है। ऐसा करनेसे पिताके वंशको (पूर्वजोंको) कलंक लगता है। (मानतीन्=अमनत, मा लनुशा)।

२ शूर क्षत्रिय वे हैं जो मनमें सु-यशकी अभिलाषासे शत्रु उजाकर लोहा बजाते हैं। स्त्री सुवर्णके गहनोंसे शोभा देती है; शूरोंकी शोभा घावोंके गहनोंसे है।

३ उनके शूर स्वामीके कार्यके निमित्त शत्रुओंको पछाड़ने और विजय प्राप्त करनेके लिये शत्रु-सेनाके सम्मुख आगे बढ़ते हैं। जीवित रहने पर अपने कानोंसे अपना सु-यश सुनते हैं और मर जाते हैं तो पीछे सतीसे विवाह करते हैं (उनके मरने पर उनकी स्त्रियां सती होती हैं जो स्वर्गलोकमें उनसे आ मिलती हैं)।

(२)

गीत राठौड़ अमरसिंघ गजसिंघौतरो

गढपतिअे घणा किया गढ-रोहा
परगह . ले जूझिया पह।
जिग कीधौ अमरेस जडाळी
किणहि न कीधौ इम कळह॥ १॥

कोटां ओट घणा जुध कीया
फोजां घणा किया फर-फेर।
राव राठौड जिहीं सू-रौद्रा
नरपति विढियौ न-को अनेर॥ २॥

कोटां प्राण प्राण कै कटकां
सूं पहरिया दिली-पतिसाह।
अेक कटारी कियौ न अेकण
गजसिंघौत जिसौ गज-गाह॥ ३॥

दाणव बि-त्रिण पगां तळ दीधा
वणियै मरण दिखाळियौ वाढ।
वाही अेकण गंग-वंसोधर
जम-डाढां मांही जम-डाढ॥ ४॥

---

१ अनेक गढ़पतियोंने गढ़ोंका युद्ध किया, अनेक राजा सेना लेकर लड़े, पर अमरसिंहने जिस प्रकार कटारसे युद्ध किया वैसा किसीने नहीं किया।

२ दुर्गोंकी ओटमें अनेकोंने युद्ध किये। फौजें लेकर अनेकोंने लड़ाइया (?) कीं। पर राठौड़ वीर राव अमरसिंह जिस प्रकार लड़ा वैसे और कोई राजा यवनोंसे नहीं लड़ा।

३ दुर्गोंके बल पर या सेनाओंके बलपर बहुत-से राजा दिल्लीके बादशाहसे लड़े पर अेक कटारीके बलपर, और अेकेले, किसीने गजसिंहके पुत्रकी भांति घमासान युद्ध नहीं किया।

४ दो-तीन यवनोंको पैरोंके नीचे दबा लिया। मरण आ पहुँचने पर मारकाटको दिखलाया। गंगाके वंशधरने यमकी डाढोंके बीचमें अकेले कटारी चलायी।

(३)

गीत राठौड़ अमरसिंघ गजसिंघोतरो

बड़े ठौड़ राठौड़ अखियात राखी वडी
जोर वर जोध जम-दाढ अमरा ।
सलाबत दिली-पत देखतां साहियौ
जयो तिण बाररा रूप अमरा ॥ १ ॥

गजमरा केहरी सिंघ जूझार-गुर
माण तजि जगत्र सहु हुकम मानै ।
पाड़िया तैं ज पतिसाहरी पाखती
खान सुरताण दीवाण-खानै ॥ २ ॥

हाकवौ दिली-दरियाव डीखोळवौ
डूकड़े साह उमराव डारे ।
आगरे सहर हलचाळ पाड़ी अमर
मारवा राव दरबार मंहि ॥ ३ ॥

---

१ हे यमकी यम-दंष्ट्रा के समान भयंकर और जोरावर योद्धा राठौड़ वीर ! तुमने बड़े स्थानमें बड़ी कीर्तिकी रक्षा की । सलाबतखांको दिल्लीपतिके देखते देखते मार डाला । हे अमरसिंह ! तुम्हारा उस समयका रूप धन्य है !

२ हे गजसिंहके केसरी सिंहके समान वीर पुत्र ! हे योद्धाओंके गुरु ! सारा जगत मान छोड़कर तेरा हुकम मानता है । तूने ही बादशाहके दीवानखानेमें (दरबारमें) बादशाहके निकट ही उमरावोंको गिराया ।

३ हांक लगाते हुए और दिल्ली-रूपी समुद्रको हिलाते हुए अमरसिंहने बादशाहके पास उमरावोंको गिराया । मारवाड़के रावने आगरे शहरमें दरबारके अन्दर हलचल कर दी (सारे लोग दरबार छोड़कर भाग गये) ।

पगे पहरै जठै हाथसूं परहरै
लोह सम्हि न-को असमान लागै।
तो जिसौ जूझियौ न-को हिंदू-तुरक
अमर। अकबर-तणा तखत आगै॥ ४॥

(४)

गीत राठोड़ बलू गोपालदासौत चांपावतरो

बिजड ऊठियौ घूणि गिरि-मेर सो बहादर
पछै म्हे कदे अवसाण पावां?
अमरनै सुरग दिस मेलनै अेकलौ
आगरै लड़ेवा कदे आवां?॥ १॥

अम्हे तो अमर राजा तणा ऊमरा
जुड़ेवा पारकी थटी जागा।
बोलियौ बळू पतसाहरै बराबर--
मारवै रावरौ वैर मागां॥ २॥

४ जहां पैरोंमें पहनते थे वहां हाथोंमें पहनने लगे (पैरोंमें पहननेके जूते हाथोंमें लेकर दरबारके लोग भागे), हथियार लेकर कोई आसमान तक नहीं उठता (वीर-दर्पसे सिर ऊंचा करके सामने नहीं आता)। हे अमरसिंह! अकबरके सिंहासनके सामने कोई हिंदू या मुसलमान तुम्हारी तरह नहीं लड़ा।

१ वह मेरुपर्वत-सा वीर खड्गको घुमाता हुआ उठा। बोला--पीछे हम अैसा अवसर कब पावेंगे? अमरसिंहको अकेला स्वर्ग भेजकर फिर आगरेमें लड़ने कब आवेंगे?

२ हम तो राजा अमरके उमराव हैं, युद्ध करनेके लिये परायी भूमिमें (?) जागते हैं। बलू बादशाहके बराबर (रूबरू) बोला--हम तुमसे मारवाड़के राव अमरसिंहका वैर मागते हैं।

केसरिया मांह गरकाब वागा करे
सेहरौ बांध हळकार साथे।
अमररौ मतीओ तोल खग आवड़े
बळू अर आगरौ हुआ बाथे॥ ३॥

पटाने माथि भिड़ साहसूं पतापड़
काम माहकोट साथो कमायौ।
बाद कर साहसूं बेर नृप बोढ़ियौ
अमर मे मुहर करि सरग आयौ॥ ४॥

(५)

गीत राठौड़ बलू गोपालदासौतरो

बाहर काळ अंकाळ बळिराज गज केसरी
जोध जोधां सरिस जेम जूटौ।
घोकळा हूंत नाहर किना विछूटौ
नागधिआं कासिपी किना सूटौ॥ १॥

---

३ केसरिया रगमें बागेको (जामेको) सराबोर करके और ललकारके साथ सेहरा बांधकर अमरसिंहका भतीजा बलू तलवार उठाकर जोश—और जोशसे ही बलू और आगरा दोनों भिड़ गये (आगरा—बादशाहके दरबार)।

४ पट्टेकी जागीरको ठुकराकर और बादशाहसे पटापट भिड़कर राठौड़ वीरने सच्चा काम किया। बादशाहसे बराबरी करके राजा अमरसिंहके बैरको सिरपर ओढ़ा। फिर अमर को आगे करके (अमरके पीछे-पीछे) स्वर्ग आ पहुँचा।

१ प्रलय-काल तथा सिंहके समान मनकर, बलवानोंका राजा हाथियोंके लिये सिंह रूप और बल योद्धाओंके साथ इस तरह भिड़ गया मानो जंजीरोंसे सिंह छूटा हो अथवा मानो नागों पर गरुड़ झपटा हो।

दूसरौ मयंक दूहलं दळां देखतां
जोट घट छड़ाळै प्रसण जड़ियौ।
हसत दीठां समा मीह घायां हुओ
पनग-सिर किनां धव-पंख पड़ियौ ॥ २ ॥

पाळ-रा नमो हथ-वाह वाहां प्रलब
तळिछ्रि सुदर लियौ दळां अणताघ (?)।
उरड़ पड़ियौ किनां गरुड़ अहि ऊपरै
विरड छूटौ किनां गजां सिर वाघ ॥ ३ ॥

(६)

गीत चोहाण किसनदास अचलावतरो

कळि चालि लंकाळ कहै इम केहरि
विढिवा कजि ऊछजि कल्लाण।
चलियै दळै विमुहि क्यू चालू
चलियौ विमुहि न-को चहुआण ॥ १ ॥

---

२ दूसरे मयक, भालाधारी, वीर चलूने दोनों दलोंके देखते शत्रुओंपर भयकर आघात किया (?), मानो हाथियोंको देखते ही सिंह भिड़ गया हो अथवा मानो सांपोंके सिर पर गरुड़ पड़ा हो।

३ लम्बी भुजाओंवाले गोपालके पुत्र चलूके हाथ चलानेको नमस्कार है। अपार सेनाओंपर वह इस तरह टूटकर पड़ा (?) मानो उछलकर गरुड सांपों पर पड़ा हो अथवा मानो क्रोधमें भरकर सिंह हाथियों पर झपटा हो।

१ भयकर युद्धमें सिंहके समान वीर केहरी लड़नेके लिये तलवार उठाकर इस प्रकार कहता है—सेनाके पीछे मुड़ जाने पर भी मैं पीछे क्यों मुड़ू, कोई चौहान कभी युद्धमें पीछे नहीं मुड़ा।

चौरंग मुड़ै नहीं अणकळाव
म्हाडे प्रसण हिये खग-म्हीक।
मुड़िया दळ देख नह मुड़ियौ
मुड़िये दळ जुड़ियौ मझरीक ॥ २ ॥

फळहि सीह ज्यूं सीह-फळोधर
भिड़र निहसियौ बाधे नेत।
भाड़िया दळ देखे नह भाड़ियौ
भाड़िये दळ भड़ियौ रिण-खेत ॥ ३ ॥

भागा साथ न भागौ अणभंग
आप भिड़े मारिया अरि।
केहरि सरग पहूंतौ कणकण
करनहरो अखियात करि ॥ ४ ॥

---

१ अपराजेय वीर युद्धमें नहीं मुड़ता। वह खड्गके आघात कर शत्रुओंको मारता है। सेनाओंको मुड़ी हुई देखकर भी वह नहीं मुड़ा। वह क्रोधी, सेनाके मुड़ने पर, स्वयं शत्रुओंसे जा भिड़ा।

३ सीहाके समान नेत बांधकर युद्धमें सिंहकी तरह निडर होकर लड़ा। वह सेनाओंके भाग जाने पर नहीं भागा। वह सेनाओंके भागने पर रण-क्षेत्रमें लड़ा।

४ वह अपराजेय वीर भागे हुओंके साथ नहीं भागा। उसने स्वयं लड़कर शत्रुओंको मारा। कर्मसिंहका बेटा केहरी अद्भुत कीर्ति-कथा करके स्वर्गमें पहुंचा।

वात दूदै जोधावतरी

[दूदै जोधावत मेघौ नरसिघदासौत सींधल मारियौ ।]

राव जोधौ पोढियौ हुतौ । वातपोस वाता करता हुता । राजवियां-स्थां वाता करता हुता । ताहरां अेक कह्यौ—भाटियां-रौ वर न रहै । ताहरां अेक बोलियौ—राठोडां-रै वंर अेक रह्यौ । कह्यौ—किसौ ? कह्यौ—आसकरण सतावत-रौ वैर रह्यौ, नरबदजी सुपियारदे ल्याया हुता तिको वंर रह्यौ ।

ताहरां राव जोधै वात सुणी । ताहरां उवां-नू पूछियौ—थे कासूं कह्यौ ? कह्यौ—जी । क्यूही नहीं । ताहरां बोलियौ—ना, ना, कह्यौ । ताहरां कह्यौ—जी । आसकरण-रै छोरू न हुवौ, नै नरबद-रै पिण छोरू नहीं, ते वेर यूही रह्यौ । राव जोधै वात सुणि-नै मन-में राखी ।

प्रभाते दरबार बैठा छै । तितरै कुंवर दूदै आइनै मुजरौ कियौ । सू दूदै-सूं रावजी कु-मया करता । ताहरां रावजी कह्यौ—दूदा, मेघौ सींधल मारियौ जोयीजै । ताहरां दूदै सलाम की । ताहरां रावजी बोलिया—दूदा ! आसकरण सतावत-

---

कहानी जोधाके बेटे दूदे की

जोधाके बेटे दूदेने नरसिंहदासके बेटे मेघेको मारा इसकी कहानी

[अेक दिन] राव जोधा सोया हुआ था । कहानी कहनेवाले बातें कर रहे थे—रईसोंकी बातें करते थे । उस समय अेकने कहा—भाटियोंका बेर नहीं रहता । अेक बोला—राठोड़ोंका वैर नहीं रहता । तब अेक बोला—राठोड़ोंका अेक बेर बाकी रह गया । कहा—कौनसा ? कहा—सताके बेटे आसकर्णका बेर बाकी रहा, नरबदजी सुपियारदेको लाये थे वह बैर बाकी रहा ।

तब राव जोधेने बात सुनी । [उसने] उनसे पूछा—तुम लोगोंने क्या कहा ? उन लोगोंने कहा—जी ! कुछ भी नहीं । तब जोधाने कहा—नहीं, नहीं, कुछ कहा था । तब कहा—जी ! आसकर्णके बेटा नहीं हुआ और नरबदके भी बेटा नहीं, जिससे बैर यौंही रह गया । राव जोधेने बातको सुनकर मनमें रखा ।

मूं नरसंघदास सींधळ मारियौ हुवौ, नरदरजी सुपियारदे-मूं ब्याया हुवा तियै बदलै आसकरण-नै मारियौ हुवौ; नरसिंघ-रौ बेटो मेघो, तियै-मूं जाय मारि। ताहरां दूदो सलाम करि-नै चालियौ। ताहरां रावजी कह्यौ—दूदा! यूं जा मत हूं सराजाम करि देस्यूं थें आगे मेघो सींधळ छै, तें मेघो जाने नहीं सुणियो छै। ताहरां दूदो कहै—का तौ दूदो मेघे, का मेघो दूदे।

ताहरां दूदो डेरै आइनै आंप रौ साथ लेइनै चढियौ। आइनै जैतारिण-हूं कोस तीन वरे ऊतरियो। आदमी मेल्ह दियौ। आइनै मेघे-नै कह्यौ—दूदो जोधाउत आयौ आसकरण मांगे। आदमी आइ मेघे-नूं कह्यौ। मेघे कह्यौ—घोड़ा क्यूं आया? ताहरां कह्यौ—समझ पड़ी पछै दूदे पाणी आगे आय पियौ छै।

ताहरां मेघो माळियै चढियौ। कह्यौ—रे! घोड़ियां इयै तरफ मतां छोडौ, दूदो जोधाउत आयौ छै, घोड़ियां ले जासी।

सवेरे रावजी दरवारमें बैठे हैं। इतनेमें कुंवर दूदेने आकर मुजरा (प्रणाम) किया। दूदेके प्रति रावजी अहसाका बर्ताव करते थे। तब रावजीने कहा—दूदा! मेघे सिंधळको मारना चाहिये। तब दूदेने सलाम किया। रावजी बोले—दूदा! सताके बैठे आसकर्णको नरसिंहदास सिंधळने मारा था नरदरजी सुपियारदेको ब्याहे थे उसके बदलेमें आसकर्णको मारा था; नरसिंहदासका बेटा मेघा है उसको तू जाकर मार।

तब दूदा प्रणाम करके चला। तब रावजीने कहा—यों मत जा, मैं सरजाम कर दूंगा यों आगे मेघा सिंधळ है; तूने मेघको आनीसे नहीं सुना है। तब दूदा कहता है—या तो दूदा मेघेको मारेगा या मेघा दूदेको मारेगा [दोनोंमेंसे एक बात अवश्य होगी]।

तब दूदा अपने डेरे आया और अपने साथको लेकर चढ़ा। चलकर जैतारणसे तीन कोस इधर उतरा। अपना आदमी भेज दिया। उससे कहा—जाकर मेघेको कह कि जोधाका बेटा दूदा आया है आसकर्णको मांगता है।

आदमीने जाकर मेघेसे [समाचार] कहा। मेघने कहा—डेरेसे क्यों आये? तब कहा समझ पड़नेके बाद तो दूदेने पानी आगे आकर ही पिया है।

तब मेघा ऊपरके मकान पर चढ़ा। उसने कहा—अरे! घोड़िया इधर मत छोड़ो जोधाका बेटा दूदा आया है यह घोड़ियोंको ले जायगा।

ताहरां दूदौ बोलियो—रे। ओ कुण बोलै ? कह्यो—जी। मेघौ बोलै छै। कह्यौ—रे। इतरो भुई सुणीजै छै ? कह्यो—जी। मेघौ मींधल काने सुणियौ छे किनां नहीं ? म्हे घोडयां-सू काम नहीं, माल-सूं काम नहीं, म्हारै थारै माथै-सू काम छै, परत-री वेढ करिस्यां।

ताहरां बीजै दिन मेघौ साथ करिने आयौ। इयै तरफ-सू दूदौ आयौ। ताहरां मेघौ कहै—दूदाजी! थां अवसर लाधौ, रजपूत तो म्हारा सरब म्हारै बेटै-रै साथै जान गया, हू छू। ताहरां दूदौ कहै—मेघा। आपां परत-री वेढ करिस्यां, रजपूता-नू क्यू मारां ? का दूदौ मेघै, का मेघो दूदै। आपां-हीज साफळो हुसी।
ताहरा साथ दोह्या-रौ अळगौ ऊभौ रह्यौ। अेकै दिसा मेघौ आयौ, अेकै दिसा-सू दूदौ आयौ।

ताहरां दूदौ कहै—मेघा! करि घाव। मेघौ कहै—दूदौजी। करौ घाव। ताहरा दूदौ कहै—मेघाजी। थे घाव करौ।

तब दूदा बोला—अरे। यह कौन बोलता है। लोगोंने कहा—जी। मेघा बोलता है। दूदेने कहा—अरे। इतनी दूर तक सुन पड़ता है ? कहा—जी! मेघे सिधलको कानोंसे सुना है या नहीं ?

दूदेने कहा—मेघा। मुझे घोड़ियोंसे काम नहीं, धन-सपत्तिसे काम नहीं, मुझे तो तेरे सिरसे काम है, परत (?) की लड़ाई करेंगे।

तब दूसरे दिन मेघा साथको सजाकर आया। इस ओरसे दूदा आया। तब मेघा कहता है—दूदाजी! आपने अवसर पाया, मेरे सारे राजपूत तो मेरे बेटेके साथ बरातमें गये हुअे है, मै [अकेला] हूँ। तब दूदा कहता है—मेघा! अपन द्वन्द्व-युद्ध (?) करेंगे, राजपूतोंको क्यों मारें ? या तो दूदा मेघेको या मेघा दूदेको, अपन दोनोंके बीचमें ही युद्ध होगा!

तब दोनोंका साथ दूर खड़ा रहा। अेक दिशासे मेघा आया और अेक दिशासे दूदा आया। तब दूदा कहता है—मेघा! वार कर। मेघा कहता है—दूदाजी! आप वार कीजिये। तब दूदा कहता है—मेघाजी! आप वार कीजिये। तब मेघाने वार किया।

ताहरां मेघै वार कियौ। सो दूदै ढाल-सूं झालि लियौ। दूदै पाबूजी-नूं समरि नै मेघै-नूं वार कियौ। सु माथौ धड़-सूं अळगौ जाइ पड़ियौ। मेघौ काम आयौ।

ताहरां मेघै-रौ माथौ वाढि नै दूदौ ले हालियौ। ताहरां आपरां राजपूतां कह्यौ—मेघै-रौ माथौ धड़ ऊपरां मेल्हौ, वडौ रजपूत छै। ताहरां दूदै माथौ मेल्हियौ। दूद कह्यौ—कोई गाम-रौ बिगाड़ मती करौ मेघै-सूं काम हुतौ।

मेघै-नूं मारि दूदौ अपूठौ फिरियौ। आयनै राव जोधै-सूं तसलीम कीधी। राव राजी हुऔ।

जोधैजी दूदै-नूं घोड़ौ सिरपाव दियौ। बहुत राजी हुआ।

उसे दूदेने ढालसे रोक लिया। फिर दूदेने पाबूजीको स्मरण करके मेघे पर वार किया। तो सिर धड़से दूर जा गिरा। मेघा काम आया।

तब मेघेका सिर काटकर दूदा ले चला। अपने राजपूतोंने कहा—मेघेका सिर धड़के ऊपर रखो मेघा बड़ा राजपूत है। तब दूदेने सिरको धड़ पर रखा। फिर दूदेने कहा—मेघेके किसी गाँवका बिगाड़ मत करो हमारा तो केवल मेघेसे काम था।

मेघेको मारकर दूदा वापिस मुड़ा। आकर राव जोधेकी तसलीम की। राव प्रसन्न हुआ। जोधेजीने दूदेको घोड़ा और सिरोपाव दिया। बहुत प्रसन्न हुआ।

(२)

पण लिखूं कियां, जद देखै है आडावळ[9] ऊंचो हियो लियां
चितोड़ खड्यो है मगरां-में[10] विकराळ भूत-सी लियां छियां[11]
हूं झुकूं कियां? है आण मनैं कुळ-रा केसरिया बाना-री
हूं बुझूं कियां, हूं शेष लपट आजादी-रा परवानां-री[12]

पण फेर अमर-री सुण बुसक्यां[13] राणा-रो हिवड़ो भर आयो
हूं मानूं हूं, हे म्लेच्छ! तनैं सम्राट,—सनेसो[14] कैवायो

(३)

राणा-रो कागद बांच हुयो अकबर-रो सपनो सो[15] सांचो
पण नैण कर्‍यो विश्वास नहीं, जद बांच-बांच-नैं फिर बांच्यो
कै आज हिमाळो पिघळ बह्यो, कै आज हुयो सूरज शीतळ
कै आज शेष-रो सिर डोल्यो, यूं सोच हुयो सम्राट विकळ

बस दूत इसारो पा भाज्या पीथल-नैं तुरत बुलावण-नैं
किरणां-रो[16] पीथल[17] आ पूग्यो ओ साचो भरम मिटावण-नैं

बीं वीर बांकुड़े पीथल-नें रजपूती गौरव भारी हो
बो क्षात्र-धर्म-रो नेमी हो, राणा-रो प्रेम-पुजारी हो
वैर्‍यां-रै मन-रो कांटो हो, बीकाणो[18] पूत खरारो[19] हो
राठोड़ रणां-में रातो हो, बस सागी[20] तेज दुवारो हो

आ बात पातस्या जाणै हो, घावां पर लूण लगावण-नैं
पीथल-नैं तुरत बुलायो हो राणा-री हार बंचावण-नैं

---

९ आडावळा (अरावली) पहाड़ १० पीठ पर ११ छाया १२ पतिंगा १३ सिसकियां १४ संदेश १५ साथ १६ किरणोंवाला किरणमयीका धनि १७ पृथ्वीराज १८ बीकानेरका १९ तप २० ठीक वही ।

पाछै मेघै घाव कियो। सो दूदै ढाल-सूं टाळि दियो। दूदै पाबूजी-नूं समरि नै मेघै-नूं घाव कियो। सु माथो धड़-सूं अळगो जाइ पड़ियो। मेघो काम आयो।

पाछै मेघै-रो माथो वाढि-नै दूदो ले हालियो। पाछै आपरा राजपूतां कह्यो—मेघै-रो माथो धड़ ऊपरां मेल्हो, बडो रजपूत छै। पाछै दूदै माथो मेल्हियो। दूदै कह्यो—कोई गाम-रो बगाड़ मती करो, मेघै-सूं काम हुतो।

मेघै-नूं मारि दूदो अपूठो फिरियो। आयनै राव जोधै-नूं तसलीम कीधी। राव राजी हुओ।

जोधैजी दूदै-नूं घोड़ो सिरपाव दियो। बहुत राजी हुआ।

उसे दूदेने ढालसे टाल दिया। फिर दूदेने पाबूजीको स्मरण करके मेघ पर वार किया। तो सिर धड़से दूर जा गिरा। मेघा काम आया।

तब मेघेका सिर काटकर दूदा ले चला। अपने राजपूतोंने कहा—मेघेका सिर धड़के ऊपर रखो मेघा बड़ा राजपूत है। तब दूदेने सिरको धड़ पर रखा। फिर दूदेने कहा—मेघके किसी गांवका बिगाड़ मत करो हमारा तो केवल मेघेसे काम था।

मेघको मारकर दूदा वापिस मुड़ा। आकर राव जोधेकी तसलीम की। राव प्रसन्न हुआ। जोधेजीने दूदेको घोड़ा और सिरोपाव दिया। बहुत प्रसन्न हुए।

नवीन राजस्थानी साहित्य

पातल और पीथल

(प्रताप और पृथ्वीराज)

[कन्हैयालाल सेठिया]

[श्री कन्हैयालाल सेठिया आधुनिक राजस्थानीरा समर्थ कवि है। राजस्थानी इतिहासरी इण प्रसिद्ध घटनानै लेकर आप आ अमर कविता लिखी है। भावारो प्रवाह और ओज इण कवितारा विशेष गुण है।]

(१)

अरे! घास-री रोटी ही जद बन-बिलावड़ो ले भाग्यो
नान्हो-सो अमर्यो[1] चीख पड्यो राणा-रो सोयो दुख जाग्यो

हूं लड्यो घणो, मैं सह्यो घणो, मेवाड़ी मान बचावण-नै
मैं पाछ[2] नहीं राखी रणमें बैर्यां-रो खून बहावण-में
जद याद करूं हळदी-घाटी, नैणां-में रगत उतर आवै
सुख-दुख-रो साथी चेतकड़ो[3] सूती-सी हूक जगा ज्यावै
पण आज बिलखतो देखूं हूं जद राज-कंवरनै रोटी-न
तो क्षात्र-धर्म-नै भूलूं हूं भूलूं हिंदवाणी चोटीनै

मैं'लां-में छप्पन भोग जका मनवार बिना करता कोनी
सोना-री थाळ्यां नीलम-रा बाजोट[4] बिना धरता कोनी
ऐ हाय! जका करता पगल्या[6] फूलां-री कंवळी सेजां पर
बै आज रुळै[5] भूखा तिसिया[7] हिंदवाणै-सूरज[8]-रा टाबर
आ सोच हुयी दो टूक तड़क राणा-री भीम-बजर छाती
आंख्यांमें आंसू भर बोल्या – हूं लिखस्यूं अकबर-नै पाती

---

१ अमरसिंह महाराणा प्रतापके पुत्रका नाम था २ कमी रखी पीछे हटा ३ चेतक प्रतापके घोड़ेका नाम था ४ मखमल ५ पड़े ६ धीरे-धीरे पैर रखते ७ प्यासे ८ हिंदुआ सूर्य मेवाड़के राणाओंकी उपाधि है।

(२)

पण लिखूं कियां, जद देखै है आडावळ[९] ऊंचो हियो लियां
चित्तोड़ खड्यो है मगरां-में[१०] विकराळ भूत-सी लियां छियां[११]
हूं झुकूं कियां? है आण मनै कुळ-रा केसरिया बाना-री
हूं बुझूं कियां, हूं शेष लपट आजादी-रा परवानां-री[१२]

पण फेर अमर-री सुण बुसक्यां[१३] राणा-रो हिवड़ो भर आयो
हूं मानूं हूं, हे म्लेच्छ! तनै सम्राट,—सनेसो[१४] कैवायो

(३)

राणा-रो कागद बांच हुयो अकबर-रो सपनो सौ[१५] सांचो
पण नैण कस्यो विश्वास नहीं, जद बाच-बाच-नै फिर बांच्यो
कै आज हिमाळो पिघळ वह्यो, कै आज हुयो सूरज शीतळ
कै आज शेष-रो सिर डोल्यो, यूं सोच हुयो सम्राट विकळ

बस दूत इसारो पा भाज्या पीथल-नै तुरत बुलावण-नै
किरणां-रो[१६] पीथल[१७] आ पूग्यो ओ साचो भरम मिटावण-नै

बीं वीर बांकुड़ै पीथल-नै रजपूती गौरव भारी हो
बो क्षात्र-धर्म-रो नेमी हो, राणा-रो प्रेम-पुजारी हो
वैर्‍यां-रै मन-रो कांटो हो, बीकाणो[१८] पूत खरारो[१९] हो
राठोड़ रणां-में रातो हो, बस सागी[२०] तेज दुधारो हो

आ बात पातस्या जाणै हो, घावां पर लूण लगावण-नै
पीथल-नै तुरत बुलायो हो राणा-री हार बंचावण-नै

---

९ आडावला (अरावली) पहाड़ १० पीठ पर ११ छाया १२ पतिंगा १३ सिसकि
१४ संदेश १५ सारा १६ किरनोंवाला, किरणमयीका पति १७ पृथ्वीराज १८ बीकानेर
१९ खरा २० ठीक वही ।

(४)

म्हैं बांध लिया है, पीथळ ! सुण पिंजरै-में जंगळी सेर पकड़
आ दृग हाथ-रो कागद है, तू देखां, फिरसी कियां अकड़
मर डूब चळू भर पाणी-में बस झूठा गाल बजावै हो
पण[11] टूट गया बो राणा-रो तूं भाट बण्यो बिड़दावै[12] हो
मैं आज बादस्या धरती-रो मेवाड़ी पाग[13] पगां-में है
अब बता मनै, किण रजवट रे रजपूती खून रगां-में है ?

जद पीथळ कागद ले देखी राणा-री सागी सैनाणी
नीचै-सूं धरती खिसक गयो, आंख्यां-में आयो भर पाणी
पण फेर कही ततकाळ संभळ,— आ बात सफा[14] ही झूठी है
राणा-री पाग सदा ऊंची, राणा-री आण अटूटी है

ज्यो हुकम हुवै तो लिख पूछूं राणा-नै कागद-रै खातर
लै पूछ भलां ही पीथळ ! तू, आ बात सही बोल्यो अकबर

(५)

म्हैं आज सुणी है, नाहरिया स्याळां-रै सागै सोवैला
म्हैं आज सुणी है, सूरजड़ो बादळ-री ओटां खोवैला[15]
म्हैं आज सुणी है, चातकड़ो धरती-रो पाणी पीवैला
म्हैं आज सुणी है, हाथीड़ो कूकर-री जूणां[16] जीवैला

म्हैं आज सुणी है थकां खसम[17] अब रांड हुवैला रजपूती
म्हैं आज सुणी है, म्यानां-में तरवार रवैला[18] अब सूती
तो म्हारो हिवड़ो कांपै है, मूंछ्यां-री मोड़-मरोड़ गयी
पीथळ-नै, राणा ! लिख भेजो आ बात कठै तक गिणी सही ?

---

११ प्रण प्रतिज्ञा १२ बखाणता था १३ पगड़ी १४ बात ही १५ खो जायगा छिप जायगा १६ योनि १७ धणी रै होतै हुए १८ रहेगी ।

(६)

पीथल-रा आखर पढता-ही राणा-री आख्या लाल हुयी
धिक्कार मनै, हू कायर हू, नाहर-री अेक दकाळ[२९] हुयी
हू भूख मरू', हू प्यास मरू', मेवाड धरा आजाद रवै[३०]
हू घोर उजाडां-में भटकू, पण मन-में मा-री याद रवै

हू रजपूतण-रो जायो हू, रजपूती करज चुकाऊंला
ओ सीस पडै, पण पाघ नहीं, दिल्ली-रो मान झुकाऊंला

(७)

पीथल। के खमता[३१] बादळ-री, जो रोकै सूर-उगाळी-नै[३२]
सिंघां-री हाथळ[३३] सह लेवै, वा कूख[३४] मिली कद स्याळी नै
धरती-रो पाणी पियै, इसी चातक-री चूच बणी कोनी
कूकर-री जूणां जियै, इसी हाथी-री बात सुणी कोनी

आं हाथां-में तरवार थकां कुण रांड कवै है रजपूती ?
म्यानां-रै बदळै बैर्यां-री छात्यां-में रैवैली सूती

मेवाड धधकतो अंगारो आंध्या-में चमचम चमकैला
कडखा-री[३५] उठती तानां पर पग-पग पर खांडो खडकैला
राखो थे मूछ्या अैंठ्योडी[३६] लोही[३७]-री नदी बहा दूंला
हू तुरक कहूंला अकबर-नै, उजड्यो मेवाड बसा दूंला

जद राणा-रो संदेस गयो, पीथल-री छाती दूणी ही
हिंदवाणो सूरज चमकै हो, अकबर-री दुनिया सूनी ही

---

२९ गर्जना ३० रहे ३१ क्या सामर्थ्य ३२ उदयको ३३ हाथकी चपेट ३४ कोख, संतान ३५
३६ अैंठी हुई, बल खायी हुई ३७ लोहूकी ।

खेतमें

[कवर मोतीसिंह]

[कवर मोतीसिंह राजस्थानी ग्राम-जीवणरा कवि है। कदेई प्रकृतिरो सादगी-पूर्ण चित्रण करै तो कदेई करुण कहाणी कैण लाग ज्यावै। अवै कींक दार्शनिक भी हो चाल्या है।]

(१)

आज मोरियां। राग सोव्रणी
मनै घणी मन भाव्रै
पिऊ-पिऊ[1] सुण प्यासो हिव्रडो
जी-री प्यास बुझाव्रै

(२)

हरियो-भरियो खेत सोव्रणो
सरव्ररियो लहराव्रै
धीमी-धीमी परव्रा[2] चालै
मनडै मोद न मावै

(३)

आभैमें[3] वादळिया दौडै
झिरमिर मेव्रलो[4] आसी
वाजररै बूंटामें[5] प्यासी
वेलां पाणी पासी

(४)

आधी[6] ढळतां आय खुसीसूं
चास्यू जद सो जास्यूं
दिन-ऊगांरी ठंडी हव्रामें
चास्यूं जद उठ जास्यूं

---

१ पीहू-पीहू बोली २ पुरवाई हवा ३ आकाशमें ४ मेह ५ पौधोंमें ६ आधी रात।

(५)

काळी-काळी रात अंधारी
चमचम चमकै तारा
पड़ी ओस मोतीड़ा जमसी
पूर भिजोसी म्हारा

(६)

सोवन म्हारो स्याणो भाई
मार्थ सागे आसी
सरवरियैरी पाळ सहारै[८]
बैठ्यो गाय चरासी

---

७ कपड़े ८ पाल

कणका

[बदरीप्रसाद आचार्य 'किंकर']

[किंकरजी राजस्थानरा आधुनिक संत-कवि है । आपरी कवितारा प्रधान विषय भक्ति और वैराग्य है । स्वाभाविक, सीधी और मुहावरैदार भाषामें मर्मनै स्पर्श करती बात कैवणी—आ आपरी विशेषता है ।]

किंकर, गाछ गभीर नदी-किनारै पर खड्यो
ले ज्यासी[1] वध[2] नीर चौमासो जद आवसी

आला-सूका सैन[3] स्वाहा हुवै जग-भट्ठमें
किंकर, कदे बुझै न कई बळ्या[4], बळसी कई

सावण भादव मास वेसी[5] तो आसोज तक
तीजै मास विनास किंकर, विसवा बीस[6] है

होसी अेक दिन राख साख[7] सायबी[8] संपदा
वरस मास या पाख किंकर, कइ[9] निसचै नहीं

सरप मींडको खाय मींडक माछरनै भखै
किंकर, दीसै नांय मौत सीस पर ही खड़ी

वडै मिनखसूं प्रीत दुनिया करती ही फिरै
किंकर, देख अनीत राम नहीं चितमें चढै

गीता जिसड़ो ग्रंथ होस थकां वान्च्यो नहीं
दुनिया ऊंधो पंथ मिरत-काळ[10] गीता सुणै

कर्‌यो किसो वौपार किंकर, खोयो मूळ धन
विकग्यो घर अर वार पड्यो जेळमें जगतरी

आळस रोग महान और रोग, किंकर, किसो ?
साधन-धनरी[11] हाण पळ-पळमें किंकर, करै

मत मनसूवा, बांध आयैमें संतोस कर
खा लै दळिया रांध जीभ दिखावै जम-पुरी

ऊंची गादी बैठ किंकर, नीची नाड़[12] रख
हुकम हुडी पैठ चलै जित ही है चलै

देस-धणी कंगाल किंकर, सपनैमें बण्यो
जाग्यां फेर नृपाळ आ ही गत इण जगतरी

१ ले जायगा २ बढ़कर ३ सभी ४ जल गये ५ अधिक ६ निश्चय ही ७ प्रतिष्ठा ८ प्रभुत्व ९ कुछ १० मृत्युके समय ११ साधना रूपी धनकी १२ गर्दन

गांधी

[नाथूदान महियारिया]

[नाथूदानजी नवयुगरा चारण-कवि है । आप अेक नवीन वीर-सतसई मैं थरी रचना करी है ।]

फौजां रोकै फिरंगरी[1] रोकै नह[2] तरवार
गांधी ! तैं कीधो गजब भारतरो भुज भार

[गजराज छन्द]

खोरा[3] सात समंद मीठा करणा मामली
परतंतरारो फंद मारी काटण मानिया !
माथा छित मरणो[4] मोठो तीरथ मानणो
मात इसा मरणो भारत गांधी मानिया !

ठोकरं[6] मुख-चंद मेघ[7]तपोबळ काढरै
पळटी वेग प्रचंड भारत-काया, मानिया !
पग-पग खेळी पाप गांधीरो ग्रमर गयो
ठोकर दपे झुडाप भारत माता, मानिया !

करता वैम[8] अनेक कद् ईसो फांसी चढ्यो
दिस गांधीरी देख मयो भरोसो, मानिया !
बाहू-बळरी जोर परतंतर भारत पड्यो
तप गांधीरै तोर मचके छूट्यो मानिया।

---

१ फिरंगियोंकी २ नहीं धारण करता है ३ खारा ४ कठिन ५ मरनेको
६ ठुकराके ७ इनके ८ भ्रम संशय ९ ईसामसीह १० बलसे ११ अचानक ।

लाभू बाबो

(भवरलाल नाहटा)

लाभू बाबो ठेट वासिंदो किसै गावरो हो आ तो मालम कोनी पण म्हारा बापोती-रा गांव डाडूसरमें परणियो हो जिणसूं म्हे तो उणनैं उठारो ही समझता। धोला मूंढारो छोरो, जवान, हो जदसू ही म्हारा घरमें रेवतो आयो हो। हो तो बो दो रुपियांरो महीनैदार पण म्हारा घररा लोगा उणनैं कदेई नौकर को समझियो नी। काई छोटा अर काई वडा—सगला उणरो आदर करता। वडा लोग लाभू, लुगाया लाभूजी, और म्हे टाबर लाभू बाबो कैं'र वतलावता। वा'रला लोग लाभू बाबानै म्हारा ही घररो आदमी समझता। लाभू बाबो आप म्हारा घरनैं ही आपरो घर समझतो। टाबरपणामें म्हे उणरै सागै जीमियोड़ा हां।

लाभू बाबो गोरा रंगरो, तकड़ा सरीररो अर सपेत दाढ़ीरो पैंसो जवान हो। दोवटीरी जाडी धोती और वडी पेरतो। माथा माथैं मुलमुलरी पाग बाधी राखतो। गळामें हरदारी कंठी और हाथमें काठरा मिणियारी माळा हर दम रेवती। सीयाळामें देसी ऊनरी कामळ ओढतो। ओ लाभू बाबारो पैरेस हो।

लाभू बाबो जातरो मडीवाळ धनावसी साध हो। बापरो नाव श्रीकिसनदास, काकारो बुद्धरदास अर भाईरो नाव आणदो हो। काको बुद्धरदासजी रामायण, महाभारत वगैरा शास्त्रारा मोटा पिंडत हा। लाभू बावै टाबरपणामें उणा कनै शास्त्रारो ग्यान सीखियो। टाबरपणामें सीखियोड़ा इण ग्यानसू लाभू बाबो विना पढिया हीज पिंडत हुग्यो हो। उणनै शास्त्रा और पुराणा तथा इतिहासरी कुण जाणैं कित्ती वाता याद ही। लाभू बाबो भणियोड़ो कोनी हो पण ग्यानमें वडा-वडा भणियोड़ानैं छेड़ै वैसाणतो। लाभू बाबो कह्या करतो—नाणो अटरो, विद्या कठरी।

लाभू बाबो म्हारा घरमें चाळीस वरसासूं कम को रह्यो नी। बो अेकलो जको काम करतो बो आज च्यार आदमियासू कोनी हुवै। झाझरकै च्यार वज्या उठतो। उठनैं भजन करतो। पछै सगळा घरमें बुवारी देतो, पाणी छाणतो, विलोवणो करतो, पोटा थापतो, ठाणारी सफाई करतो, गाया-भैंस्या नै पाणी पावतो अर नीरो नाखतो। पछै दूजा काम करतो।

म्हारे दुजी पिढीरो काम हुतो। कोट कांछिया कोनी हा, इण्रूं रुपिया रोकड़ी बाइम-रो व्यापार रो काम पड़तो। भो सगळो काम सामू बाबो करतो। भणियोड़ो अेक आखर को हो नी पण लाखूं रुपियारो काम सुगमता देतो और कदेई अेक पईसे-री ही भूल को पड़ी नी।

गाम-गोठरी बोरगत हुवेसूं म्हारे अठे बारको फेटो भमो हो। रोज दस-पाच आदमी आया-गया रेवता। उण दिनामें कलरी पचकी तो ही कोनी हाथसूं आमो पीसणो पड़तो। पीसार्थ्या आटो पीसती। सामू बाबे थका अेन मोके आयरा फोड़ा करेई को देखणा पड़ता नी। दिना व्हाता आपी रातरा उठ-ने धमड़ धमड़ दूखा मारतो। दिन ऊगतो जद आगमन आटो त्यार।

सामू बाबो काम करणनै सदा आगे त्यार होय रेवतो। हरेक आदमीरो काम निःस्वार्थ-भावसूं करतो। घररो तो कांई, गवाड़रो भी कोई कणो काम चाखे चमपतो तो ऊत्तर को देतो नी। देतो सुगमता पाण मध बोलतो—आयो। जीमतो हुतो तो थाळी कोर किनारे हाथ धोयन-ने बा हाजर हुतो। केई अवसर रुचियोड़ो हुतो तो-ई आ कदेई को केवतो नी के दूजोरो काम करू हूं। अेक आयो' शब्द हीज सदा मूंडासूं नीकळतो। सामू बाबो केवतो—'हूं दूसरो काम करू हूं' इयान केवो अेक तरसूं ऊत्तर देणो है। कामरो ऊत्तर देणो सामू बाबो जाणतो ही कोनी हो।

टाबरांने, विशेषकर म्हा तीनांने—काकोजी मेघराजजी, काकोजी मगराजजी और मने, बड़ी हीमाळीसूं राखतो। अेकने गोदीमें, दूजाने लारा माथे अर तीजाने मगरा माथे घालिया काम करतो रेतो। म्हाने घणा भोळावा अर दूरा घुमावतो। थिरता पड़ती जद म्हे सामू बाबाने बाव केवण वास्ते पकड़ने बेठाय देता। बाबो म्हांरी फरमात अर रुचि मुजब बातां सुणावतो—कदेई रामायणरी कदेई महाभारतरी, कदेई हरिचंदरी कदेई धूवरी कदेई भरथरी कदेई गरबोचीय मोरधरी।

सामू बाबो रामरो भगत कर्तव्यशील और निर्लोभी हो। रामारी कथावार्ता आपरा बाबे आपरा जीवणमें उतारिया हा। दिन-रात काम करता थकां भी, मूंडामें रामरो नाम हरदम रेवतो। काम करतो जावतो अर भजन गावतो जातो। म्हारा बड़ा सामू बाबाने दो रुपिया महीनो मिळतो। अन्न-धन्न खाद्यपदार्थ ऊपरे रुपिया महीनो ने

रोटी-कपड़ो थामियो पण लाभू बाबे दूजे घर नौकरी नहीं करी स नहीं करी। लाभू बाबो प्रेमरो भूखो हो, टकारो लोभी को हो नी।

गवानीमें लाभू बाबो घणो तागतवर हो। अेक वार बड़ा दादाजी दानमलजीरी हवेली चिणीजती ही जद पथरारी रास चढावण वास्तै हमालांनै बुलाया। दस-दस मण भारी अेकलिया देखनै हमाला जीभ काढ दी। जद सेठा लाभू बाबानै वकारियो। लाभू बाबे अकेलै वै दस-दस मणरा अेकलिया चढा दिया।

जतियारी हालत देखनै लाभू बाबो कह्या करतो—

केई जती सेवड़ा सिर मूंडा।
करमा-री गतसू हुया भूंडा॥

लाभू बाबे कई मेख, जीमण, जींवतखर्च आपरा नै आपरी सामणरा करिया। हिन्दू और जैन तीरथारी जात्रावा करी। और मरतो सईकड़ू रुपिया आपरी लुगाई मोलारे वास्तै छोडग्यो। दो-च्यार रुपिया कमावणआळो आदमी किण भात सुखी जीवण विता सकै, लाभू बाबो इणरो प्रतख उदाहरण हो।

लाभू बाबे आपरा जीवणरा शेष दिन गाममें गालिया। मांचा माथै बैठो-सूतो हरदम भजन करतो रैवतो। म्हां टाबरांनै देखण सिवाय कैई वात-री मनमें ही कोनी ही। पिताजी मिलण वास्तै गांव गया जद उणांनै आया सुणतां पाण उभाणै पगां सौ पांवडां साम्हो आयो। लोगांनै घणो अचरज हुयो कै आज बाबारा बूढा पगांमें इती शक्ति कठा-सू आयगी।

लाभू बाबानै स्वर्गवासी हुयां आज वीस वरस हुग्या है पण म्हारा मनमें बाबारी अर बाबारा गुणांरी याद आज ताणी ताजी है।

पुस्तक-परिचय *

१ बादळी—लेखक-कंवर चंद्रसिंह। भूमिका-लेखक—सीतामऊ-महाराजकुमार श्रीरघुवीरसिंहजी। आकार—डबलक्राउन सोलहपेजी। पृष्ठ संख्या १२+१०२। मोटा अेंटीक कागज। बीकानेर-महाराजकुमारका चित्र। कलापूर्ण रंगीन चित्रवाला आवरण पृष्ठ। प्रथमावृत्ति, सं० १९९८। मूल्य १)। प्रकाशक—प्राच्य-कला-निकेतन, बीकानेर (अब जयपुर)

ऋतुओंमें वर्षा ऋतुका अपना निराला महत्त्व है। वसंत ऋतुराज कहा गया है तो वर्षाको ऋतुओंकी रानी कहा जा सकता है। वसंत राजसी ऋतु है, वर्षा सर्वहारा वर्गका। वसंत जीवनको नाना रूपोंमें प्रकट करता है पर उसका मूल आधार तो वर्षा ही है। भारतके लिये वर्षा बड़े महत्त्वकी ऋतु है पर राजस्थानका तो वह जीवन ही है—राजस्थानका जीवन ही उस पर निर्भर है। फलतः प्रत्येक राजस्थानी कवि वर्षासे अभूतपूर्व प्रेरणा पाता है और वर्षाका वर्णन करते समय उसका हृदय उसके साथ पूर्णरूपेण तदाकार हो जाता है।

बादळी (हिन्दी बदली) राजस्थानी भाषाका अेक सुन्दर प्रकृति-काव्य है। इसमें वर्षाकालके नाना-रंगी चित्र बड़ी ही स्वाभाविक और सरस भाषामें अंकित किये गये हैं। दूहा छंद लिखनेमें चंद्रसिंह अद्वितीय हैं।

ग्रन्थके आरम्भमें सीतामऊके महाराजकुमार डाक्टर रघुवीरसिंहजीकी छोटी सी सारगर्भित प्रस्तावना है और अन्तमें पं० रावत सारस्वतका हिंदी अनुवाद। जैसा सुन्दर काव्य हुआ है वैसा ही सुन्दर यह अनुवाद है जो कहीं-कहीं तो मूलसे भी अधिक सुन्दर हुआ है। काव्यमें आये कठिन और अपरिचित राजस्थानी शब्दोंके हिन्दी अर्थ अन्तमें शब्दकोष देकर दिये गये हैं।

---

* इस स्तंभमें आलोचित सभी पुस्तकें नवयुग ग्रन्थ-कुटीर, पुस्तक प्रकाशक और विक्रेता, बीकानेर (राजपूताना) के पतेसे मंगायी जा सकती है।

इस ग्रन्थको बीकानेरके युवराज (अब महाराजा) श्री सादूलसिंहजी बहादुर ने पुरस्कृत करके अपनी काव्य-मर्मज्ञता और मातृ-भाषा-प्रेमका परिचय दिया है जिसके लिये वे सब प्रकारसे धन्यवाद पात्र हैं।

पुस्तक प्रत्येक दृष्टिसे सुन्दर और संग्रहणीय है।

—नरोत्तमदास स्वामी

२ सती बाबा भगाजी पवार—सम्पा०—शिवसिंह मलाजी चोयल। आकार—डबल क्राउन सोलहपेजी। पृष्ठ संख्या ६+३ । प्रथमावृत्ति, सं० २००२। मूल्य छिपा नहीं। प्रकाशक—सीरवी नवयुवक मंडल, बिलाड़ा (मारवाड़)

चौधरी शिवसिंहजी चोयल राजस्थानी लोक-साहित्यके अच्छे अनुशीलक हैं। ग्रामीण लोक-साहित्यका आपने अच्छा संग्रह कर रखा है। इस पुस्तिकामें सीरवी जातिके एक सन्त कवि भगाजी सतीका परिचय और उनकी कुछ लोक-प्रचलित कविताएं दी गयी हैं। अन्तमें आई माताका संक्षिप्त परिचय दिया गया है जो सीरवी जातिकी इष्टदेवी हैं।

३ सती कागणजी—सम्पा० आदि ऊपर लिखे अनुसार। पृष्ठ संख्या ११। प्रथम संस्करण, स० १९९४।

इस पुस्तिकामें चौधरीजीने सीरवी जातिमें होनेवाली सती कागणजीका संक्षिप्त जीवन-परिचय देकर उपरोक्त सती भगाजीकी बनायी हुई निसाणी दी है जिसे भक्त लोग प्रत्येक मासकी शुक्लपक्षकी द्वितीयाको एकत्र होकर गाया करते हैं। निसाणीमें सतीजीका चरित्र विस्तारसे वर्णित है।

४ आई-आणंद-विलास—रचक—व्यास महामीदास भाखाजत पुष्करणा। संपादक—चौधरी शिवसिंह मलाजी चोयल। आकार—डबल क्राउन सोलहपेजी। पृष्ठ सख्या ४+१२ =१२४। प्रथमावृत्ति, सं० २००३। मूल्य १)। प्रकाशक—सीरवी नवयुवक मंडल बिलाड़ा (मारवाड़)।

इस ग्रन्थमें १०३ छन्दोंमें राजस्थानी भाषामें भगवती आई माताका चरित्र वर्णित है। इसके रचयिता व्यास महामीदास आई माताके दीवान राजसिंहके समयमें बड़ेर बिलाड़ाके कामदार थे। आई माताके उपासक इसको उसी प्रकार पूज्य मानते हैं जिस प्रकार सिक्ख गुरु-ग्रन्थसाहबको और आर्यसमाजी सत्यार्थ प्रकाशको। चौधरी शिवसिंहजीने इसका प्रकाशन करके इस सर्वसाधारणके लिये

सुलभ कर दिया है। संपादन हस्तलिखित प्रतिके आधार पर योग्यताके साथ किया गया है। कठिन शब्दोंके अर्थ नीचे टिप्पणी देकर दिये गये हैं। ग्रन्थ पठनीय है।

—रकण शर्मा

५ राजस्थानके ग्रामगीत, भाग १—संग्रहकर्त्ता—पं० सूर्यकरण पारीक तथा गणपति स्वामी। संपादक—ठाकुर रामसिंह और प्रोफेसर नरोत्तमदास स्वामी। आकार—डबल क्राउन सोलहपेजी। पृष्ठ सख्या १४+११६। पारीकजीका चित्र। प्रथमावृत्ति, स० १९९७। मूल्य ॥|)। प्रकाशक—गयाप्रसाद ॲंड सन्स, आगरा।

पं० सूर्यकरण पारीक राजस्थानके अेक उत्कृष्ट साहित्यकार थे। स० १९९५ में उनका अकस्मात देहावसान हो गया। उनकी स्मृतिमे बीकानेरके राजस्थानी साहित्य-पीठने सूर्यकरण पारीक राजस्थानी ग्रन्थमाळाकी स्थापना की जिसका प्रकाशन आगराके प्रसिद्ध पुस्तक-प्रकाशक गयाप्रसाद ॲंड सन्सने करना आरंभ किया। प्रस्तुत ग्रथ उसी पुस्तकमालाका प्रथम ग्रथ है। इसमे, राजस्थानके ठेठ देहाती जीवनक ६३ लोकगीतोंका सग्रह है। साथमें हिन्दी अनुवाद तथा आवश्यक टिप्पणिया भी दी हुई हैं जिससे राजस्थानी न जाननेवाले भी सहज ही गीतोंका आनन्द ले सकते हैं। संगृहीत गीतोंमेंसे अधिकांश स्वयं स्वर्गीय पारीकजी क या उनके शिष्य पं० गणपति स्वामीके सग्रह किये हुअे हैं। ये गीत जिस प्रकार साहित्यकी अमर निधि हैं उसी प्रकार भारतीय ग्राम्य सस्कृतिका सजीव रूप भी। इनमें घरेलू जीवनकी मधुर झांकी पग-पग पर मिलती है। मनुष्यने कलाके नये-नये प्रयोगोंमें, और साहित्यकी नानाविध आलकारिक शैलियोंमे, बहुत कुछ सौंदर्य बटोरा है परन्तु इस प्रयासमें उसने क्या कुछ खोया है इसका अन्दाज इन ग्राम्य गीतोंकी सहज सरल माधुरीमे थोडी देर तक निमग्न हुअे विना नहीं मिलता। इनके नाम-हीन रचयिताओंक ऊपर अनेक विद्यापति और जयदेव निछावर होते हैं।

६ राजस्थान-भारती (त्रैमासिक पत्रिका)—संपादक—डाक्टर दशरथ शर्मा, अगरचद नाहटा और प्रोफेसर नरोत्तमदास स्वामी। आकार—रायल अठपेजी। मोटा अटीक कागज। पृष्ठसंख्या २+१०४+२६=१३२। वार्षिक मूल्य ८)। महिलाओं, विद्यार्थियों, अध्यापकों तथा सार्वजनिक संस्थाओंके लिअे रियायती

वार्षिक मूल्य ६)। ओक अंकका मूल्य २॥)। प्रकाशक—प्रधानमंत्री श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट बीकानेर।

गत वर्ष बीकानेरके कतिपय प्रमुख विद्वानोंने बीकानेर-नरेश महाराजा श्री सादूलसिंहजी बहादुरके संरक्षणमें श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट नामक संस्था स्थापित की थी। यह संस्था राजस्थानकी भाषा, साहित्य और इतिहास संबंधी खोजका काम करती है। यह त्रैमासिक पत्रिका इसी संस्थाकी मुखपत्रिका है। इसका प्रथम अंक हमारे सामने है। इसमें नीचे लिखे महत्त्वपूर्ण लेख हैं जो अपने विषयके अधिकारी विद्वानों द्वारा लिखे गये हैं—पृथ्वीराज-रासो कीच-मालाका गीत राजस्थानी साहित्य, कविवर मान और उसके ग्रंथ, चरलूके शिलालेख बीकानेरका अेक आदर्श संग्रहालय राजस्थानकी कथा-संबंधी कहावत, राजस्थानी मुहावरे। इनके अतिरिक्त लोक-साहित्य, प्राचीन राजस्थानी साहित्य और नवीन राजस्थानी साहित्य इन तीन विभागोंके अन्तर्गत बहुत सुन्दर सामग्रीका संचय किया गया है। अंतमें अेक लेख अंग्रेजीमें पृथ्वीराजरासो पर दिया गया है। इन्स्टीट्यूटका प्रथम वर्षका कार्यविवरण भी साथमें दिया गया है जो अंतक २६ पृष्ठोंमें छपा है। अैसी सर्वांग-सुंदर पत्रिकाके प्रकाशनके लिये विद्यानुरागी बीकानेर-नरेश बीकानेरके प्रधानमंत्री, इन्स्टीट्यूटके कार्यकर्ता और संपादक सभी हमारे हार्दिक अभिनंदनके पात्र हैं।

—श्यामूप्रसाद सक्सेना

७ प्रतिभा (साहित्यमाला)—संपादक—सीताराम चतुर्वेदी, हरिहरशरण मिश्र, भवानीप्रसाद तिवारी रामेश्वरप्रसाद शुक्ल, नारायण शुक्ल। आकार—डिमाई अठपेजी। पृष्ठसंख्या २+८२। कलापूर्ण आवरण। अक पुस्तकका मूल्य ॥≡)। वार्षिक मूल्य (१)। प्रकाशक—हिंद किताब्स, पोस्ट बाक्स १ ६३, बंबई।

पिछली विजयादशमीसे यह साहित्यिक निबंधमाला प्रकाशित होने लगी है। संपादकीय शब्दोंमें 'भावमय चित्र रसवती कहानियां विनोदपूर्ण व्यंग्य, चुभते चुटकुले, कलापूर्ण शब्दचित्र विश्वसाहित्यके परिचयात्मक सारांश भावपूर्ण उक्तियों की मनोहरताओंसे भरी हुई साहसपूर्ण यात्राओं युगधर्मको पुकारकर जगानेवाली सशक्त कविताओं—सभीका प्रतिभाके अंकोंमें इस प्रकार पावन होगा कि उसके मोदक और स्वस्थ रूपोंसे परिचय पानेवाले पाठकके मन और हृदयके लिये

यथेष्ट और उपयुक्त सामग्री मिल सकेगी। प्रतिभाका यह भी उद्देश्य होगा कि वह रूप, भाषा और विषयचयन तीनों दृष्टियोंसे वाचकोंको संतुष्ट करे।'

संपादक अपने उद्देश्यमें बहुत अंश तक सफलता प्राप्त करनेमें समर्थ हुअे हैं। प्रथक अंकमें संपादकीय सहित १७ लेख हैं। सभी लेख सुंदर हैं। श्री सीताराम चतुर्वेदीका दानवोंके बीच शीर्षक साहसयात्राका आत्मचरितात्मक लेख हमें सबसे अच्छा लगा। संपादकीय टिप्पणियोंमें प्रगट किये गये विचार स्वस्थ भावनाके द्योतक हैं। पुस्तकमाला निस्संदेह हिंदीके लिअे गौरव बढ़ानेवाली सिद्ध होगी।

नरोत्तमदास स्वामी

८ हिमालय (साहित्यिक निबंधमाला)—संपादक—शिवपूजन सहाय, रामवृक्ष बेनीपुरी। आकार—डिमाई अठपेजी। पृष्ठसंख्या १०० से ऊपर। कलापूर्ण आवरण। अेक पुस्तकका मूल्य १) । वार्षिक मूल्य १०) । प्रकाशक—पुस्तक-भण्डार, हिमालय प्रेस, पटना।

यह साहित्यिक पुस्तकमाला पिछले जून महीनेसे प्रकाशित होने लगी है और अभी तक सात अंक प्रकाशित हुअे हैं। सभी अंक प्रत्येक दृष्टिसे उत्कृष्ट हैं। लेखोंका चुनाव बहुत सुंदर है। हिंदीके पत्र-पत्रिका सहित्यकी नियमित और स्वस्थ आलोचना इस पुस्तकमालाकी अेक महत्त्वपूर्ण विशेषता है जो साधारण पाठक और विद्वान दोनोंके लिअे अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा।

—शिवशर्मा

संपादकीय

राजस्थान अेक महान प्रांत है। वह अनेक महानताओंका आकर है। उसके उज्ज्वल इतिहास पर देशके बच्चे-बच्चेको गर्व है। आज भी उसका नाम सुनकर ही हृदय-तंत्री झनझना उठती है। उसके साहित्य पर बड़े-बड़े महारथी मुग्ध हैं। पर आज उसके उस उज्ज्वल अतीत पर, उसके समस्त गौरव पर, अंधकारके स्तर-पर-स्तर जमे पडे हैं। उसकी भाषा, उसका साहित्य, उसका इतिहास, उसकी कला सब आज अज्ञानके गहरे गर्त्तमे दबे हैं। उनको प्रकाशमें लाना प्रत्येक देश-हितैषीका, विशेषतः राजस्थानके सपूतोंका, परम आवश्यक कर्त्तव्य हो जाता है।

राजस्थानी साहित्यके प्रकाशनके छुटपुट प्रयत्न हुअे हैं पर वे सभी सब प्रकारसे अपर्याप्त हैं। व्यवस्थित रूपमें प्रयत्न आरंभ करनेकी आवश्यकता अभी तक बनी हुई है। इस दिशामें बहुत विलब हो चुका है। अधिक विलंब घातक होगा। राजस्थानीका प्रकाशन इसी कर्त्तव्यका पालन करनेके लिअे किया जा रहा है।

आजसे कोई आठ वर्ष पूर्व राजस्थानी साहित्यके प्रकांड विद्वान पं० सूर्यकरण पारीकने इस विषयकी अेक व्यापक योजना बनायी थी और उसे कार्य-रूपमें परिणत करनेके लिअे स्वयं कटिबद्ध हुअे थे। उनने कलकत्तेकी राजस्थान रिसर्च सोसाइटीके उत्साही कार्यकर्त्ता श्रीयुत रघुनाथप्रसादजी सिंहाणियाके सहयोगसे अेक उच्चकोटिकी शोध-संबंधी त्रैमासिक पत्रिकाके प्रकाशनकी योजना की। वे स्वयं उसके प्रधान सपादक बने। प्रथम अंक प्रेसमें छप ही रहा था कि दुर्भाग्यसे उनका अकस्मात देहात हो गया। उनके सहयोगियोंने कार्यको चालू रखा और पत्रिका सजधजके साथ निकली। सर्वत्र उसका अपूर्व स्वागत हुआ। पर दुर्दैवको यह भी मंजूर न था। सिंहाणियाजीको अन्यत्र व्यावसायिक कामोंमें बहुत व्यस्त होना पडा जिससे पत्रिकाके ग्राहकादि नहीं बनाये जा सके। व्यवस्थाके अभावमें पत्रिकाको बंद करना पडा। तभीसे हम इस प्रयत्नमें थे कि प्रकाशन और व्यवस्थाका कोई अच्छा प्रबंध हो जाय तो पत्रिकाको शीघ्र-से-शीघ्र पुनर्जीवित किया जाय।

अब राजस्थानी-साहित्य-परिषदकी शोधसंबंधी निबंधमाळाके रूपमें इसका प्रकाशन किया जा रहा है। अत्यंत हर्षका विषय है कि निबंधमाळाका प्रकाशन भारतके स्वतन्त्रता प्राप्त करनेकी मंगलमय तिथिसे अरंभ हो रहा है।

मातृभूमि और मातृभाषाकी सेवाके इस पवित्र यज्ञमें भाग लेनेके लिये हम समस्त राजस्थानी और राजस्थान प्रेमी बन्धुओंको उल्लास और उत्साहके साथ आमंत्रित करते हैं। विद्वानोंसे हमारी विनीत प्रार्थना है कि आप अपना पूर्ण सहयोग हमें प्रदान करें। आपके सहयोग पर ही हमारी सफलता निर्भर है।

निबंधमाळाका आरंभ अभी छोटे रूपमें किया जा रहा है। कागज और प्रेस संबंधी कठिनाइयोंके कारण जैसे हम सजधजके साथ नहीं निकाल सके हैं। हमें इसके इस रूपसे संतोष नहीं है पर वर्तमान परिस्थितियोंमें हमें किसी-न किसी प्रकार निभा लेना है। नीचे लिखे परिवर्तन हम शीघ्र करना चाहते हैं—

(१) निबंधमाळाकी पृष्ठसंख्या बढ़ा दी जाय— प्रत्येक भाग कम-से कम २०० पृष्ठोंका निकले।

(२) राजस्थानी कलाके उत्तमोत्तम नमूने निबंधमाळाके प्रत्येक भागमें प्रकाशित हों।

(३) आधुनिक राजस्थानी साहित्यके लिये प्रत्येक भागमें लगभग ५० पृष्ठ रहें (आधुनिक राजस्थानी साहित्यकी अेक मासिक-पत्रिका मरु-भारतीके प्रकाशनकी योजना भी की जा रही है)।

(४) निबंधमाळाके समस्त लेखकोंको लेखोंके पारिश्रमिकके रूपमें पर्याप्त पुरस्कार प्रदान किया जाय।

हमारी इन इच्छाओंकी पूर्ति राजस्थानके उदार और साहित्यप्रेमी राजा रईसों सरदारों सेठ-साहूकारों आदि धनी-मानी सज्जनोंकी सद्भावना पर अवलंबित है पर हमें यह दृढ़ विश्वास है कि हम उनको यह सद्भावना प्राप्त करनेमें समर्थ होंगे। पत्रिकाके आरंभमें दिया हुआ निम्नलिखित मूलमंत्र हमारे विश्वासको सदा अटल रखेगा—

उत्थातव्यं जागृतव्यं योक्तव्यं भूति-कर्मसु
भविष्यतीत्येव मनः कृत्वा सततमव्यथैः

उठो जागो और बिना घबराये कल्याणके कार्योंमें लग जाओ,
मनमें यह दृढ़ धारणा बना लो कि यह काम तो होगा ही।

राजस्थानी साहित्य परिषद, कलकत्ता

उद्देश्य

(१) प्राचीन राजस्थानी साहित्यकी शोध और प्रकाशन

(२) राजस्थानी लोक साहित्यका संग्रह और प्रकाशन

(३) राजस्थानी भाषाका अध्ययन और विकास

(४) नवीन राजस्थानी साहित्यका निर्माण और प्रकाशन

प्रवृत्तियां

(१) राजस्थानी— शोध-संबंधी निबंधमाला

(२) राजस्थान भारती ग्रंथमाला—
प्राचीन और नवीन राजस्थानी साहित्यकी उच्च कोटिकी ग्रंथमाला

(३) लक्ष्मीराम रावत पुस्तकमाला—
धार्मिक और लौकिक साहित्यकी सस्ती लघु ग्रंथमाला

(४) राजस्थानी पाठ्यपुस्तक-माला

(५) शंकरदान नाहटा राजस्थानी पुरस्कार

प्रस्तावित प्रवृत्तियां

(१) राजस्थानी भाषाकी परीक्षाएं

(२) भाषण-मालाएं

(३) मरुभारती— राजस्थानी भाषाकी मासिकपत्रिका